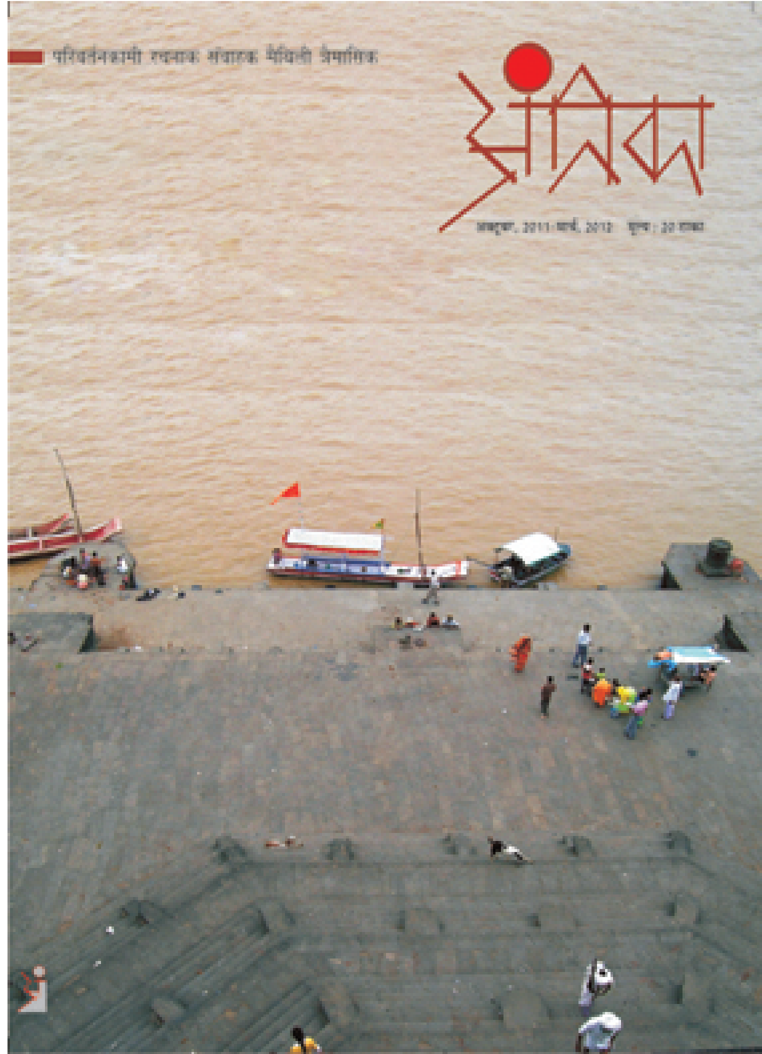

परिवर्तनकामी रचनाक संवादक मैथिली त्रैमासिक
अक्टूबर, 2011-मार्च, 2012 मूल्य : 20 टाका

परिवर्तनकामी रचनाक संवाहक मैथिली त्रैमासिक



अक्टूबर, 2011-मार्च, 2012
पूर्णांक : 36 वर्ष : 13

एहि अंक मे

सम्पादक
अनलकांत

संयुक्त-सम्पादक
श्रीधरम/रमण कुमार सिंह/अविनाश

कला सम्पादक
अशोक भौमिक

संपादकीय सहयोगी
आशुतोष कुमार ठाकुर/अतुल कुमार ठाकुर

मुख्य प्रबंधक : **दीपक कुमार दिनकर**

आवरण चित्र : **अक्षय अमेरिया**
भीतरक समस्त रेखांकन : **भुनेश्वर भास्कर**



संपादकीय कार्यालय :
सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन एक्सटेंशन-II, गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com
फोन : 0120-2648212 मो. : 9871856053

मूल्य : एक प्रति : 20 टाका

चेक/ड्राफ्ट *अंतिका* क नाम सँ रहय।

स्वामी-प्रकाशक-मुद्रक : **नंदिनी**
153 बी/पाकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95 सँ प्रकाशित आ तरुण प्रिंटर्स, 9267, शाही मोहल्ला, वेस्ट रोहतासनगर, शाहदरा, दिल्ली-32 सँ मुद्रित।
सम्पादक : **अनलकांत**



संपादकीय

खत्म नइँ हैत अरुण प्रकाशक रचनाक प्रकाश

'अंतिका'क शुरुआत मे जिनका लोकनिक योगदान रहल ताहि मे अरुण प्रकाश जी प्रथम छलाह। अरुण जी मे मैथिलजन, समाज आ भाषा सँ निरंतर जुड़ल रहबाक उत्कट इच्छा रहैत छलनि। ओ ओत'क बोली-बानी, लोकोक्ति आ मोहावराक प्रेमी आ जानकार छलाह। खेत-खरिहान, बाग-बगीचा, चर-चाँचर, पोखरि-धार-इनार आदि सँ जुड़ल बात-विचार आ ताहि मे आबि रहल परिवर्तन पर हुनक गहींर नजरि सदति रहैत छलनि। आ से जनबाक हुनक इच्छा ततेक उत्कट रहैत छलनि जे ओ ओम्हरका कोनो नव पाठक-लेखक हो, रिक्शावला हो आकि कोनो सामान्य वा विशिष्टजन— सब सँ आत्मीयतापूर्वक खोदि-खोदि पूछथि, बेकछा-बेकछा समझाबथि आ जिरह करथि। माने जे मिथिलाक सुख-दुख सँ ओ सब तरहें जुड़ल रहयवला व्यक्तित्व छलाह आ तेँ 'अंतिका'क आरंभक संगहि 'विकासक एजेंडा आ बुद्धिजीवी' सन लेख सँ ओ मैथिली मे लिखबाक हेतु सेहो प्रस्तुत भेलाह। ई फराक बात जे अरुण प्रकाश जी मैथिली मे प्रकाशित करीब आधा दर्जन लेख आ टिप्पणीक अलावा बेसी किछु नइँ लिखलनि, मुदा हुनक हिंदी रचना केँ देखी तँ स्पष्ट हैत जे हुनक चिंताक केंद्र वैह समाज छल। ओना ओ सम्पूर्ण भारत आ विश्व परिघटना पर नजरि रखैवला बहुमुखी व्यक्तित्व छलाह। मुदा जकरा अपन जड़ि कहैत छै, जत' बेर-बेर घूमि अयबा लेल नागार्जुन सेहो व्यग्र छलाह, ओहि ठामक चिंताधारा सँ अरुण जीक व्यापक जुड़ाव परिलक्षित होइत अछि।

अरुण जी हमरा लेल निश्चये घरक लोक छलाह। पछिला सत्रह-अठारह वर्ष हुनका सँ निकट रहबाक सौभाग्य भेटल आ एहि बीच अंतिका, अंतिका प्रकाशन, बया आदिक संगहि हमर निजी जीवन मे जे हुनक जुड़ाव रहल से हुनका अभिभावकक दर्जा दैत अछि आ तेँई हमर व्यक्तिगत क्षति सेहो थिक। एखन एहन शोकक घड़ी मे हुनका मादे बेसी लिखबाक मन:स्थिति नइँ बनि पाबि रहल अछि। संक्षेप मे एतबे जे गत सदीक साठिक दशकक बाद मिथिला समाज सँ राष्ट्रीय व्यक्तित्व वला जे लेखक सोझाँ अबैत छथि ताहि मे अरुण प्रकाश जी सब सँ पहिने ध्यान मे अबैत छथि।

22 फरवरी, 1948 केँ बेगूसराय जिलाक निपनियाँ गाम मे जनमल अरुण प्रकाशक शिक्षा-दीक्षा गामे सँ शुरू भेलनि। आगाँ चलि ओ प्रबंध विज्ञान मे स्नातक आ पत्रकारिता मे स्नातकोत्तर डिप्लोमा कयलनि। हुनक पिता रुद्रनारायण झा प्रसिद्ध समाजवादी नेता छलाह। लोहिया जी, रेणु जी आदि सँ हुनक निकटता छलनि। अरुण प्रकाश नाम अमर कथा-शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणुक राखल छल।

कहबा लेल अरुण जी सांसद पिताक पुत्र छलाह मुदा हुनक बचपन अभाव मे बीतल। जखन ओ सात सालक छलाह हुनक शिक्षिका माय चलि बसलीह। किशोरावस्था मे पहुँचले छलाह कि राजनीतिक ईर्ष्याक कारणे हुनक पिता केँ कार सँ कूचि क' मारि देल गेलनि। 22 वर्षक अवस्था मे छोट-छोट भाइ सहित संपूर्ण परिवारक बोझ आबि गेलनि। एम.पी. फ्लैट मे दू वर्ष रहलाक बाद ओकरा खाली क' सर्वेंट क्वार्टर मे आबि गेल छलाह। अरुण जीक शब्द मे, ''सामर्थ्यक लक्ष्मण रेखा खीचिक' गरीबी मनुक्ख केँ छोट क' दैत छै। मुश्किल सँ पढ़ाइ भेल, ट्यूशनक चक्कर, पिताक खुशहाल मित्र/संबंधीक सहारे पैघ भेलहुँ। हमरा परिवारक लोक सम्मान-स्वाभिमान केँ गरीबी सँ बेसी प्रेम करैत छलाह। सब टा अमीर मूल्यहीन देखाइत छलाह। निम्नवर्गीय गरीबी आ अपन मूल्य सँ काँकौड़ जकाँ कादो मे चिपकल! हायर सेकेण्डरीक परीक्षाक दिन छल। अप्रैलक तेज गर्मी मे कोलतारक सड़क पर खाली पयरें परीक्षा देबय जाइत रही। तरबा मे छाला पड़ि गेल। रहम क' हमर पिताक एक मित्र नव चप्पल कीनि देलनि। ओ हमर जीवनक पहिल चप्पल छल। नव चप्पल काटि खेलक। तखने जनलहुँ जे गरीबी सँ उबर' मे सेहो छाला पड़ैत अछि।''

एक टा संघर्ष भरल जिंदगी जीबैत अरुण प्रकाश लगातार लिखलनि। जेहेन जिनगी चाहलनि तेहेन बनौलनि। जमल-जमाओल सरकारी नोकरी छोड़ि पत्रकारिता मे अयलाह। पहिने 'जागरण' फेर 'सहारा' आ फेर कतेको अखबार-पत्रिका सँ होइत सालो-साल फ्रीलांस कयलनि। अनेक तरहक अनुवाद, स्क्रिप्ट राइटिंग, धारावाहिक सभक लेल लेखन, फिल्म-टेलीफिल्म आदि लेल लेखन करैत पत्रकारिता संस्थान सब मे पढ़ौलनि सेहो खूब जतन सँ। फेर साहित्य अकादेमीक पत्रिका मे अयलाह तँ ओतहु अपन छाप छोड़लनि। वीणा भौजी सभतरि संग रहलनि। बेटा मनु प्रकाश, बेटी अमृता प्रकाश आ पुत्रवधु सेहो आब जॉब मे छनि। घर मे एक टा पोती सेहो छनि। एक तरहें आब इत्मीनान सँ लिखबाक उम्र आ स्थिति बनल छलनि। लगातार सक्रिय सेहो छलाह। विद्यापतिक जीवन पर 'पूर्व राग' उपन्यास आ कतेको नव विषय उठा रहल छलाह। गद्य आलोचना मे फॉर्म आ जेनर सन नव विषय-क्षेत्र पर खूब सक्रिय छलाह कि साँसक ई बीमारी लंग्स केँ डैमेज करैत धीरे-धीरे गंभीर भ' गेलनि।

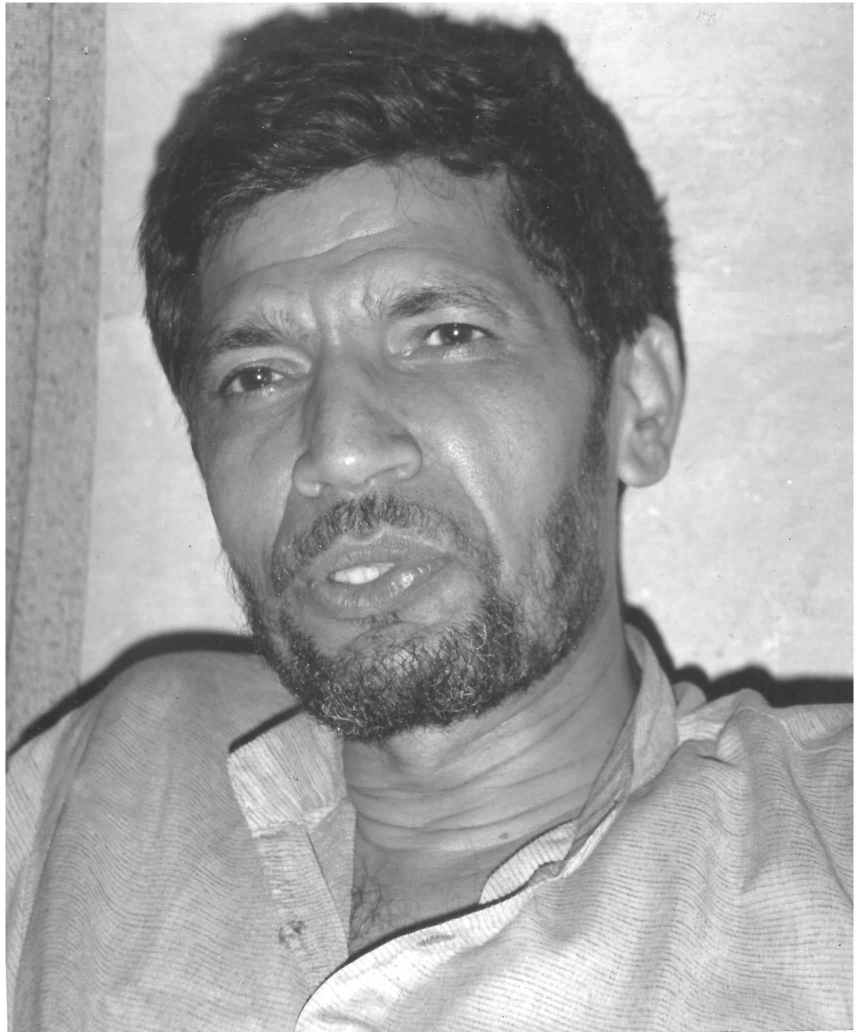
लगभग चारि-पाँच साल गंभीर रूपें बीमार रहलाह। चारि-छ: घंटा सँ बढ़ैत जल्दिए चौबीसो घंटा ऑक्सीजन लागल रह' लगलनि। फेर बाइ-पाइप...फेर आई.सी.यू. आ घरक आवाजाही मे घर सँ बेसी आई.सी.यू. मे रह' लगलाह। महँग इलाजोक काल मे हुनक चेहरा पर कहियो उदासी नइँ देखायल। महामना लोकनिक दान-अनुदानक सब प्रयास केँ अंत धरि नकारैत रहलाह। घर बीका गेलनि मुदा स्वाभिमान पर खरोंच नइँ लाग' देलनि।

'भैया एक्सप्रेस', 'जल-प्रांतर', 'बेला एक्का लौट रही हैं', 'विषम राग', 'गजपुराण' सन चालीस सँ बेसी कालजयी कथाक लेखक अरुण प्रकाशक उपन्यास 'कोंपल कथा' सेहो चर्चित रहलनि। गैर साहित्यिक वैचारिक लेखन-अनुवाद आ पत्रकारिताक अतिरिक्त व्यंग्य आ कविता मे सेहो हुनक सक्रियता छलनि। कथेतर गद्यक आलोचनाक बहाने 'फॉर्म' आ 'जेनर' केँ ल' क' 'गद्य की पहचान' सन एहि विषयक पहिल यादगार पुस्तक हिंदी संसार केँ देलनि। सात कथा-संग्रह, आठ अनूदित पुस्तक आ करीब चारि-पाँच प्रकाश्य पुस्तक सहित करीब तीन हजार पृष्ठ मे बिखरल रचना-संसार छोड़ि 18 जून, 2012क दूपहर नई दिल्लीक पटेल चेस्ट अस्पताल मे ओ अंतिम साँस लेलनि। आब अरुण प्रकाश हमरा बीच नइँ छथि मुदा हुनक रचनाक प्रकाश कहियो खत्म नइँ हैत।

स्मृति-शेष

अरुण प्रकाश माने बड़का भाइ, पिता, संरक्षक....जकरा सँ रुसि-फूलि सकैत छी

श्रीधरम



पिछला किछु बरख सँ अरुण प्रकाश जी केँ लगातार बेड पर पड़ल, नाक मे किसिम-किसिमक आक्सीजन मास्क-पाइप लागल रहैत देखितो हम आस्वस्त रही जे हुनका एखन किछु ने भ' सकैत छनि। जेना अपन माँ केँ जन्मे सँ बीमार देखबाक आदी रही... मुदा लगभग दू बरख पहिने माँ जयबाक निश्चय क' लेलक... हम ई जानि अंतिम समय मे खिसकि गेल रही... ओ अंतिम दृश्य देखबाक हमरा सामर्थ्य नइँ रहय.. मुदा अरुण प्रकाश जी खिसकबाक मौका नइँ देलनि...पचकठिया चढ़ाबहि पड़ल...छोट हेबाक दंड...बुध दिन 18 तारीख, दिनक लगभग दू बजे, कनाट प्लेसक पालिका पार्किंग सँ निकलैत रही कि गौरीक (ई गौरीनाथक लेल अरुण जीक पुकारू नाम थिक) फोन आयल—अरुण जी नइँ रहलखुन... तू हुनका डेरा पर पहुँचह, हम आबि रहल छियह। पिछला एक महीना सँ गौरीनाथ कहैत रहय जे एक बेर देख आबह, आब कम्मे आशा... मुदा नइँ जा सकलहुँ। अरुण जीक निधन पर फेसबुक पर पत्रकार प्रियदर्शन ठीके लिखलनि, ''दोपहर को दफ्तर में अरुण प्रकाश के देहावसान की ख़बर मिली। मालूम था कि वे अरसे से बीमार हैं। 'जनसत्ता' के दिनों की कुछ बहुत आत्मीय मुलाकातों की याद भी आती रही। लेकिन दिल्ली शायद हम सबसे अपनी क़ीमत वसूलती है। कभी उनको देखने भी नहीं जा सका। अब फेसबुक पर उन्हें याद करने में भी एक तरह का दिखावा लग रहा है। लेकिन शायद मैं इतना ही कर सकता हूँ।''

असल मे विश्वासे नइँ होइत रहय जे अरुण जी ऐना चलि जेताह। पिछला लगभग चारि बरख सँ हुनका एहिना देखबाक आदति जे पड़ि गेल रहय...जेना जन्मे सँ माँ केँ एहि स्थिति मे देखबाक...

आब विद्यापति पर लिखल अपूर्ण उपन्यास केँ के पूरा करत? अरुण प्रकाश माने दिल्ली मे एक टा बड़का भाइ, पिता, संरक्षक.... जकरा सँ रुसि-फूलि सकैत छी। अरुण प्रकाश माने संवेदनशील कथाकार, अपन कथाक कथ्य आ भाषा पर संपूर्ण रिसर्च केनिहार...अरुण प्रकाश माने सांगोपांग व्याख्या करयवला आलोचक। सब सँ बढ़िक' अरुण जी एक टा आलराउंडर डाक्टर रहथि जकरा लग एलोपैथ, होमियोपैथ, आयुर्वेद आ नइँ जानि कोन-कोन देसी नुस्खाक खजाना रहनि। अपन मोन खराब भेल अरुण जी केँ फोन करू... बच्चोक मोन खराब भेल अरुण जी सँ पूछि लिय'। जहन हमर माँक किडनी मे स्टोन भ' गेल रहनि हुनकर बताऔल बर्बरिश आ कुर्थीक दालि नइँ जानि कतेक दिन धरि ओ खाइत रहलि। आ अरुण जीक नाम लैत रहलि।

दरभंगे मे रही तँ हुनकर फोटो 'अंतिका' मे देखने रही, ओ 'अंतिका'क संरक्षक रहथि। दिल्ली अयलाक बाद हुनकर कहानी सभ पढ़लहुँ... आ जखन पहिल भेंट भेल तँ बुझना गेल जे हरिमोहन झाक दरबज्जा पर बैसल

छी.. बतरसक साक्षात् मूर्ति... रेणु, नागार्जुन आ हरिमोहन झा, तीनूक व्यक्तित्वक सम्मीश्रण अरुण प्रकाश। दिल्ली सनक महानगर मे एक टा 'तू' कहय बला भाइ आ बीना भाभी सन भौजी भेटि गेलि... जिनका सँ रुसी-फूलि सकैत छी। मुदा आइ ओ छाया समाप्त भ' गेल...

मयूर विहार स्थित आईएफएस अपार्टमेंटक गेटहि सँ भाभीक आर्तनाद भीतर धरि हिलाक' राखि देलक...हिम्मत क'क' ऊपर धरि पहुँचलहुँ...उजरा कपड़ा मे लपेटल अरुण जी निसभेर सूतल रहथि...आइ वीणा भाभीक आर्तनाद पर हुनकर कोनो प्रतिक्रिया नइँ... बेटी गुड्डीक बेहोशीक कोनो चिंता नइँ... हुनकर चिरपरिचित बतरसक आइ सदाक लेल अंत भ' गेल रहय...

हुनकर प्रिय ड्रेस कुरता-पैजामा। हम बेरा बेरी दुनू पैर उठाक' बच्चा जकाँ हुनका पैजामा पहिरा देलियनि। मनु कुरता गरदनि मे लटका देलकनि...ओह... ठोर कने लटकि क' टेढ़ भ' गेल रहनि। साइत वेंटिलेशन पर ठीक सँ नर्स-डाक्टर ध्यान नइँ देलकनि... नर्स-डाक्टर केँ कोन मतलब जे मुइलाक बाद ककरो सुन्दर ठोर टेढ़ भ' जाय आकि कटि जाय। सभ गोटे उठाक' चचरी पर सुताय देलियनि... ओह... चचरी कने आरो पैघ होइत... एक पल लेल हुनक कद-काठी पर गुमान भ' उठल।

तखन पाँच बाजि गेल रहय। छह बजे लोदी रोड शमशान घाट मे अंतिम संस्कारक नंबर भेटलनि...दिल्लीक शमशान मे जरेबाको लेल नंबर चाही किने... मुदा एक घंटाक भीतर शमशान घाट मे सभ उम्रक मित्र मंडलीक भीड़ जमा भ' गेल... विश्वनाथ त्रिपाठी, पंकज बिष्ट, प्रेमपाल शर्मा, अरविन्द मोहन, यशवंत व्यास, विष्णु नागर, शरद दत्त, अनिल चमड़िया, हरिनारायण, अजय तिवारी, मंगलेश डबराल, गंगेश गुंजन, मदन कश्यप, मनोज मेहता, कुमार मुकुल आ नइँ जानि के के जमा भ' गेलाह...

2004 मे एक साँझ ओ 'कथादेश' आफिस मे आबिक' अपन धुनी रमा देने रहथि... साहित्य, दुनियादारीक संग-संग नइँ जानि कतेक विषय पर हुनक व्याख्यान चलैत रहल.. लीचीक चीन सँ भारत आगमन पर ओ छोट सन व्यांख्यान देलनि जे कोना चीनी बौद्ध भिक्षु लोकनि नालंदा विश्वविद्यालय मे पढ़बाक लेल अबैत छलाह आ बटखर्चा मे अपना देश सँ लीची अनैत छलाह... आ तकरे बीया पसरैत-पसरैत मुजफ्फरपुर सँ ल'क' पूरे देश भरि मे पसरी गेल...आ लीचीक भारतीयकरण भ' गेल। बाबाक (नागार्जुनक) मादे बात चलल। ओ बजलाह बुढ़बा बड्ड झगरलगौन रहौ... जीहक पातर तँ सहजे...एक दिन हम बाहर रही तँ वीणाक हाथें खूब तरुआ-बघरुआ खेलाक बाद बुढ़बा लेसि देलकौ, ''अरे ठीक है कि अरुण धरम-करम नहीं मानता है, पर बच्चे का जनेऊ तो कर देना चाहिए!'' हम घर पहुँचलहुँ तँ वीणा हमरा पर फायर भेल—ई बाबा सँ पैघ कम्युनिस्ट बनैत छथि। गुग्गूक जनेऊ हेबाक चाही!.. हमरा माजरा समझबा मे देरी नइँ लागल... हमहूँ अगिले दिन सादतपुर पहुँचि गेलहुँ आ बाबा केँ कहलियनि—निकालिए पैसा...

2005 मे संगमनक कार्यक्रम मे पिथौरागढ़ गेल रही। संग मे काशीनाथ सिंह, गिरिराज किशोर, कामतानाथ, देवेन्द्र, गौरीनाथ, शिवमूर्ति, मनीषा कुलश्रेष्ठ, प्रियंवद, संजीव आदि हिन्दीक साहित्यकार... राति मे रस-रंजनक कार्यक्रम चलि रहल छल... काशी बाबूक गिलास पर गिलास खाली भ' रहल छल आ हरिनारायण जी दुनू हाथें भरने जा रहल छलाह... गीतक दौर चलल... हमहूँ गौरीनाथक संग एक टा मैथिली गीतक बेसुराह राग अलापलहुँ... काशीनाथ जी सेहो दू लाइन गुनगुनेलाह... अचानक अरुण जीक आवाज मे पूरा सभा झूमि उठल, ''दिल मे एक लहर सी उठी है अभी, कोई ताज़ा हवा चली है अभी...'' हुनकर एहि नव कलाकारिता पर के नइँ रीझि उठितय? ओतहिये भोर मे हुनका खोंखीक जे हमला भेल! हुनका साँस लै मे दिक्कत देखि सभ क्यो सहमि गेल रहय। एक तँ दम्माक मरीज ताहि पर पहाड़क ऊँचाइ, मुदा ओ बजैत रहलाह, ''अरे घबराने की बात नहीं है कुछ देर में सब ठीक हो जाएगा।''

हुनका घर पर जेबाक मतलब रहय जे समय ठहरि जाइत रहय। दिल्ली मे दू आदमीक घर जेबाक मतलब अहाँ हाथ सँ घड़ी खोलिक' फेकि दिअ... ताहि मे अरुण प्रकाश आ दोसर गौरीनाथ... पहिने भाइक साहित्यबाजी आ बाद मे भौजीक दुनियादारी...एकरा दिल्लीक सभ्य-भाषा मे गँवारपन कहल जाइत छै...सभ्य बुद्धिजीवी परिवार मे एक गिलास पानि जँ भेट गेल तँ भागे बुझू... कोनटाक दोग सँ गुरराइत मादा आँखि... मुदा अरुण जी भेंट होइते घर-परिवार, सारंग, संजीव, रमण, सभक कुशल समाचार लैत रहथि।

जहिया सँ ओ बेसी बीमार भेलाह, प्रायः सार्वजनिक मंच पर नइँ निकलि सकलाह। हुनकर इच्छा रहैत छलनि जे क्यो ने क्यो घर अबैत रहय... दू अप्रैल, 2009 केँ शम्भुनाथ जी संगे हुनका ओतय (तत्कालीन ग्रीन-पार्क स्थित डेरा) गेल रही। शम्भुनाथ जी कहने रहथि जे हुनकर संबंध अरुण जी सँ आपातकालक समय सँ रहनि। 1977 मे ओ कलकत्ता मे एक टा विशाल राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित कयने रहथि...जाहि मे अरुण प्रकाश, निरंजन आदि बेगूसराय, समस्तीपुर सँ पहुँचल रहथि। शंभुनाथ संगे ओ घंटो बतियाइत रहलाह...बेर-बेर आक्सीजन मास्क बहार निकालि बात मे तल्लीन भ' जाथि। ओ बेर-बेर दोहराबथि थोड़े दिन मे ठीक भ' जायब। फेर उपन्यास पूरा करब, आलोचनाक किताब पूरा करब... अरुणजी अपन रचनाक प्रकाशन मे कहियो हड़बड़ी नइँ करथि, जाधरि ओ पुर्णतः संतुष्ट नहि भ' जाथि। एक लेख लेल ओ पचासो पन्नाक नोट्स लैत रहथि...ओही दिन ओ कहलनि गाम सँ तीसी लेने अबिहें, फेफड़ाक लेल अचूक दबाइ होइत छै। मुदा...एहि बीच दू-तीन बेर मैनेजर पाण्डेय आ गौरीनाथक संगे हुनका लग गेल रही...मौत सँ साक्षात हुनका लड़ैत देखिक' देह मे झुनझुन्नी पसरि जाय...मुदा ओ देश-दुनिया आ साहित्यक खोज-खबरि मे डूबि जाथि...

अरुण जी हिन्दी साहित्यक छात्र नइँ रहथि, मुदा चाहे उत्तर आधुनिकतावाद हो, चाहे दलित-स्त्रीवाद ओ जाहि तरहें सरल भाषा मे समझाबथि से देखि क' विश्वविद्यालयी विद्वान् पर तरस आबय। हुनका मे मिथिलाम कुटि-कुटिक' भरल रहनि। बतरस आ भोजन-प्रियता मे कनेको कम नइँ। हुनकर कहब रहनि जे राति क' कने भात जरूर खाइ... नीक निन्न अबैत छै... दिल्लीबला सब खेनाइ थोड़बे जनैत अछि। फेर ओ हमरा उलाहना दैत कहथि, ''रे गौरी बता रहा था कि तुम माछ बहुत अच्छा बनाता है..'' हम कहियनि काल्हिएक प्रोग्राम राखू...'' ओ कहथि, ''थोड़ा ठीक हो जाऊँ तो गौरी के साथ तुम्हारे यहाँ माछ-भात खाने चलूँगा।'' मुदा से दिन नइँ आबि सकल... आब तँ मात्र हुनकर संस्मरण अछि आ हुनक कथा-उपन्यास-आलोचना जकरा पढ़ैत हुनका खोजल-ताकल जा सकैत अछि।



बर्टोल्ट ब्रेष्ट : रंगमंचक कविता-4

कुणाल

'रंगमंच पर' शीर्षक सँ ब्रेष्टक छओ टा कविताक फोल्डर 1938 मे प्रकाशित भेल। पहिल कविता, 'पर्यवेक्षण कला' आ दोसर 'प्रत्येक दिनकर रंगमंच' पछिला दू अंक मे क्रमशः आबि चुकल अछि। एत' प्रस्तुत अछि बाकी चारू कविता जे काल, निर्णय, आलोचनाक प्रवृत्ति आ भावनाक संग रंगमंचक अंतर्संबंध पर केन्द्रित अछि। आ ब्रेष्टक रंग-सिद्धांत केँ सूत्रबद्ध करैत रंग अभ्यासक विस्तार करैत अछि :

भूत आ वर्तमान

अहाँ जे किछु देखबैत छी
से किछु एहन सन हेबाक चाही
मानू जे ओ घटना एखने घटि रहल होइ।
तल्लीन/मौन दर्शक
दीर्घाक अन्हार मे बैसल
मुग्ध/दैनंदिन झर-झमेला सँ फराक।
मानू जे मंच पर दृश्य छै
मलाहिन केँ ओकर बेटा भेटनाइ
जकरा/सेना-अधिकारी/गोली मारि देलकैए
आर/एहि कांडक
सब साक्ष्य
समस्त चेन्ह केँ मेटा देल गेलैए।
ई जे दृश्य छै
से एत'/आ बस एखने भ' रहल छै
अहाँ अभ्यस्त छी
एहन देखाबक लेल
हमर मानी
तँ एक टा दोसर अभ्यास केँ जोड़ू
अर्थात्/अहाँक अभिनय
तात्कालिक सत्य केँ व्यक्त करए।
सत्य तँ ई छै जे अहाँ दोहरबैत छी
यैह काल्हिए/अहाँ ई अभिनय केलौं
आ जँ दर्शक भेटल/तँ काल्हियो करब
एक टा आर प्रदर्शन हैत
आब/अभ्यास ई करक छै
जे तत्काल
ओहि काल आ ओकर बादक काल केँ
झँपबाक चेष्टा नइँ करय
हम तँ कहब
जे कथू केँ झँपबाक चेष्टा नइँ करय।

घटना/जे रंगमंचक बाहर घटि रहल छै
ओहनो/जेहन रंगमंच पर
आर ओहनो/जे साफे फराक अछि
सबके/मोन रखबाक अभ्यास करू
अपन रचना केँ
अहाँ फराक सतह पर ठाढ़ करब
तँ नइँ नुकाउ
जे कथी सँ फराक क' रहल छी अहाँ
अपना अभिनय केँ
क्रमबद्धताक आदति लगाउ
आर प्रवृत्ति/काज केँ पूरा करबाक
एहि तरहेँ।
अहाँ घटनाक निरंतर प्रवाह केँ देखा सकब
आर तखन
स्पष्ट हैत अहाँक कार्य-पद्धति
आर दर्शक।
जेना एक टा बंधन सँ मुक्त भ' जैत
आर ओ/तत्काल केँ
अनेको स्तर आर सतह पर अनुभव करत
ओहि काल सँ आगमन
आब'बला काल मे विलयन
आरो बहुत किछु/एकर अतिरिक्तो
ओ तखन/दर्शक-दीर्घा टा मे बैसल नइँ
एहि दुनिया मे अछि।

निर्णय

अहाँ/कलाकार लोकनि
आनन्द अथवा पीड़ाक परिस्थिति मे
अपना केँ प्रस्तुत करैत छी/निर्णय
दर्शक पर छोड़ैत छी
आब एक टा आगूक काज करू
जे अहाँ देखबैत छी/ताहि संसारक प्रति
दर्शकक निर्णय केँ प्रस्तुत करू।
जे छै/सैह देखाउ
संगहि
ईहो जनाउ जे आर की सब भ' सकैत छल
जे सहायक होइत/परंतु नइँ भेल
प्रदर्शन स'/दर्शक जानि सकए
प्रदर्शनक उपयोग
जनबाक एहि प्रतिक्रियाक आधार छै/आनन्द
सिखनाइ/एक टा कला थिक/आर अहाँ केँ
वस्तु आ व्यक्तिक संग व्यवहार केनाइ
सीखेबाक अछि
एक टा कला-रूप मे/आर
कला-अभ्यासक आधार छै
आनन्द।

जाँचिक' देखियौ
अहाँ अंधकार-युग मे जीबै छी
लोक/पैशाचिक शक्तिक कंदुक बनल अछि
पयरक प्रहार सहैत
एहना मे/मूर्खे टा चिन्ताहीन भ' सकैए
संदेह रहित/विश्वासी लोक
गताल खत्ते मे खसैए
आजुक शहर मे/जे यातना-यंत्रणा छै
तकरा सोझाँ
प्रागैतिहासिक कालक भूकंपक भयावहता
हीन छै/खराप फसिलक कोन बात ओत'
जत'/भरल गोदामक अछैत
लोक भूख सँ मरैत अछि।

आलोचना

किछु गोटेक अभिमत छनि
आलोचना सँ कोनो लाभ नइँ
उर्जाक अपव्यय
किऐ तँ/जकर आलोचना करैत छी
तकरा लेल/धनसन
ओकरा कोनो फर्क नइँ पड़ै छै
जेना सत्ता।
हम कहब
अनबधानल आलोचना सँ कोनो लाभ नइँ

आलोचना केँ दृढ़ता दियौ
धार दियौ/हथियार दियौ
आर देखियौ
जे केना ने फर्क पड़ै छै
एहन आलोचना
सत्ता के धराशायी क' सकैए।

नदी पर बान्ह बन्हनाइ
नहरि खोलनाइ
फलदायी गाछ रोपनाइ
एक गोटा केँ शिक्षा देनाइ
व्यवस्था केँ बदलि देनाइ
किछु उदाहरण अछि।
सम्यक आलोचनाक/आर
कलाक उदाहरण सेहो।

भावना

हमरा सभक बीच
किछु गोटे मानैत छथि जे नाटक
माने निष्क्रिय-भावक उद्वेलन मात्र
हमरा ई अनसोहाँत लगैए
तखन तँ रंगमंच भेल मालिसक दोकान
कलाकार/मलसीया
जे गहिकीक थूल-थूल मांस पिंड मे
आंगुर घोंपि समरस करैत अछि
जेना चिक्कस सननाइ
तहिना आलसी लोकक धोधि केँ मसनाइ।

मंच पर
जे परिस्थिति बनैए/से
दर्शक मे/तामस वा पीड़ा जगबैए
आर ओ गहिकी-दर्शक/ओ होइए
जकरा नांगट होइत लोक केँ देखनाइ
नीक लगैत छै/जेना भूखल लोक लग
खायल-पीयल अघायल लोक केँ
बैसिक' लगैत छै।

एहन भावक उत्पादन
ठीक नइँ/मलिन अछि/अशुद्ध अछि
एतेक ओझरायल
जे मिथ्या लगैत अछि
जत'तक विचारक बात छै/रीढ़ पर भेल आघात
आत्माक तलछट केँ/सतह पर अनैए।

आँखि पर चश्मा
कपार पर बूनिआयल पसेना
आर फड़कैत बाँहि
उत्तेजना-विषमातल दर्शक
प्रदर्शन मे बेर-बेर अबैए
कोनो आश्चर्य नइँ
टिकट जोड़ा मे बिकाइए/ईहो आश्चर्य नइँ
ओकरा दुनू केँ/नीक लगैत छै अन्हार मे
अन्हार/जे दुनू केँ झाँपि दैत छै!

(अंग्रेजी सँ अनुवाद)

नाटक मे प्रस्तुत घटना भूतकाल मे घटल रहैत छै। ई कालखण्ड निकट अतीत, सुदूर अतीत आ कि प्रागैतिहासिक-पौराणिक पर्यंत भ' सकैए। परंतु प्रदर्शनक काल मे ओकर स्थानिक आ तात्कालिक होयब निश्चित होइत छै। एकर कारण छै घटनाके अद्यतन विचार प्रक्रियाक अनुसार बुझनाइ, आजुक परिप्रेक्ष्य मे विश्लेषित केनाइ। सामयिक प्रसंग सँ ओकर जुड़ाव भेनाइ।

नाटकक घटना, कलाकारक माध्यम सँ साकार होइ अछि। ई कलाकार, नाटकक घटनाक प्रत्यक्षभोगी नइँ रहैत अछि। परंतु ओ आजुक परिघटना सभक प्रत्यक्षदर्शी आ प्रत्यक्षभोगी तँ अछिए। फलत: नाटकक ओकर चरित्र, कलाकारक प्रत्यक्ष अनुभव संपोषित होइए।

आइ आ काल्हि मे अंतर छै। ई अंतर अहाँ केँ एक नाटकक एक सँ अधिक प्रदर्शन मे स्पष्ट परिलक्षित हैत। रंगमंच एक जीवंत कला अछि। जीवन मे क्षण-प्रति-क्षण परिवर्तन होइत रहै छै। ई परिवर्तन रंगमंच केँ प्रभावित करैत रहैत छै आ एक प्रदर्शन, दोसर सँ फराक भ' जाइए। जँ से नइँ होइत छै तँ ओकरा मे सँ जीवंत विशेषण हटि जेतै आ ओकरा मे रटंत विद्याक यांत्रिकता आ दुहरावक यातना टा रहि जेतै।

मानि लिअ' जे नाटक मे घटना छै—एक टा हत्याकांड। ओकर सब टा साक्ष्य मेटा क' लहास ओकरा माय केँ सौंपि देल जाइत छै। हत्यारा, टहलैत-बूलैत चलि जाइए। रहि जाइ अइ दुखिया माय आ ओकर मुइल बेटा।

नाटकक एहि घटना सँ मोन पड़ैत छै हजारो इनकाउन्टर, हाजत-हत्या, दंगा-उन्माद ...भ्रष्टाचार आ घोटाला...

एक टा प्रधानमंत्री घोषणा केलनि जे दिल्ली सँ चलल एक रुपैया गाम जाइत-जाइत पंद्रह पाइ भ' जाइए...एहन सन जेना ई कोनो उपलब्धि होनि। तखन घोटाला लाखो मे होइ छलै...आब लाखो करोड़ माने अरब-खरब-पद्म-शंख-महाशंख मे भ' रहलै अइ। तखन पाँचो पाइ टारगेट के भेटैत हेतै। ओहो पाँच पाइ के सिक्का आब चलन मे छै कहाँ! तँ शून्य भेल फाइनल आंसर।

नाटकक घटनाक उदाहरण सँ आरंभ करी तँ शृंखला यैह बनैत अछि। ई प्रक्रिया बंद नइँ होइत छै। एकर प्रभावी कारक छै कालक गतिमयता। ई क्रमबद्ध होइत अछि। अतीत सँ वर्तमान आ तखन भविष्य। एक के बाद दोसर। आइ वर्तमान से काल्हि अतीत हैत। आइ जे भविष्य से हैत काल्हुक वर्तमान...कालक एहि निरंतरता मे जखन एक टा नाटक होइए तँ ओकर उद्देश्य छै दर्शक केँ तात्कालिक सत्यक स्मरण दियौनाइ।

नाटकक दुनिया, थिएटर सँ बाहरक दुनिया सँ बहराइ अछि। अंतर होइत छै प्रवृत्ति सँ। घटना केँ देखबाक दृष्टिकोण सँ आ लोक-जीवनक प्रति ओकर सरोकार सँ। तखन परिदृश्य समग्रता मे बनैत छै। जेना अपहृत बेटाक वापसीक लेल मायक अनशन, भ्रष्टाचारक विरुद्ध मजबूत लोकपाल कानून बेनबाक लेल अन्ना हजारे क' अनशन आ भ्रष्ट भेल गंगाक शुद्धिक लेल निगमानंदक मृत्युपर्यंत अनशन... सत्ताक निरंतर अनाचार आ निरंतर ठकाइत जनताक प्रतिवाद...

निष्कर्षत: कालक संदर्भ मे तीन टा बात नीक जकाँ बुझि पड़तै, क्रमबद्धता, प्रवृत्ति आ संलग्नता। एकरा लेल एक्के टा अभ्यास करक छै—नइँ नुकेबाक अभ्यास, सब किछु साफ-साफ रखबाक अभ्यास।

दुनिया मे रंगमंच अछि। तँ दर्शक सेहो दुनिया सँ आबिक' दीर्घा मे बैसल अछि। कलाकार सेहो ओही दुनिया सँ एत' आयल अछि। आर आपन परिवेशक प्रति साकांक्ष—सक्रिय रहले पर जीवंतता छै। जेना अनाचाकर प्रतिवाद आ तखन परिवर्तन आर....

दर्शकक-निर्णायक प्रस्तुति। जे सब सँ अंत मे होइत छल ओ सब सँ पहिने केनाइ।

एखन जे नाटक सब अछि, ओकर अपन निश्चित निष्कर्ष होइत छै। ई निष्कर्ष नाटकक लेखक निश्चित करैए। तखन ओहि पर रंगदल अपन निष्कर्ष बनबैए। नाटकक प्रदर्शन भेल। दर्शक ओहि पर अपन निर्णय देलक। एहि निर्णयक आधार होइ छै नाटककार आ रंगदलक मिश्रित निष्कर्ष। एहि क्रम केँ

उनटा करैत छी तँ होइए दर्शकक निष्कर्षक प्रस्तुति। एहि मे नाटककार मात्र एक टा घटना उपस्थित करत। रंगदल ओहि घटना केँ प्रस्तुत करत। आब देखी जे दर्शक की कहै अछि, ओ प्रस्तुति सँ निष्कर्ष बहार करैए।

एक टा मुहावरा छै—लोक की कहत? अर्थात लोक अधलाह कहत। निंदा करत। तेँ अधलाह काज कर' सँ पहिने सोचू जे लोक की कहत? लोक सोचितो अछि एत' तक जे लोकलाज दुआरे किछु नीको काज ने करैए।

जत'-तत' तँ ई लोक-लाज, लोक-आतंक तक भ' गेलैए। जेना-खाप। एहने ठाम आवश्यक छै—ओकर निर्णय। खापक पक्ष मे की विरोध मे?

प्रस्तुतिक एहि रूप मे करबाक लेल अभ्यास हेतै—समग्रता मे देखबाक प्रयास। घटना सँ संपृक्त सब किछु केँ ध्यान मे रखनाइ। ओकरा जोड़नाइ। अधिक सँ अधिक डिटेल। की भेलै?...केना भेलै?...आर की भ' सकैत छलै—जे नइँ भेलै... आर कत' सहायता भेटि सकैत छलै—जे नइँ भेटलै...एहि प्रक्रिया... सँ प्रस्तुतिक अपन निष्कर्ष हेतै जे दर्शकक निष्कर्ष हेतै। एत' कलाकार दर्शक छै, प्रतिनिधि सेहो अछि तेँ निष्कर्ष सेहो घटित हेतै। क्रमबद्धता सँ। अपने आप। पहिने सँ सोचल नइँ।

प्रदर्शनक यैह अछि उपयोगिता।

एक कला-रूपक हिसाबेँ रंगमंच, संबंध आ व्यवहार सीखबैत अछि। मनुक्खक जीवन मे संबंधक एक टा विशाल शृंखला होइत छै। माय-बाप, नाना-नानी, दादा-दादी, भाइ-बहिन...पति-पत्नी....दोस्त...मालिक... नोकर... अड़ोस-पड़ोस...प्रत्येक संबंधक लेल फराक व्यवहारक अपेक्षा होइत छै। अही व्यवहार मे निहित छै—रंगमंचक आनंद। आनन्दक उत्कर्ष छै परिवेशक प्रति स्पष्ट भ' गेनाइ। सब किछु फड़ीछ। साफ-साफ। ...परिवेश केँ बूझैत छी...कोनो भ्रम नइँ...तँ देखू एहि युग केँ, जाहि मे अहूँ छी, ताहि अंधकार युग केँ देखू। एत' अनाज खूबे सड़ैत अछि आ लोक भूख सँ मरैत अछि।

अहाँ अपने सँ जाँचि लिअ'। सहमत हैब जे केहन दुनिया मे छी जत' मूर्ख मात्र चिंता रहित अछि।

असंतोष सँ आक्रोश...आक्रोश सँ विरोध... विरोध सँ विद्रोह...विद्रोह सँ क्रांति...क्रांति सँ परिवर्तन आ तखन प्रगति...

आलोचना अर्थात असहमति—असंतोषक अभिव्यक्ति। एहि सँ जे चूक आरंभ होइत छै से परिवर्तन अनैत छै। आर तखने प्रगति, एक मानवीय समाजक रूप मे। तेँ जँ प्रगतिक कामना अछि तँ आलोचना कर' सँ नइँ हटू। आलोचना करू। मजाक मे नइँ। बुधियारियो मे ने। सब किछु साफ-साफ। ठाँहि-पठाँहि। रूपक हिसाबे आ स्थान-काल-पात्रक हिसाबे। ओ कोमल-कांति सँ रौद्र-प्रचंड... किछुओ भ' सकैए। परंतु ओकरा क्रमबद्ध, तार्किक, संलग्न...होब' पड़तै। समग्रता मे देख' पड़तै। ई संभव होइत छै आलोचनाक आवेग सँ। ओकर त्वरा सँ। तार्किकता सँ। जेहन लगैत छै से साफ-साफ कहला सँ। एकर प्रतिफल मे सत्ता केँ झुक' पड़ैत छै। मान' पड़ैत छै। अन्ना हजारेक अनशन (16-28 अगस्त, 2011) तँ यैह सिद्ध करैत अछि।

आलोचना माने फलदार गाछ रोपनाइ... नहरि बनौनाइ...एक गोटा केँ पढ़ौनाइ...सब टा आलोचनाक प्रतिफल अछि।

नाटक केनाइ, आलोचनाक उदाहरण अछि।

रंगमंच किऐ?

निष्क्रिय भावक उद्वेलनक लेल? ठेहिआयल मोनक लेल एक टा उत्तेजना? आगिआयल मोनक शीतल फुहार? जँ सैह, तँ ई भेल—मलिसिया रंगमंच।

मलसिया—मालिस केनिहार। एकर सेटिंग छै मसाज-पार्लर। शीतल-शांत-सुगंधित परिवेश मे, मलसिया क्लाइंटक धोधि मे आंगुर घोंपैए जेना चिक्कस सानल जाइत हो। एत' मांस-पेशी केँ आराम भेटै छै—नीक लगै छै। एकर अलावे भांति-भांति केँ मालिस। दाम दिअ' आ जेहन चाही, तेहन मालिस करबाउ।

जँ रंगमंच यैह?

तँ कलाकार भेल मोनक मलसिया। थिएटर पार्लरक कर्मचारी! क्लाइंट केँ जे नीक लगतै सैह करत। क्लाइंट जेहन कहतै—तेहन देखाओत। भेराइटी राखत। रेट चार्टक हिसाबे सेवा शुल्क लेत तँ ओकर क्लाइंट सेहो रूटीन बनाओत। दर्शकक स्थायी समुदाय बनतै... एहि मलसिया-रंगमंच मे दर्शक (क्लाइंट) जोड़ा मे अबैत अछि। दीर्घाक अन्हार मे पैसि जाइत अछि। अन्हार ओकरा दुनू केँ नुका लैत छै आ ओ अन्हार मे रहि जाइत अछि!

(क्रमशः...)



संपर्क : **सविता सदन (भारत प्रेस के सामने)**
पहला तल, रोड नं. 19, श्रीकृष्णनगर
पटना-800001
मोबाइल : 9334339348



सखी

रमेश रंजन

दृश्य : एक

(मंचक मध्य भाग मे घर अछि। घरक आगू मे किछु मूर्ति राखल रहैछ। घर सँ बाहर दिस खुल'वला एक टा खिड़की जकाँ छै। घरक बाहर सभ सरंजाम अस्त-व्यस्त अवस्था मे। टूटल-फुटल झरकल-जरल सन। संगीतक संग मंच पर इजोत अबैछ। गुरिल्ला सैन्य भेष तथा ओहने शारीरिक गति आ मुद्रा मे एक टा समूह प्रवेश करैत अछि। नेपथ्य सँ स्वर अबैत रहै छै।)

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्ति पृथिवी
शान्तिरायः शान्तिरोषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शन्तिः विश्वेदेवाः शान्तिः
ब्रम्हशान्तिः सर्व गवं शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि

(वेदमंत्र तीव्रतम होइत जाइत अछि। समूह एक टा जीव पर प्रहार करैत अछि। समूह मे विजयक प्रसन्नता देखाइ छै। धीरे-धीरे अन्हार पसरि जाइ छै।)

(पुनः मंच पर प्रकाश अबै छै, ओहि मे एक टा लड़की घर सँ निकलैत अछि। चारुभर चकुआइत अछि। फेर इम्हर-उम्हर ककरो खोजि रहल अछि। नइँ देखलाक बाद किलोल कर' लगैत अछि।)

शोभा : सखी! गे सखी। *(गुन्धुनाइत)* कत' गेलै? कनिए काल पहिने तँ एहिठाम छलै। सखी...। गै सखी छें....!

(मूर्तिक पाछू मे ओट लागल मुँह नुकायल-सन अवस्था मे सखी बैसल अछि। आवाज सुनलाक बादो प्रतिक्रियाविहीन। शोभा एखनो एम्हर-उम्हर ताकिए रहल अछि।)

कत' चलि गेलै? एकरा कनियो कथुक डर नइँ छै! गै सखी....सखी..., कत' गेलै?

(खोजबाक क्रम मे ओ खिड़की लग जाइत अछि आ बाहर देख' लगैत अछि।)

इम्हरो नइँ छै! कत' गेलै? *(जेना गौर सँ किछु देख रहल हुअय आ नजरि अटकि गेल होइक।)* सखी देखही ने कतेक सुन्दर गेना फुलायल छै। बहुतेरास कोढ़ी सेहो छै। नेबो मे फूल ध' ललकै आ अड़रनेबा तँ अतेक टटा भ' गेलै। हे...हे...हें...देखही नदी पार क' क' लोक सभ जा रहल छै। हाथ मे डोरी, हाँसु, खुर्पी आ छिट्टा ल' ल' क'... संगे छै बच्छा, गाय, बकरी आ तोरे सन-सन पाठी सेहो। पाठी सभ कुदकि रहल छै, नाँचि रहल छै। जीवनक लय पर जेना नाँचि रहल होइक।

छौंड़ा आ छौंड़ी सेहो छै संगे। खेलैत-कुदैत जा रहल। ई...ई...ईं..जे छौ ने ऊँ...कि नाम छै? पियर फराकवाली। किच्छो रहौक। से तँ बुझाइ छै उड़ि रहल छै, हवा मे। अनमन पुतरी जकाँ। जेना हम अपना सखी सभ संगे उड़ियाइ रहै छलियौ, हे एना....*(ओ स्वयं पुतरी जकाँ उड़' लगैत अछि। किछु कालक बाद फेर ओहि स्थान पर जाइत अछि। ओ चकित भ' क' किछु काल देखैत रहैत अछि।)* अँय...ई कि भेलै! सभ जेना भागि रहल होइक! बच्चा, बुढ़, जवान, आदमी, मालजाल सभ। खसैत-पड़ैत ओंघराइत। तड़ाक द' खसलै ओ...पियर फराकवाली छौंड़ी...हे दैब...! *(ओ आँखि मुनि क' घुमैत अछि।)*

(मार्च करैत बुटक ध्वनि सुनाइत छै। फेर तीव्रता बढ़ैत जाइत छै। संगीतक गतिक संगहि शोभाक शारीरिक क्रिया पर आतंकक प्रभाव देखल जाइछ। संगीत बंद होइ छै। शोभा चिचियाइत अछि जोर सँ। फेर बड़ तीव्रताक संग इम्हर-उम्हर ककरो खोजि रहल अछि। नइँ देखलाक बाद आतंकित)

सखी...सखी...सखी...सखी...!

(मूर्तिक पाछू मे बैसल सखी उठिक' शोभा लग जाइत अछि। शोभा चकित अछि आ प्रसन्न सेहो। पजियबैत अछि आ उठाक' चुम्माचाटी लैत अछि। सटने रहैत अछि अपना सँ।)

कत' चलि गेल छलह? एँ? बाज ने बाज! कत' हेरा गेल छलेह, बाज ने? हमरा झोंक चढ़लौ ने... ? तोहर चालि एकदम बिगड़ल जाइ छौ। बिना कहने कत्तौ चलि गेलौं।

(सखीक प्रतिक्रया, बैसल जगहक संकेत करैत अछि।)

ओत' बैसल छलेह। कहि देबाक चाही ने? देखही तँ की की सोचय लगलौं? तोरा एक पल नइँ देखै छियौ ने...।

कत्तौ नइँ जो। उम्हर बघबा सभ घुमैत रहै छै। भूख लागल ने, तँ जकरे-तकरे झपटि लेलक। आब नइँ जइहें...एँ... ? बाज ने? नइँ जेबही ने? बाहर मे हुर्र मचल छै। सभ जतै-ततै भागि रहल छै। जेना भय-आतंक खिहट्टा क' रहल होइक।

अच्छा छोड़, आब नीक बौआ जकाँ जे जे कहै छियौ से से कर। *(किछु सोचैत)* हम सभ एक टा खेल खेलाइ छी। हेतै? *(हँ, मे प्रतिक्रया दैत अछि।)*

करा रे कुर्र खलेबें? *(नइँ मे प्रतिक्रया दैत अछि)* जाह, नइँ खेलेबें तँ कोन खेल खेलेबें? *(बहुत आदमीक आवश्यकत होयबाक प्रतिक्रिया)* ए...। अइ खेल मे बहुत आदमी चाही, हमसभ दूइए आदमी छी, सैह ने? *(हँ मे प्रतिक्रया)*

तकरो उपाय भ' जेतै। मानि ले तोरो कात पाँच गोटे छौ आ हमरो कात पाँच गोटे छै, बस्स, भ' गेलै।

(दुनू गोटे कारा रे कुर्र खेलाइत अछि। काल्पनिक आ अदृश्य पात्र संगे खेलैत रहैत अछि। ओहि खेलक गीत चलैत रहै छै। खेलबाक क्रम मे दुनू मे नोंक-झोंक चलैत रहै छै।)

हे ई मरि गेलौ। तू मरि गेल छें, निकल।

(सखी संकेत करैत अछि। एक टा निकलि जाइ छै। फेर खेल शुरू होइ छै। एक टा पुनः मरैत अछि। करा-कुर्र फेर शुरू होइत अछि। दुनू सखीक मेड़िया मरल रहैत छै। तखने सखी भागि क' कात मे चलि जाइत अछि।)

ओहि ठाम किऐ चलि गेलही? नइँ खेलेबही? गे भगलकट्टी! एकर आदते छै, हारल कि भागल। नइँ खेलेबें तँ नइँ खेला, मुदा खेलक बीच मे सँ नइँ भाग।

रुसनाइ के बले सभके जितने अइ। तोरे रुस' अबै छौ, कि दोसरो केँ रुस' अबै छै।

(कोनो प्रतिक्रया नइँ, खाली शोभा केँ देखैत रहैत अछि।)

तकैए कोना? रुसिक' चाढ़िन भेल जाइए। आइ देखाइए देबौ, जे दोसरो केँ रुस' अबै छै।

(शोभा घुमैत अछि आ ओसाराक खम्हनीक ओट लागिक' बैसि जाइत अछि। सखी कनेकाल देखैत रहैत अछि, फेर उठिक' लग मे जाइत अछि। कनेक काल ठाढ़ रहैत अछि। शोभाक कोनो प्रतिक्रिया नइँ। थोड़े कालक बाद कोरा मे बैसि जाइत अछि।)

(धकेलैत) जो भाग, हमरा लग की कर' अयलेह?

(दोसर कात घूमि जाइत अछि। सखी ओही कात जाइत अछि।)

गे थेथरी कहै छियौ से नइँ सुनै छही?

(सखी लग मे चलि अबैत छै। शोभा धकेलि दैत छै। शारीरिक अवस्था मे परिवर्तन करैत अछि। सखी शोभाक कपड़ा मुँह सँ पकड़ि क' घिचैत अछि। चिबबैत रहैत अछि। शोभाक ध्यान जाइत छै।)

बापक किनल छिओ, चिबा जो।

(सखीक मुँह सँ कपड़ा छोड़बैत अछि। ओ जोर सँ पकड़ि क' अपना दिस घिचै छै।) किऐ घिचै छें। तोरा सँ कोनो मेल नइँ। कट्टीस भ' गेलौ से, बुझिले?

(सखी घीचि रहल छै, शोभा घिचाइत जा रहल अछि। बर्तन रखैवला जगह पर ल' जाइत अछि आ बर्तन टनटनाब' लगैत अछि।)

भानसक बेर भ' गेलै सैह ने, बुझल अछि।

(फेर बर्तन टनटनबैत अछि।)

भेलै तँ भेलै, हमरा नइँ खाएके अइ। तू जो ने, जत' जेबें तत'।

(बैसि रहैत अछि। सखी सेहो लग मे बैसि जाइ अछि।)

गे हेहरी। तू एत' किऐ बैसि गेलें?

(सखी भूख लगबाक संकेत करैत अछि।)

भूख लागल छौ तँ जो ने, खो, ग' ने, के रोकने छौ?

(स्थिति यथावत)

नइँ खेबें तँ नइँ खो। तइ सँ हमरा।

(दुनू एक दोसर केँ देखैत रहैत अछि।)

नइँ ने जेतै, नान्हि टा जिदाहि छै ई?

(शोभा उठैत अछि।)

हम नइँ खेबै तँ ईहो नइँ खेतै। मोन तँ से सनकल छल जे अपनो भूखले रहितियै आ एकरो रखितियै। अच्छा चल-चल। *(उठबैत)* चल ने...चल। चल ने।

(शोभा घर दिस जाइत अछि। भाँड़- बर्तन सरियबैत अछि। घरक काज मे लागि जाइत अछि। नजरि एकाएक सखी दिस जाइत छै। ओ ओहि ठाम बैसल अछि। ओ सखी दिस जाइत अछि।)

अँय गे, तू अइठाम एना किऐ बैसल छही? हमरा बात के दुख लागि गेलौ? नइँ ने? सैह तँ, हमरा सखी के हमरा बात के दुख केना हेतै?

(सखी दोसर कात घूमि जाइत अछि। सखी केँ पजिया क' सहलबैत।)

चल ने, उठ ने, देखही ने भूखे हमरा पेट मे बिलाइ कुदैए। तोरो तँ भूख लागले हेतौ?

(कुदकि क' जाइ अइ आ सखी केँ घास आनि क' दैए। सखी दोसर कात घूमि जाइ अइ।)

एत्ते खिसिया गेलही। तँ हमहूँ मनब' जनै छियै।

गीत

सखीक पुआ जकाँ फूलल-फूलल गाल
करै छें कमाल गे

सखी हमर छै बड़ तिलबिखनी
भग्गलकटनी, रुसनी-फुलनी
तू तँ बात-बात पर करै छे सबाल
करै छें कमाल गे

मानि जो गे मानि जो
हे गे सखी मानि जो
खाय ले' देबौ निक-निकूत सभ
हे गे सखी मानि जो

किछु ने कहबौ बात बुझै ने
नइँ बजबौ हम जोर सँ
जे तू कहबें सैह-सैह करबौ
सुनै बात तू गौर सँ

सप्पत छौ जे आब रुसबे
किछुओ हेतौ मुँह ने फेरबे
बात-बात पर नइँ करबें बबाल गे
बरु करै तू कमाल गे

(गीतक बादो सखीक अवस्था यथावत रहैत अछि।)

सखी तू एखनो धरि रुसले छें? एहन की क' देलियौ हम? कोन अपराध भ' गेलौ हमरा सँ। देख तू नइँ बजबें तँ हम...?

कह तँ सखी तोरा छोड़ि क' हमरा के अइ? तइयो तू....। एना तू रुसल रहबें तँ हमरा की हैत...?

एना तू रुसल रहले तँ हम मरि जेबौ। सुनि ले। हम मरि जेबौ।

(सखी कुदकि क' शोभा लग जाइत अछि। कुदैत-फनैत ओकरा देह पर चढ़ैत रहैत अछि। तखने बुटक ध्वनि सुनाइत छै। फेर किछु सैन्य भेषधारी समूह मंच पर अबैत अछि। मंचक चक्कर कटैत घरक मुँहथरि धरि जाइत अछि। शोभा केँ घेरि लैत अछि। ओ सभ किछु पुछैत रहै छै। शोभा नइँ बुझल सन शारीरिक भाषा प्रयोग करैत अछि। ओ सभ जहिना आयल रहैत अछि, तहिना चलि जाइत अछि। शोभाक पाछू मे नुकायल सखी बाहर अबैए। दुनू ओकरा सभ केँ जाइत देखैत रहैए। दुनू एक-दोसर के पजियौने। एक क्षणक बाद दुनू अलग होइत अछि। सखी कुदकिक' मंचक प्रस्थान दुआरि धरि जाइत अछि। शोभा देखैत अछि आ चिचियाइत अछि।)

सखी! ओम्हर किऐ जाइ छें। *(सखी ठमकि जाइत अछि।)* उम्हर किऐ गेलही तू? बूझल नइँ छौ। ओ सभ बाघ छलै बाघ। कनियो डर एकरा नइँ होइ छै।

की बुझि क' गेलही? मुँह सुन्नर देखि क' छोड़ि देतौ? मुँहझरकी! *(कने स्थिर होइत)* हमर तँ करेजे उनटि गेल। तू बिसरि किऐ जाइ छही? वैह सभ छलैए, जे कनेके पहिने गाम मे हुड़बीड़ो मचौने छलैए। पहिनहुँ वैह सभ आयल रहौ। तोरा माय के...। तोरा माय के...ल' गेलौ।

(शोभा कान' लगैत अछि। सखी लग मे आबिक' ओकरा आँखिक नोर पोछैत अछि आ अपनो हिचुकैत रहैत अछि।)

ओ सभ भुखायल अबै छै ने, भूख केहन होइ छै से तँ हमरो तोरा बुझले छौ। से ओकरो सभ केँ ओहने भुख लागल रहै छै। जे भेटल ताहि सँ ने पेट भरतै। से तोरा माय केँ अपन पेट भरबा वास्ते ल' गेलौ। *(सखी जोर-जोर सँ हिचुक' लगैत अछि।)* तोरा कोनो छोड़ि दितौ, ओ तँ हम आहटि पाबि क' तोरा नुका लेलियौ। *(फेर ध्यान भंग होइ छै)* सखी तू अहीठाम रह, हम देखने अबै छी। जाबति हम आबि ने जाइ तू टस्स सँ मस्स नइँ होइहें।

(शोभा दुआरि धरि जाइत अछि। किछु नमड़ि-नमड़ि क' देखबाक प्रयत्न करैत रहैत अछि।)

बुझाइए, ओ सभ चलि गेलौ। दंतरबा हाथी जकाँ धरती नँपैत अबै छै, आ धरती नँपैत चलि जाइ छै।

सखी गे, चलि गेलौ।

(दुनू एक-दोसर दिस बढ़ैत अछि। फेर शोभा ओसारा दिस बढ़ैत अछि आ ओसारा पर ओलरि जाइत अछि। सखी पैरक नीचा मे बैसि जाइत अछि। बाहर सँ आवाज अबैत अछि। सुनिक' दुनू डेराइत अछि। शोभा सखी केँ अपना कोरा मे नुका लैत अछि। रसे-रसे राति भ' जाइ छै। कखनो क' मेघ कड़कै छै आ बिजुरी चमकै छै। बाहर सँ युद्धक अवस्थाक ध्वनि आबि रहल छै। ओकरा दुनू पर अइ अवस्थाक गंभीर असरि देखाइ छै। अंततः डेरायल एक दोसर सँ लेपटाय जाइत अछि। धीरे-धीरे शान्त होइत छै। दुनू ओहीठाम ओलरि जाइत अछि। किछु कालक बाद भोरक प्रकाश। दुनू उठैत अछि। दूर चिड़ै चुनमुन्नीक आवाज सुनाइ दैत अछि। शोभा घैल सँ पानि निकालैत अछि आ कुरुड़ करैत अछि। सखी कुद-फान क' रहल अछि। शोभा बैसैत अछि। सखी कुदैत-कुदैत घर मे जाइत अछि आ शोभाक स्कूल बैग घिचिक' लबैत अछि आ शोभाक आगू मे राखि दैत अछि। फेर कुद' लगैत अछि। शोभा बैग देखैत अछि। एक क्षण देखैत रहैत अछि, जेना कोनो विगतक स्मरण मे डूबि गेल हुअय। आँखि नोराय जाइत छै। ओ बहुत कठिनता सँ नमड़ि क' झोड़ा लग तक खीचि क' लबैत अछि आ बड़ स्नेहक संग ओहि झोड़ा केँ देखैत रहैत अछि, फेर ओहि मे सँ किताब निकालैत अछि आ किताब केँ उनटबैत रहैत अछि। किताबक एक टा पन्ना पर जाक' अटकि जाइत अछि। पहिने रसे-रसे आ फेर किताबक कविताक पंक्ति थोड़े जोर सँ लय मे बाच' लगैत अछि। जखन ओ जोर-जोर सँ कविता बाचन करैत रहैत अछि तखने शोभाक उमेरक एक टा छौंड़ा प्रवेश करैत अछि। शुरू मे सामान्य रूपें आयल ओहि छौंड़ा मे शोभाक कविता वाचन करैत देखिक' प्रसन्नता होइत छै। ओ शोभाक पाछू मे जा क' ठाढ़ भ' जाइत अछि। सखी जे शोभाक कविता वाचन करैत देखिक' नाँचि रहल रहैछ से ओहि छौंड़ा केँ पाछू मे देखिक' शान्त होइत शोभा लग जाइत अछि आ ओकर कपड़ा खीचिक' ध्यान भंग करबाक प्रयत्न करैत अछि। शोभाक ध्यान भंग होइत छै आ ओ पाछू मुँहे तकैत अछि। ओहि छौड़ा केँ ठाढ़ देखिक' पहिने तँ आवेशित होइत अछि, आ फेर निराश। छौंड़ा दिस आगू बढ़ि रहल शोभा जतैक ततै रुकि जाइत अछि।)

छौंड़ा : शोभा, कते नीक कविता पढ़ै छलें तू।

(शोभा चुप)

पढ़ ने पढ़! तोहर ई स्वर सुन' ले' कते ने कते दिन भ' गेल छल।

(शोभा ओकरा देखैत रहैत अछि।)

बुझल छौ, एकोरत्ती नीक नइँ लगै छै स्कूल मे। तू जेनाइ छोड़ि देलही। गणेश, उमेश, महेश, रीनू, राखी आ रूपा सभ तोरे खोजैत रहै छौ। हम तँ खोजैत-खोजैत एत' धरि चलि अयलियौ। किऐ ने जाइ छही?

(शोभा ओसारा पर जाक' बैसि जाइत अछि। छौंड़ा ससरैत-ससरैत शोभाक लग मे अबैत अछि।)

हम अपने नइँ एलियौ अइ, कमल सर पठौलकौए। कहै छलै शोभा किऐ ने अबै छै स्कूल।

(शोभा तिक्ख नजरि सँ देखैत अछि छौंड़ा केँ।) बुझल अइ! सर केँ सेहो सभ बात बुझल छै। मने घर मे कते दिन धरि अपना केँ कैद केने रहत? सर केँ कहब छै। सैह तँ कत्ते दिन धरि एहि अवस्था मे रहबे तू? *(शोभा ओहि ठाम सँ ससरि क' सखी लग जाइत अछि आ सखी केँ पकड़ि क')*

शोभा : तू मतसुन्न किऐ भेल जाइ छें? चुपचाप बैसल रहबें, से नइँ हेतौ? इम्हर कुदत, ओम्हर नाँचत, दिन-दिन बेकहल भेल जाइए। बैसि चुपचाप। *(दुआरि के आगू मे राखि दैत अछि।)*

छौंड़ा : हम कहै छियौ...! हम कहै छियौ जे स्कूल जेनाइ नइँ छोड़। तोहर चिन्ता सर सभ केँ सेहो छै। हमरा सभ केँ सेहो नीक नइँ लगैए...तू रहै छलए तँ कते नीक लगै छलै। क्लास आ क्लास सँ बाहरो। अखन कथु नीक लगै छै! ककरो आँखि बंद क' क' चिन्हक लेल बाध्य केनाइ, चुपचाप बिट्टू काटि लेनाइ। कुदनाइ, नचँनाइ, गौनाइ ओ जाहि शोभा मे छलै, कत' छै ओ शोभा?

(शोभा कनडेरिए ओहि छौंड़ा दिस देखैत अछि। आ फेर अपना सखी दिस। सखी फेर ससरि क' दूर चलि गेल रहै छै। ओ सखी दिस बढ़ैत अछि। कने पहिने सँ खिसिआयल सन अछि।)

हम तोरे सँ पुछि रहल छियौ? *(सखी ध्यान नइँ द' आगू बढ़ैत रहैत अछि।)* बजै किऐ ने छें?

(शोभाक आगू मे आबिक' छौंड़ा ठाढ़ भ' जाइत अछि।) किऐ ने बजि रहल छें तू?

(शोभा छौंड़ा केँ देख' लगैत अछि। शोभा किछु कहबाक प्रयत्न करैत सन बुझाइत छै। किछु बाजि नइँ पबैत अछि। ठोर काँप' लगै छै। आँखि सँ नोर छिलकि जाइत छै। ओ पाछू घूमि क' आगू बढ़ैए। हाथ सँ किछु पकड़ने, मूड़ी गोंतने।)

शोभा तोहर ठोरक कँपकँपी आ नोरक तीव्रता सभ बात बुझा दै छै। मुदा तोरा दुखक गहींराइ नइँ नाँपि सकैए किओ। अथाह। ओ तँ जे भोगै छै से बुझै छै।

(शोभाक हिचकी सेहो सुनाइ देब' लागल छै।)

हम तोरा घाव केँ फोफनाह बनब' नइँ अयलियौ अइ। मुदा एक टा बात तोरा कहै पड़तौ, एहन अवस्था मे अपना केँ कत्ते दिन राख' चाहै छें तू।

(अस्वीकारक भाव मे तीव्रता सँ मूड़ी डोलबै अइ।)

ठीक छै। अही अवस्था मे हमसभ बहुतो केँ मरैत देखलियै। आ से, अपने सँ मरल होइ, कि मारल गेल होइ।

(शोभा मूड़ी उपर उठबैत अछि।)

ओहि मरल आदमी संगे ककरा-ककरा मरैत देखलहीक तू? चाहे कतबो प्रिय होइ। अप्पन।

(सखी नार-पुआरक पुतला लग जाइए आ ओकरा मुँह सँ नोच' लगैए।)

हम कहै छियौ जे स्कूल जाय-आब' लगबें, संगी-साथी सभ सँ भेंट हुअ' लगतौ। खेलकुद मे समय बीत' लगतौ, फेर हँसी-ठट्ठा, मजाक। बाँकी सभ बात बिसराइत चलि जेतौ।

(शोभा तेजी सँ छौंड़ा दिस घुमैत अछि। मुदा ओकर नजरि पुतला केँ नोंचि रहल सखी पर जाइत छै। ओ 'नइँ' कहिक' चिचियाइत दौगैत अछि, आ सखी केँ जोर सँ ठेलि दैत अछि। सखी बहुत दूर धरि धकिआइत चलि जाइत अछि। क्रोध सँ शोभाक आँखि लाल छै, आ शरीर काँपि रहल। ओ अनियंत्रित क्रोध मे अछि।)

शोभा : के छै ई? के छै ई? जकरा नोंचि-नोंचि क' तू खा रहल छिही? बाज ने? बकरी जाति ई की बुझ' जेतै।

(सखी आओर दुबकि जाइत अछि।)

गे, ई हमर बाप छै, बाप। जकरा सीना केँ गोली छेदलकै तँ एहिठाम ठेहुन मे गमछा बान्हि क' बैसल रहै। *(जे बजैत अछि ओ क' क' देखबैत)* हे एत', एना बैसल दुनू भैया के बकबाइद सुनैत रहै। सुनैत रहै खैनी लगबैत, उम्हर सँ गोली एलै आ...आ... बैसले-बैसले टेउर गेलै अहीठाम। टेउर गेलै।

(सखी पेटोटनि जकाँ देने ओम्हरे तकैत। छौड़ा जिज्ञासु जकाँ सुनैत मुदा हतप्रभ।)

आ ओ जे देखै छही, हमर माय छै। अपना मायक दूध तँ तू एको पनरहिया नइँ पिले, मुदा हम ओही मायक पेट सँ निकलि क' ओकरे दुध पी क' पोसायल छियै। वैह माय छिये ई। एकरा की भेलै से बुझल छौ?

(ओहिठाम सँ उठैत अछि आ सीधे घरक भीतर जाइत अछि। घर सँ निकलैत अछि तँ सीधे माय जकाँ।)

जा रे, नइँ छठि छै ने सुकराती, आ फटाफट फटक्का फोड़ने जाइ छै। *(शोभाक रूप मे)*

एत्ते बात खतमो नइँ भेल रहै कि....। गोली सनसनाइत अयलै आ...! *(सीना देखबैत)* आ अहीठाम लगलै।

(मायक रूप मे। गोली लगलाक बादक अवस्था। पीड़ा मे बिलबिलाइत धरती पर नाँचि क' खसैत अछि। फेर कनेकाल बाद शोभाक रूप मे उठैत अछि। रसे-रसे सखी दिस बढ़ैत अछि। सखी डेरायल सन अछि। जहिना-जहिना शोभा आगू बढ़ैत तहिना-तहिना सखी पाछू घुसकैत। सखीक लग मे जाक')

(हाथ सँ देखबैत) अहू कात आ ओहू कात। दुनू कात, दू टा भैया। एक टा कहै *(भैया जकाँ)* क्रांतिकारी बनै छें? तोहर क्रांति गोबरक माइन पर जनमल गोबरछत्ता छौ। पानिक बुन्न खसिते विलीन भ' जेतौ। ओ तँ धन्यमान हमरा जे अखन तक बाँचल छें तू। *(शोभाक रूप मे)* दोसर भैया गहुँमन जकाँ फुफकार छोड़' लागल रहै। आँखि लाल टपेस, मुँह लाह जकाँ बरकैत। *(दोसर भैयाक रूप मे)* पुरना सत्ता के दलाली करै छह? ओ सभ जोंक छै, जोंक। जनताक शोणित चूस'वला जोंक। ई जनताक युद्ध छै, एकर बाधक नइँ बन'। धन्न मान' हमरा कारण अखन तक सफाया नइँ भेल छह। *(शोभाक रूप मे)* तखने तड़ातड़ दुनू कात सँ गोली चल' लगलै। दुनूक देह मे कए ने कए टा गोली घुसिया गेलै। *(गोली लागल जकाँ छटपटाइत)* दुनू खसलै धरती पर—धम्म।

(शोभा खसैत अछि। फेर धीरे-धीरे अपना केँ नियंत्रित करैत, उठैत अछि आ मंचक प्रवेश द्वार पर जाइत अछि। ओहिठाम सँ योद्धाक समूह आ चालढाल मे मंचक चक्कर मारैत कात मे जाइत अछि। ओहिठाम बान्हल अदृश्य बकरी केँ संकेतात्मक रूप सँ देखैत, ओकरा उठबैत आ फेर बाहर निकलि जाइत अछि। सखी आ छौंड़ा शोभे केँ देखि रहल अछि। शोभा पुनः मंच पर प्रवेश करैत अछि तँ ओकर आँखि डबडबायल छै। ओ सीधे सखी लग जाइत अछि।)

अहीठाम सँ उठाक' तोरा माय केँ ल' गेलौ। ओ हमरो माय रहै। पुछ ने किऐ? अपना मायक दुध सँ हींक नइँ भरै तँ तोरे मायक दूध गाड़िक' पियाबै हमरा।

ओहू बुढ़िया केँ नइँ छोड़लकै। योद्धा केँ पोष्टिक खोराकी चाही ने। से महान युद्धक शहीद भ' गेलौ तोहर माय। हम तँ अपना माय-

बापक सालीक बनाक' रखने छी, मुदा तोरा मायक सालीक वैह योद्धा सभ बनउतौ आ ताहि सालिक केँ तू नोंचि-नोंचि क' चिबा रहल छलें। पीत्त लहरत कि नइँ से कह?

(सखी केँ छुबैत, सहलबैत)

चोट लागि गेलौ? बड़ी जोड़ सँ धकेलि देलियौए ने। हम बुझै छियै तोहर दोष नइँ छौ। ई सभ भेलै तँ तू पन्द्रहे दिनक रहे। तू बाहर खेलैत रहय आ हम स्कूल गेल रहियै। तँ बाँचल छें हम आ तू। दुनू सखी। कहाँदन गोली जे अबै ने से ऊपर आकाश छोड़िक' चारु कात सँ।

(कहैत-कहैत उठि जाइत अछि।)

धाँय...धाँय...धाँय...धाँय... !

(गोलीक तीव्र आवाज अयनाइ शुरू भ' जाइ छै। आ चारू भर ताहि गति मे नाँचि रहल अछि। नँचैत-नँचैत धड़ाम सँ खसैत अछि। बेहोश सन अवस्था छै। सखी आ छौंड़ा शोभा लग धड़फड़ाइत जाइत अछि। सखी शरीर सँ सटि जाइत अछि। ओकरा सहला रहल अछि, उठयबाक प्रयत्न क' रहल अछि। ओ निश्चेष्ट अछि।)

छौंड़ा : नइँ शोभा, नइँ बूझल छल हमरा। हम तँ यैह बुझलियै जे दूतरफा मुठभेड़ मे तोहर परिवारक लोक मारल गेलौ। एहि देशक सैकड़ो परिवारक लोक एहिना मारल गेलै। किछु बाँचि गेलै से संकटक बादो बाँचक प्रयत्न क' रहल छै। समय घाव केँ चोखा रहल छै, मुदा...मुदा...तोहर अवस्था ताहि सँ भिन्न छौ। तू तँ घाव केँ हरियाक राख' चाहै छें। त्रासदीक ओहि क्षण केँ जतन सँ राख' चाहै छें तू। एहि अवस्था मे तोरा जीबाक हक छौ। *(लम्बा साँस लैत)* हम जाइ छियौ। सर केँ कहि देबै ओ नइँ आओत। कहियो नइँ आबि सकत आब।

(छौंड़ा उठैत अछि आ सरसराइत निकलि जाइत अछि। सखी एखनो शोभा केँ उठेबाक प्रयत्न क' रहल अछि। किछु क्षणक बाद बुटक ध्वनी सुनाइ दैत छै। सखी ओहि आवाज केँ अकानैत अछि। आवाज रसे-रसे लग आबि रहल छै। सखी विचलित होइत अछि। उठेबाक प्रयास मे आओर तीव्रता आबि जाइ छै। आवाज जखन एकदम लग आबि जाइ छै, तँ शोभाक चेतना जेना अबैक ओ फुर्रफुराक' उठैत अछि। आवाज केँ गमैत अछि आ फेर भगैत मंचक प्रवेशद्वार धरि जाइत अछि। किछु देखबाक प्रयत्न क' रहल अछि। ओहिठाम सँ भगैत अबैत अछि आ सखी केँ घिंचने घर तक ल' जाइत अछि। शारीरिक क्रिया सँ सखी केँ घरक भीतर मे जेबाक लेल कहैत रहै छै। आ सखी ओकरो जेबाक हेतु जिद्द ध' लै छै। खूब झंझ-मंझक बाद सखी केँ घर मे ठेलि दै छै। आ अपने आगू बढ़' चाहैए कि सखी ओकर कपड़ा मुह सँ पकड़ि लैत छै। ओ छोड़बैए आ आगू बढ़ैए तखने योद्धाक प्रवेश। ओ मंचक चक्कर कटैत घरक मुँहथरि धरि अबैत अछि। शोभा केँ चारू कात सँ घेरि लैत अछि आ ओकरा शारीरिक क्रियाक माध्यम सँ किछु पूछि रहल रहैछ। ओ कोनो मे सकारात्मक आ कोनो मे नाकारात्मक संकेत दैत रहैत अछि। शोभाक जवाब सँ योद्धा कखनो क' असमंजस मे पड़ैत रहैत अछि। आ अपना मे बात करैत रहैत अछि। अन्त मे शोभा केँ ल' जाय लगैत अछि। ओ उनटि-उनटि क' घर दिस देखैए आ शव्दविहीन चिचिएनाइक मुखाकृति भ' गेल छै। समूह बलपूर्वक ल' जाइ छै।)

(मंच खाली। सभ किछु शान्त। सखी घरक छेकबार केँ ठेलैत बाहर निकलैत अछि। चारू दिशा मे शोभा केँ खोजैत अछि। मंचक प्रस्थान द्वार पर जा क' किछु देखबाक प्रयत्न करैत अछि। फेर हताश भ' क' मंचक मध्य मे अबैत अछि।)

सखी : कत' गेलै हमर सखी? बघबा सभ आयल छलै, वैह तँ नइँ उठा क' ल' गेलै। आब हम कोना रहबै? आ रह' देतै के?

हम पन्द्रह दिनक रहियै तँ माय केँ उठा क' ल' गेलै। ओहि दिनक खूनक होरी मे हमरा सखी के संसार खतम भ' गेलै। हमरा पोसलकै-पाललकै बढ़ौलकै आ अपन सखी बनौलकै। ओकर हम आ हमर ओ। आइ जिनाइक संघर्षक खीस्सा खतम।

हमरा की पता ओकर अपराध की छै? ककर की बिगाड़ने छलै जकर एतेक निर्मम सजा। ओ अपना दुखक संग जीबाक प्रयत्न मात्र क' रहल छलै। टभकैत अपना भीतरक घाव केँ ककरो देखइओ नइँ देलकै ओ।

पुतरी जकाँ जे फुदकैत रहितै, नँचैत रहितै बिर्रो जकाँ से...विराम लागि गेलै। निर्जीव काठक मूर्ति। ओ अपन अनंत पीड़ा सँ कुहरै छलै, चिचियाइ छलै जोर-जोर सँ, मुदा आवाजविहीन। ओहि आवाज केँ दाब'क लेल बाघक हुँज किऐ चाही? किऐ ओ बाघ झपट्टा मारलकै?

आब ओकरा बिना हम कोना रहबै? आ के रह' देतै? कहू ने?

हमरा तँ होइए ओ अखने औतै आ कहतै—झात! आ हम चौंकबै जोर सँ। रुसबाक बहन्ना करबै तँ ओ कहतै जे डेराइ छें कि नइँ से जँचलियौए।

आब हमर सखी नइँ अउतै।

(बुटक आवाज धीरे-धीरे आबि रहल छै, फेर बढ़ैत जाइ छै। सखी गौर सँ आवाज सुनि रहल अछि।)

हमरो पार आबि गेलै।

(फेर आवाज अत्यंत तीव्र भ' जाइत अछि। सखी अपना शरीर केँ समेटि लैत अछि। जेना बलिक लेल स्वयं केँ तैयार क' देने होइक। तखने स्वर अबै छै।)

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्ति पृथिवी
शान्तिरायः शान्तिरोषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शन्तिः विश्वेदेवाः शान्तिः
ब्रम्हशान्तिः सर्व गवं शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि

(मंच पर धीरे-धीरे अन्हार पसरि जाइ छै।)



कवि-कथाकार-नाटककार रमेश रंजन संप्रति काठमांडू (नेपाल) में रहैत छथि।
ई-मेल : **ranjanramesh@yahoo.com**
मोबाइल : +977-9854024143

एन.आर.आई.

शुभेन्दु शेखर

डॉक्टर विभूतिनाथ झा उर्फ डाक्टर बी.एन. झा जखन ऑपरेशन थियेटर सँ बाहर निकलला तँ बाहरक ठंडाक अनुभव भेलनि आ जड़ाउन लगला सँ ईहो अनुभव भेलनि जे ओ अपन ओवरकोट अपन चैम्बर मे कुर्सी पर लटकले छोड़ि आयल छथि तँ ओ उल्टे पयर वापस घुरला। ओवरकोट पहिरि ओ फेर सँ बाहर अयला आ बाहरक तिक्त ठंडाक अनुभव सँ अनचोके मे कोटक जेबी मे हाथ घुसा आदतवश सिगरेटक पैकेट ताक' लगलाह कि झक्क द' मोन पड़लनि जे दू दिन पहिनहि सँ सिगरेट छोड़बाक जे संकल्प लेने छथि तँ सिगरेटक पैकेट जेबी मे नइँ छनि। मोन एक बेर फेर हुलकेलकनि हिनका ओहि दिस आ मोनहि-मोन सोचला—ओह एक टा ल' लेला सँ किछु नइँ हेतै, ओनाहितो एतेक ठंडा मे एक टा तँ बनिते छै। तँ ओ सिगरेटक दोकान दिस बढ़ला मुदा फेर सम्हरला आ मोन मे अयलनि जे यैह लुतुक्क केँ तँ ठीक करबाक छै! नइँ तँ मोन कोनो ने कोनो लाथ तँ ताकिये लेत। एखन ठंडा छै तँ, कखनो मोन दुखी अछि तँ आर नइँ किछु तँ मोन एखन बड्ड-खुशी अछि तही लेल। आब ओ सिगरेटक दोकान लग सँ घूरि आयल छला आ आब घरमुँहा भेला। प्रिंस विलियम रोड पर ओ अमेरिकाक नामी हार्ट रिसर्च सेंटर आओर हॉस्पीटल छै जाहि मे विभूतिनाथ चिकित्सक छथि आ संगहि हृदय रोग पर शोध सेहो करैत छथि। भारतीय मूलक लोक मे अमेरिका मे ओ बहुत जगजियार लोक मे सँ अबैत छथि। हिनकर कतेको शोधपत्र छपि चुकल छनि आ हृदय रोग विशेषज्ञक रूप मे सेहो अपन धाख जमौने छथि। हिनकर मरीजक सूची मे अमेरिकाक पूर्व रक्षामंत्री डोनाल्ड-रम्सफिल्ड सँ ल'क' अनेक बुद्धिजीवी आ पूँजीपति सब अबैत छथि। राष्ट्रपति भवन तक हिनकर धाख जमल छनि। आइ ओ अपन गाड़ी केँ घरे पर छोड़ि देने रहथिन तँ पयरे घरमुँहा भेल छला। डाक्टर सभक आवास अस्पताल सँ करीब आधा किलोमीटर पर छलै तँ पैदलो गेनाइ कोनो समस्या नइँ छलै। अपन कोटक जेबी मे हाथ देने डाक्टर साहेब आवास दिस जा रहल छला। तखने कनेके दूर गेला पर देखलनि, एक टा बड़का ट्रक केँ रुकल आ ओकर दोग मे ड्राइवर आ खलासी केँ तगार मे मोटका लकड़ी जराक' एतुका भाषा मे बोनफायर क' घूर तपैत। ई दृश्य देखिते हुनका अपन गामक जाड़ मोन पड़लनि आ संगहि मोन पड़लनि पुआर जड़ाक' घूर तापब आ एकर बाद ओ अपन अतीत मे हेराइत चलि गेला।

डाक्टर विभूतिनाथ ओहि समय डाक्टर साहेब नइँ छला। ओ विभूति किंवा घरक लोकक लेल विभू छलाह। अपन माय-बापक जेठ संतान विभूति केँ बाबा-बाबी आ नाना-नानी सभक स्नेह भेटलनि आ सेहो उझीलिक'। एम्हर सँ पहिल पौत्र आ ओम्हर सँ पहिल दोभित्र। बेसी समय मात्रिक सँ पैत्रिक आ पैत्रिक सँ मात्रिके मे बीतनि आ दुनू ठाम छूटल साँढ़ रहथि। कहल गेल छै जे बाबा-बाबी आ नाना-नानी सँ खराब गार्जियन आर कोनो नइँ तँ दुलारे बहसल चलि गेला। कोनो दिन एहेन नइँ जहिया कोनो उपराग नइँ आयल होनि। हिनकर पिताजी किछु कसबाक प्रयास केलनि मुदा सब व्यर्थ। बाबा-बाबी हिनकर ढाल बनल तैयार रहथिन। हिनकर पिता गदाधर बाबू बेसी पढ़ल-लिखल नइँ, मुदा ठढ़ियल गृहस्थ आ बहुत लंबा समय गामक मुखिया रहला तँ गामे नइँ परोपट्टा मे नामी छला आ हुनकर गिनती जमीन-जथा वला लोक मे होनि। जकर पिता परोपट्टा मे नामी होइ ओकरा लेल किछु अतिरिक्त दायित्व आ नैतिकता जन्महि सँ कपार मे बथायल अबैत छै। देखिते-देखैत ई हाई स्कूल मे पहुँचि गेला मुदा हिनकर रंग-ढंग वैह। जखन कखनो कोनो विषय मे नम्बर कम अबनि तँ एक टा गप्प पिताजी सँ सुनहि पड़नि जे—तोहर वंश फोचाइ झा आ बमभोला मिसरक छिय' एकरा घिनाब' जुनि। फोचाइ झा तोहर वृद्ध प्रपितामह आ बमभोला मिसर तोहर मतामह छथुन, ओ दुनू गोटे षटशास्त्री छलाह। पहिने तँ बहुतो दिन तक विभूति केँ भाँज नइँ लगनि जे ई षटशास्त्री केहेन प्राणी होइत छै, मुदा जखन भाँज लगलनि तँ एक दिन ई पिताजी केँ पूछि देलथिन जे—जँ हमर परबाबा आ हमर नाना एतेक पैघ विद्वान छला तँ मामा किंवा माय किंवा अहाँ विद्वान कथी लेल नइँ भेलौं। हिनकर ई गप्प सुनलाक बाद तँ गदाधर बाबू केँ लगलनि जे कियो कबाऊछ हुनका सर्वांग मे लगा देने होनि। बस फेर की छलै बगले मे चेरा के ढेरी लगले छलै! तकर उपयोग, गदाधर बाबू केलनि आ नतीजा, विभूतिनाथक पेंट एक्सीडेंट। ओहि दिन हिनका पहिल बेर बाबा-बाबीक मुइलाक अफसोस भेलनि। बातो जायज! आखिर विद्वान हेबाक ई महती दायित्व जे मातृपक्ष आ पितृपक्ष सँ पछिला खाढ़ीक लोक नइँ उठा सकल से विभूतिनाथ अपन छोट-छिन कनहा पर कोना उठबितथि। विभूतिनाथक पिताजी आ माय दुनू गोटेक ई ईच्छा छलनि जे ओ डाक्टर बनथि आ हुनका सँ छोट माझिल भाय सुधीर इंजीनियर आ सब सँ छोट ललन, मायक कोरपच्छू जँ नहियो किछु करता तँ एतेक खेत-पथार केँ डेबनिहार आर के होयत। विभूतिनाथ तँ कोनोना पटरी पर अयला आ दरभंगा मेडिकल कॉलेज सँ डाक्टरीक पढ़ाइ क' डाक्टरो बनला मुदा माझिल सुधीरक लेल पढ़ाइ-लिखाइक बाट अनभुआरे रहलनि। पढ़ाइ-लिखाइ सँ एक लग्गा दूरे रह'वला सुधीर घीच-तीर क' कहुना मैट्रिक पास केलनि आ आगू के अध्ययन केँ सोझे नमस्कार केलनि आ बदला मे गामक चौक-चौराहा पर अपन साम्राज्यक विस्तार मे लागि गेला। सब सँ छोट ललनक कथे कोन! ओ कोरपच्छू के कोरपच्छूए रहला आ दू बेर मैट्रिकक परीक्षा पास करबाक असफल प्रयासक बाद मध्यमा पास क' सुधीरक पदचिह्नक अनुसरण करैत आगूक अध्ययन पर पूर्ण विराम लगौलनि। कहलो गेल छै—जकर जेठकी छुलाहि तकर छोटकी भाँड़े लागल खाइ। ई सब स्थिति देख हिनकर पिता गदाधर बाबूक एकमात्र आशाक

केन्द्र विभूतिए भ' गेलखिन तेँ हिनकर डाक्टरीक पढ़ाइ लेल अपन सब किछु उपछि देब' लेल तैयार रहथिन। एत' तक जे जमीनो भरना लगौलनि।

डाक्टरीक आगूक पढ़ाइ एम.एस. करबाक लेल विभूतिनाथ केँ वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटीक फेलोशिप भेटलनि आ ओ अमेरिका चल अयलाह। अमेरिका मे हिनकर जीवन मे अयलखिन बारबारा। बारबारा जर्मन मूलक अमेरिकन छलीह आ ओहो विभूतिनाथक संग शल्य चिकित्सा मे स्नातकोत्तर क' रहल छली। शुरू-शुरू मे विभूतिनाथ अपना केँ एकसर बुझैत छलाह। कारण जे अपन क्लासक दस टा विद्यार्थी मे ओ भारतीय तँ दूरक गप्प छै, एकमात्र एशियन छलाह। धीरे-धीरे बारबाराक संग हिनकर निकटता बढ़ैत गेलनि आ दुनू गोटे एक्के संग जीबाक निर्णय लेलनि। बारबारा केँ भारतीय संस्कृति सेहो बहुत पसिन छलनि आ ओ कतेको बेरे भारत भ्रमण पर आयल छलीह। जखन विभूतिनाथ घर पर चिट्ठी लिखिक' विवाहक अनुमति मँगलनि तँ जवाब मे पिताक लिखल एक टा संक्षिप्त पत्र भेटलनि जाहि मे घिना देबाक आरोपक संग संपूर्ण रूप सँ संबंध विच्छेदक घोषणा छलै। पिताक लिखल ओहि पत्रक एक-एक पाँती हिनका लेल कोनो बज्राघात सँ कम नइँ छलनि। ओहि मे लिखल छलै जे—चूँकि अहाँ केँ अपन बेटा कहैत सेहो लाज होइत अछि तेँ हमरा सभक लेल अहाँ मरि चुकल छी आ हमर सब टा संपत्ति सँ बेदखल छी। अहाँ लेल नीक यैह होयत जे अपन कलंकित मुँह हमरा सब केँ नइँ देखाबी आ चूँकि जेठ बेटा हेबाक संपूर्ण अधिकार सँ बेदखल छी तेँ अहाँ हमर दुनू बेकतीक श्राद्ध करबाक सेहो अधिकारी नइँ छी।

ओही पत्रक पछुलका पृष्ठ मे ललनक हाथ सँ लिखल मायक पत्र सेहो छलनि जे पति आ पुत्रक बीच मे फँसल छलीह, सैंयो नीके बेटबो नीके किरिया ककर खाउ। संबंध विच्छेदक वैह वाक्य हुनकर पतिपरायणताक परिचय दैत आ अंत मे अपन ध्यान रखबाक ताकीद सेहो। एकरा बाद बहुत दिन तक हुनका गाम सँ कोनो तरहक समाचार किंवा चिट्ठी-पत्री नइँ भेटलनि। बहुत दिनका बाद माँझिल सुधीरक पत्र सँ ई भाँज चललनि जे हुनकर विवाह भ' गेलनि आ ओ गामे मे कोनो मित्रक संग ठीकेदारीक धंधा कर' चाहैत छथि, ताहि लेल किछु पूँजीक खगता छनि। संगहि माय-बापक बीमारी आ दवाइ-दारू पर खर्च सेहो छनि। तकरा लेल सेहो कैंचाक आवश्यकताक मादे लिखल छलै। डाक्टर साहेब अविलम्ब पाइ पठा देलखिन आ सुधीर केँ विश्वास मे लैत ओकर बाद लगातार पाइ पठौनाइ जारी रखलनि।

जखन डाक्टर विभूतिनाथ शल्य चिकित्सा मे स्नातकोत्तर क' लेलाह तकरा बाद हृदयरोगक प्रति अपन अभिरुचिक कारण ओहि मे विशेषज्ञता हासिल कयलाह आ तकरा बाद ओ बारबाराक संग परिणय सूत्र मे बन्हि गेला। एतेक समय लेबाक मादे हुनक मोनक दोग मे ई सोच छलनि जे किनसिआइत घरक लोकक मोन पिघलि जाइ। मुदा घरक लोक तँ टस सँ मस नइँ भेलखिन। नान्हिए टा सँ तँ नइँ मुदा जहिया सँ ज्ञान भेलनि तहिए सँ हिनकर इच्छा रहलनि जे किछु बनी आ कोनो माध्यमे देश सेवा करी। देश कोसक मोह कतेको बेर मोन मे हुलकी दनि आ यैह देशक मोह हिनका एक बेर देश वापसो आनलक। गाम जेबा पर प्रतिबंध लागल छलनि तेँ दिल्लीए मे अपन एक टा मित्र ओत' टिकला आ कतेको ठाम प्रयास केलनि मुदा किछु बात नइँ बनलनि। हिनकर अभिरुचि चिकित्सा विज्ञान मे अनुसंधानक तरफ बेसी छलनि। मुदा अपन देशक खिस्से फराक। जखन एखनो डाक्टरीक पढ़ाइक माने होइत छै कोनो पैघ अस्पताल किंवा नर्सिंग होम मे नोकरी करब आ अपन निजी क्लीनिक खोलि पाइ कमेबाक रंग-बिरंगक ब्योंत करब। आब तँ गिनल-गूथल चिकित्सक-अनुसंधानक किछु केन्द्र अछियो मुदा ताहि समय मे तँ आरो अरियादुर्भिक्ष सन छलै आ जे किछु छलहियो ताहू मे मारितेरास समस्या! तेँई दू-तीन मासक बाद पुनर्मुषको भव: आ अमेरिका घूरि अयला। आर करितथि की? गाम जा नइँ सकैत छला आ बारबाराक पठाओल पाइ पर कतेक दिन।

तकरा बादो आजुक दिन कोनो पहिल दिन नइँ छलै जहिया हुनका गाम मोन पड़लनि। सुधीरक पत्र यदा-कदा अबिते रहनि। खासक' जखन पाइक खगता होनि तखन तँ अबस्से। सुधीरेक पत्र सँ भाँज लगलनि जे हुनकर पठाओल पाइ सँ ओ घरक आबा-काबा बदलि देलखिन, दक्षिणबरिया फूसक घर पक्काक भ' गेलै आ पूबरिया खपड़ाक घर के बदला मे सेहो कोठा पिटा गेल। सुधीर लिखने छला जे—भैया गामक लोक सब तँ अहाँक जय-जयकार करैत अछि जे देखियौ माय-बाप डाक्टर साहेब केँ जरूर बिसारि देलखिन, मुदा डाक्टर साहेब नइँ बिसरलखिन मुदा, कतबो बुझेला-सुझेला सँ माय-बाबूजी तँ नाक पर माछिए नइँ बैस' दैत छथि। अहाँक नाम सुनिते देरी बौक भ' जाइत छथि। एकरा बाद चिट्ठीक अंत मे सुधीरक धंधा-पानि नइँ चलैत छनि, तकर कानब-खिजब लिखल छलै आ तेँ दिल्ली जाय चाहैत छथि आ ताहि सँ पहिने घराड़ीक चारूकात छहरदेबाली देबाक छै तकरा लेल कैंचा पठेबाक आग्रह सेहो लिखल छलै। डाक्टर साहेब कहियो पाइ पठेबा मे कोनो तरहक कृपणता नइँ केलखिन, से चाहे घरक निमित्त होइ किंवा दिल्ली मे सुधीर केँ अपन प्रोपर्टी डिलिंगक धंधा बैसेबा निमित्त। आ एकरा लेल हिनका बारबाराक दिस सँ सेहो कहियो कोनो रोक-टोक नइँ भेलनि। कालक्रम मे सुधीरेक लिखल एक टा पत्र मे पिता गदाधर बाबूक मृत्युक खबरि, सेहो हुनकर मृत्युक एक मास बाद लिखल गेल छलै। कारण सुधीर स्पष्ट केने छला जे— बाबू केँ मरै काल तक इच्छा छलनि जे अहाँ हुनका सोझा नइँ अबियनि। संगहि मायक जिद सेहो जे अहाँ केँ खबरि नइँ कयल जाय। बाबू तँ मरै बेर तक बजैत रहला जे विभूति हमर श्राद्ध नइँ करता आ ने हुनका हमर मुइला उपरांत खबरि जेतनि। एकरा लेल सुधीरक तरफ सँ क्षमा-प्रार्थना सेहो लिखल छलै। डाक्टर साहेब दुखी भेला आ छोट भाइक भ्रातृप्रेम पर गदगद सेहो। एहने स्थिति किछु दिनुका बाद मायक मृत्यु पर सेहो भेलनि आ एहि बेर विभूतिनाथ बहुत दुखी भ' सुधीर के लिखबो केलनि जे—बाबू तँ पहिने चलि गेला आ आब माय सेहो, आबो तँ खबरि कयले जा सकैत छलै। मुदा जवाब मे सुधीर माय-बाबूक इच्छाक प्रति अपन वचनबद्धताक विवशता लिखलखिन।

किछु दिनका बाद भारत मे सेहो मोबाइल क्रांति भेलै आ तकर परिणामस्वरूप आब हुनका रहरहाँ सुधीर सँ गप्प सेहो होनि। एक बेर ओ सुधीर सँ आग्रह केलखिन जे गाम मे ललन केँ सेहो एक टा मोबाइल कीन क' द' दियौन जे हुनको सँ संपर्क मे रही मुदा सुधीरक जवाब सँ हुनका ललनक स्थितिक पता लगलनि जे हुनके टा नइँ ककरो व्यथित क' देबा जोग छलै। हुनकर स्थिति सुनला बाद डाक्टर साहेब केँ गामक लेल जेहो बचल-खुचल मोह शेष रहनि, जे गाम दिस हिनका समय-समय घीचनि, सेहो खतम भ' गेलनि। सुधीर कहने छलखिन जे ललन मायक दुलार मे तँ पहिनहि बहसल छला, मायक स्वभाव होइत छै कनी अपन कमजोर बच्चा केँ सब

टा गलती पर आँखि मूनि लेब सैह हुनको संग भेलनि। हुनकर विवाह कराओल गेल ई बूझि जे विवाहक बाद अपने सुधरि जेता मुदा हुनकर विवाहो जे भेल से कौंके रिटर्न सँ। घरवाली बताहि ताहि सँ ललन बकलेल सँ विक्षिप्त भ' गेला। कहुना बड्ड इलाजक बाद आब सामान्य छथि। सेहो दबाइ बीच-बीच मे छोड़ि दैत छथि तँ फेर वैह हाल भ' जाइत छनि। खेतक उपजा-बाड़ी सँ कहुना गुजर होइत छनि। सुधीर सपरिवार दिल्लीए मे छथि आ चूँकि हुनका गामक उपजा बाड़ी सँ मतलब नइँ छनि तँ जतेक उपजा बाड़ी छै तकर उपयोग एक तरहें ललने करैत छथि। सुधीरक कथनानुसार तँ ललन केँ बड्ड बेसी आर्थिक दिकदारी नइँ छनि। तखन तँ बड्ड खुशफैल मे सेहो नइँ छथि। एतेक दिन तक मात्र अपन वीसाक अवधि बढ़वा क' वर्क परमिट पर डाक्टर साहेब अमेरिका मे रहि रहल छला, अही आस मे जे किनसियाइत भारत लौटबाक अवसर भेट जानि। मुदा आब गाम मे तँ हिनका लेल किछु बचल नइँ छलनि, माय-बाप तँ नहिए छलखिन आ एक टा छोट भाय सेहो अर्द्धपागले तेँ जेता तँ जेता ककरा लग। गाम जेबाक जे सुनगल आगि निरंतर हुनका भीतर छलनि तकरा पर जेना कतेको परत छाउर पड़ि गेलै आ तँ अमेरिकाक नागरिकताक लेल हारिक' आवेदन द' देलखिन। बारबारा सँ विवाहक कारणे आ चिकित्सक आ चिकित्सा विज्ञानक शोध मे ख्यातिक कारणे हिनका नागरिकता भेट' मे कोनो तरद्दुत नइँ भेलनि।

सुधीरक फोन रहरहाँ अबनि, पाइक बेगरता होनि तखन तँ अबस्से। कखनो काल सुधीरे मार्फत ललन केँ सेहो पाइ डाक्टर साहेब स्वेच्छा सँ पठा देथिन मुदा एक बेर जखन सुधीर डाक्टर साहेबक पढ़ाइ लेल पिताजी द्वारा भरना लगायल जमीन केँ छोड़ेबाक लेल पाइक माँग केलखिन तँ पहिल बेर बारबारा डाक्टर साहेब केँ टोकने छलखिन—योर पैरेन्टस, आर नो मोर नाउ देन व्हाय यू आर गीविंग मनी टू सुधीर, आई थिंक यू आर मेकिंग देम डिपेंडेंट एण्ड ए पारासाइट। डाक्टर साहेब उतारा देने रहथिन जे—आई हैव डन नथिंग टू माई फैमिली एण्ड माई सोसाइटी सो दिस इज ऑनली वे आई कैन डू समथिंग फॉर देम। बारबारा हुनकर जवाब सँ कनी काल चुप भ' गेली आ फेर बजली—ओके, बट नॉट यूज द वर्ड 'माई'। फॉर ए फैमिली माई वर्ड इज डेंजरस एण्ड एज योर बेटरहॉफ दिस इज ऑवर फैमिली नोट ऑनली योर्स। इफ बाई हार्ट यू आर एन इंडियन, सो आई एम माई लव। डाक्टर साहेब अपलक बारबारा केँ देखैत रहि गेला जेना ई स्त्री हिनका लेल अनचिन्हार होनि। पारिवारिक मूल्यक ई भावना हुनका जनैत एखन तक मात्र भारतीये परिवारक स्त्री मे देखल जाइत छै मुदा हुनकर भ्रम एक तरहें टूटल छलनि।

पयरे चलैत-चलैत डाक्टर साहेब आब डेरा वापस आबि चुकल छला। संगहि अतीत सँ वर्तमान मे सेहो। मुदा गामक मोह जेना एक बेर फेर भसिया लेने छलनि हिनका। आगि पर पड़ल छाउर जेना उड़ि गेल छलै आइ आ ओकर त'र मे त'रे-त'र सुनगल आगि जेना धधकि उठल छलै। डाक्टर साहेब देखलनि डेरा मे ताला लागल। एकर मतलब जे बारबारा भोरे जे अस्पताल गेल छली से ताधरि वापस नइँ घूरल छली। डाक्टर साहेब कोटक जेबी सँ चाभी निकालि ताला खोलि केबाड़ खोलबाक प्रयास केलनि मुदा ओ नइँ खुजनि तँ नीचा ध्यान गेलनि जे भोर मे अखबार वला केबाड़ी दने जे अखबार घुसौने छलै सैह अटकल छलै। ओ पहिने अखबार बाहर घिचलनि आ फेर केबाड़ी ठेलि भीतर घुसला। भीतर घुसलाक बाद केबाड़ केँ ओहिना खुजले छोड़ि डाइनिंग रूम मे सोफा पर ओलड़ि गेला। हुनका बाहर सँ अबैत ठंडा हवा नीक लागि रहल छलनि आ किनसियाइत ओ गाम केँ आर मोन पाड़' चाहैत छला।

कनीए कालक बाद बारबारा जखन घुरली तँ घरक केबाड़ ओहिना खुजले देखि पहिने तँ हुनकर करेजा धक द' रहि गेलनि मुदा जखन भीतर घुसली आ डाक्टर साहेब केँ अन्हारे मे सामने सोफा पर पसरल देखली तँ एक तरफ सँ मोन कनी आश्वस्त भेलनि मुदा दोसर तरफ सँ चिंतित सेहो। ओ सीधे डाक्टर साहेब ल'ग बैस गेली आ हुनकर माथ पर हाथ फेरैत पुछलखिन—ह्वाट हैपेन्ड? डाक्टर साहेब एक टा संक्षिप्त उतारा देलखिन, नथिंग। ई जनितो जे एतेक दिनक संग के बाद ओ किछुओ क'क' बारबारा सँ किछु नुका नइँ सकैत छथि। बारबारा फेर पुछलखिन—आर यू ओके? आ जवाब मे डाक्टर साहेब मात्र बसहा जेना मूड़ी डोला देलखिन। बारबारा फेर कहलखिन—यू नो यू कैन नॉट हाइड एनीथिंग फ्रॉम मी सो बी कैनडिड। डाक्टर साहेब उठिक' बैस गेला आ कनी काल चुप्प रहलाक बाद कहलखिन—एक्चुअली आई एम रिमेंमबरिंग माइ विलेज बैडली सो आई वान्ट टू गो देयर फॉर एवर। बारबारा पुछलखिन—एण्ड ह्वाट एबाउट मी? डाक्टर साहेब उतारा देलखिन, ''दैट इज द एक्चुअल मैटर फॉर ह्विच आई एम वरीड। यू हैड नेवर बीन इन इंडिया सो लौंग एण्ड इनफैक्ट यू आर एन अमेरिकन बाई बॉर्न एण्ड बाई हार्ट टू। बट वी कैन गो एण्ड सरवाइव देयर, आफ्टरऑल आई वान्ट टू डाई ऑन माई स्वाइल। आई नो आई एम एन अमेरिकन सीटीजन नाऊ, बट आई एम स्टिल एन इंडियन बाई हार्ट। ऑलदो आई नो देयर इज नो स्कोप फॉर रिसर्च देयर बट वी कैन ट्रीट पीपुल एण्ड कैन यू सोशल सर्विस। वी हैव एनफ मनी एण्ड वी आर चाइल्डलेस एण्ड आफ्टरऑल दिस इज द वर्ल्ड ऑफ ग्लोबलाइजेशन सो वी कैन टेक केयर ऑफ आवर रिसर्च प्रोजेक्ट्स फ्रॉम देयर ऑलसो।'' बारबारा कनी काल गुम भ' गेली आ फेर उतारा देलखिन—''यू डोन्ट वरी आई शैल गो एलौंग विद यू व्हेयरएवर यू विल गो। इफ यू वान्ट टू डाइ ऑन योर स्वाइल आई ऑलसो वान्ट टू डाइ विद यू। आई सैल एनरॉल माइसेल्फ फॉर इवनिंग हिंदी क्लासिक। यू गो फर्स्ट एण्ड एरेंज एवरी थिंग देयर देन आइल ऑलसो गो एण्ड सैल एप्लाई फॉर इंडियन सिटिजनशिप।'' डाक्टर साहेब तकर बाद कनियो देरी नइँ कयलनि, अपन मोबाइल उठा सुधीर केँ फोन लगेबा मे। सुधीर केँ ओ एक टा संक्षिप्त सूचना देलखिन अपन भारत अयबाक।

दिल्ली मे इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाइ अड्डा पर जखन डाक्टर साहेब उतरला तँ एतबा बरखक बादो ओ हवा आ सहरजमीन हुनका अनभुआर नइँ लगलनि। सुधीर हुनका लेबा ले' आयल छला आ डाक्टर साहेब हुनके संग हुनकर आवास पर पहुँचला। सुधीरक आवासक भव्यता आ ओत' भाबहु आ धीयापुता द्वारा भव्य स्वागत सँ डाक्टर साहेबक मोन गदगद भ' गेलनि। राति मे भोजनक बेर मे गप्पक क्रम मे ओ सुधीर केँ अपन अगिला कार्यक्रम बुझबैत बजला—सुधीर हम एखन किछु दिन भारत रह' अयलौं अछि आ भ' सकैत छै जे आब एत' रहिए जाइ...तँ काल्हि खन हम एत' अपन किछु मित्र सब सँ भेट करबा लेल दिन मे निकलब। चाहै छी जे हुनको सब सँ सलाह ल' ली आगूक लेल। सुधीर उतारा देलखिन—ताहि लेल, कोनो बात नइँ अहाँ संग हम गाड़ी क' देब जत-जत' अहाँ केँ जेबाक रहत ड्राइवर रहबे करत

मुदा हम तँ कहब जे एक बेर एकरा पर फेर सँ सोची। कारण जे, कत' अहाँ अमेरिका मे रहै छी, एतेक पाइ कमाइत छी आ आब आबिक' एहि ठामक घोल-फचक्का मे पड़ब। ओना ई बात ठीके जे जँ दिल्लीयो मे कोनो पैघ अस्पताल पकड़ा गेल आ अपन प्रैक्टिस शुरू क' देलौं तँ एत्तौ अहाँ कमाक' बुर्ज क' लेब आ जँ एत' एक बेर अहाँ जमि गेलौं तँ कतेको जमल-जमायल डाक्टर लोकनि केँ सुलबाइ ध' लेतनि। मुदा डालर मे जे कमाइ होइत छै जकर बाते अद्भुत छै। एत' तँ कतेको लोक डालर देखनहियो नइँ छै आ जँ अहाँ एत' आबियो गेलियै तँ भौजी। ई कहैत सुधीर हुनका तरफ प्रश्नवाचक दृष्टिए तकलनि।

डाक्टर साहेब उतारा देलखिन—हम जखन जमि जायब तँ ओहो आबि जेती मुदा हम दिल्ली मे नइँ गाम मे रह' चाहै छी। आब हमहू करीब पचास बरखक भेलौं, पाइ बड्ड कमेलौं मुदा पाइ कमेबो के कोनो एत्ता तँ नइँ होइत छै। दोसर गप्प जे हमरा पाइक लोभ नइँ अछि। जतबा अछि ततबा मे नहियो किछु करी तैयो जीवन कटि जायत। मुदा आब हम गामे मे रह' चाहै छी। अपना जीवैत अपन सहरजमीन लेल, अपन समाज लेल काज कर' चाहै छी जकर हम ऋणी छी। आब तँ माय-बाबूजी रहला नइँ, तखन आब हमर गाम जेबा मे सेहो कोनो प्रतिबंध नइँ छै! तँ हम चाहै छी जे अहाँ परसू किंवा चारिम दिनक हमर टिकटक व्यवस्था क' दी आ प्रयास करब जे हमरा लेल रेलवे के स्लीपर क्लासक टिकट ली।

सुधीर अनचोक्के कनी उत्तेजित होइत बजला—से तखन जे इच्छा हुअय मुदा गाम आब ओ गाम नइँ छै, ने ओ नगरी ने ओ ठाँ जकरा लेल अहाँ ओत' जा रहल छी। ओनाहितो गाम पर अछि के? जेहो अछि से सब तँ बताहे-घताह सब अछि। ललनक आँगन सँ तँ छथीन्हें काँके रिटर्न आ आब ललनो कम नइँ छथि आ धियापुता तँ राकसे के नोतल छै। हम तँ कहब जे एक्को-दू दिनक लेल जेबा सँ परहेज करी! मुदा आब जँ एहि अवस्था मे आबि अहाँ अपन गंजन करब' चाहै छी तँ हम की क' सकैत छी। सुधीर केँ उत्तेजित होइत देखि हुनकर पत्नी भनसाघरक चौखटि लग सँ आँखि सँ इशारा द' चुप्प रहबाक संकेत क' रहल छली, मुदा सुधीर नहिए चुप्प भेला। डाक्टर साहेब मात्र एतबे कहलखिन जे—अहाँ चिंतित जुनि होउ, सब ठीके रहतै...! आ ई कहैत ओ हाथ धोबाक लेल बेसिन के तरफ गेला तँ सुधीरक पत्नी आँठि थारी उठबैत बजली—अहाँ कथी लेल बजैत छी हुनका जे मोन छनि से अपना कर' दियौन। सुधीर कहलखिन—हँ, एखन नव-नव जोश चढ़ल छनि, नव जोगी के गाँ...मे जट्टा। एखन अनुभव नइँ भेल छनि से जखन भ' जेतनि तँ देखबै अहाँ जे कोना नाङड़ि सुटकैने जात खड़ही मे। मुदा हमरा तँ गर्ज अछि जे कहुना हिनकर गाम जेबाक विचार बदलनि। एतबा मे डाक्टर साहेब हाथ धुआ वापस भेला तँ सुधीरक पत्नी नाक तक घोघ तनैत भनसाघर घुसि गेली आ सुधीर हड़बड़ाक' गप्प केँ बदलैत बजला—हम कहैत छलौं जे जँ जेबाके अछि तँ पटना तक फ्लाइट ल' लिय' किंवा राजधानीक टिकट कटा दैत छी। कथी लेल एखन स्लीपर क्लासक धक्का खाइत जायब। हमरा तँ आब अपने करीब सात-आठ बरख भेल स्लीपर मे चढ़ना। ओहि मे कोनो मनुक्खक गति रहै छै। सब टा ढोड़ाइ-मंगनू सब भेड़ियाधसान देने रहै छै। डाक्टर साहेब बहस केँ पूर्ण विराम- लगेबाक दृष्टिए कहलखिन—नइँ, अहाँ स्लीपरे क्लासक टिकट बनबा दिय'। सुधीर तुरछैत बजला—पाइ के दिक्कत अछि की? ओना हो, बिहार जाइ वला ट्रेन लेल एतेक जल्दी मे टिकट भेटत नइँ, तत्काले सेवा मे लेब' पड़त। मुदा स्लीपरे लेल किऐ हिज्जो केने छी। डाक्टर साहेब जवाब देलखिन—कोनो बात नइँ, तत्काल मे भेटत तँ वैह सही। नइँ तँ हम बिना रिजर्वेशने चलि जायब आ एहि मे हिज्जो के गप्प नइँ छै। हम बहुत दिनक बाद स्वदेश घुरलौंहें तँ हम एकरा ल'ग सँ अनुभव कर' चाहै छी आ हमर मानब अछि जे भारतक आत्मा एखनो जेनरल आ स्लीपरे क्लास मे चलैत छै। इंडिया साइनिंग-इंडिया साइनिंग के नारा ने लोक लगबैत अछि, इंडिया अहाँ सन एसी मे रहनिहार सँ नइँ छै सुधीर। सुधीर निरुतर भ' सुतबाक लेल प्रस्थान केलनि, मुदा चेहरा पर असंतोष साफ झलकि रहल छलनि।

दरभंगा स्टेशन पर जखन डाक्टर साहेब उतरला तँ मारितेरास अनुभव मे हेरायले उतरला। बहुत दिनुका बाद ट्रेनक चिनिया बदाम आ रंग-बिरंगक लोकक संगक अनुभव भेल छलनि। ट्रेनक शौचालय के देवाल पर कयल चित्रकारी आ आलेख सँ ई अनुभव सेहो भेलनि जे ठीके वात्स्यायनक जन्मस्थली यैह रत्नगर्भा भारतभूमि छियै। दरभंगा सँ जखन बस सँ मधुबनी आ फेर ओत' सँ जखन गामक चौक पर उतरला तखन सूर्य पश्चिमक आकाश मे लुकझुका रहल छल। एतेक बरखक बाद हिनका सब किछु बदलल बुझेलनि। चौक बहुत नमहर भ' गेल छलै आ गामक अंतिम छोर पर बसल ई चौक जेना गामक विस्तार मे सहयोग क' रहल छलै। जखन ओ गाम पर पहुँचला तँ मुनहारि साँझ भ' गेल छलै आ किछु बच्चा सब ओत' चोरा-नुक्की खेलेबा मे व्यस्त छल। ई जखन घर दिस नजरि देलखिन तँ बुझबा जोग भेलनि जे कत्तौ आन ठाम आबि गेल छथि। मुदा फेर अँखियासलनि जे नइँ, अयलौं तँ ठीके जगह पर, वैह बसही पोखरिक भीड़ आ ओकर उतरबरिया महार पर घर। मुदा ई की, सुधीर तँ कहने छला जे सब टा घर केँ पक्का बना देने छियै मुदा एत' तँ सब टा घर ढहल-ढनमनायल छै। पछबरिया घर जे दलान दिस छै ओ सोझा मे ठाढ़ सोंगर लागल जेना-तेना अपन अस्तित्व केँ बचेबा मे लागल। ताहि पर सँ लटकल कुम्हड़ ओकरा आर झुकौने जाइत छलै। फेर हुनका अनचोके मोन मे अयलनि—नइँ भ' सकैत छै जे घराड़ी बदलेन क' लेने होथि मुदा फेर ओ अपन सोच केँ अपनहि कटला, नइँ गप्प तँ अही ठामक करैत छला सब दिन। तखन ओ ओही ठाम खेलाइत एक टा बच्चा केँ शोर पाड़लनि आ पुछलखिन—बौआ मुखिया जी, गदाधर बाबूक घर यैह छियनि। बच्चा केँ कनी थकमकाइत देखि ओ फेर पुछलखिन—ललन बाबू आ सुधीर बाबू जिनकर बेटा छथिन। ई दुनू नाम सुनिते ओ बच्चा बाजल—हँ, हँ यैह छियनि, हम चिन्टू केँ बजा दैत छी आ ओ चिन्टू के हाक देलक—रौ चिन्टूआ तोरा ओत' कोनो पाहुन अयलखुन हें। कोनो जवाब नइँ पाबि ओ फेर हाक देलक—रौ चिन्टूआ, चिन्टूआ...मर बहिं कत' मरि गेलही रौ!... कहै छियौ एमहर आ ने। ताधरि एक टा बच्चा ओत' पहुँचल आ हिनका दिस प्रश्नवाचक दृष्टिएँ तकलक तँ डाक्टर साहेब हुनका सँ पुछलनि—बौआ मुखिया जी गदाधर बाबूक घर यैह छनि। ओ बच्चा मात्र बसहा जेना मूड़ी डोला देलक। डाक्टर साहेब फेर पुछलनि—ललन बाबू के घर यैह भेलनि ने यौ?... आ उतारा मे ओ बच्चा पुछलकनि—अहाँ केँ किनका सँ भेटक काज अछि, ललन बाबू हमर पप्पा छथि। डाक्टर साहेब ओ बच्चा केँ कहलखिन—बौआ हमर नाम विभूतिनाथ झा अछि!... ललन केँ बजा दिय'। ओ बच्चा किछु बजितए कि आँगन सँ बाहरक गुलगुल

सुनि ललन बहरेला आ कनी दूरे सँ पुछलखिन—चिन्टू के छथि? चिन्टूक उतारा देबा सँ पहिने डाक्टर साहेब अपने बजला—हम विभूतिनाथ। ललन कँ जेना कानक सुनल नाम पर भरोस नइँ भेलनि आ ओ लग अबैत अखियासैत फेर पुछलखिन—के? डाक्टर साहेब—हम विभूतिनाथ, ताबत ललन लग अयला आ सामने हिनका देख जेना आँखि पर भरोस नइँ भेल होनि, फेर ओ चोट्टे हिनकर पयर छूबैत एक्के साँस मे बजला—बड़का भैया यौ, कोना क' हम सब मोन पड़लौं आउ-आउ... हे चिन्टू गोड़ लगियौन, आ आँगन सँ पिंकी के सेहो पठाउ। फेर डाक्टर साहेब कँ ठाढ़े देख बजला—भैया आउ ने! ठाढ़ कथी लेल छी, दलान पर आउ! ओत' बैसैत छी। डाक्टर साहेब दलान पर आबिक' बैसला तँ मुदा ओ एखनो हतप्रभ छला! हुनका कानक सुनल आ आँखिक देखल मे कोनो मिलानीए नइँ भ' रहल छलनि। ओ ललन सँ पुछलखिन—यौ ललन ई की देख रहल छियै हम, सब टा घर खंडहर बनल अछि मुदा सुधीर तँ फोन पर कहने छला जे सब टा घर पक्का बना देने छियै। ललन बजला—अरे अहाँ एखन अयबे केलौं अइ, सब टा गप्प हेबे करतै, बुझिए जेबै सब टा गप्प। डाक्टर साहेब—मुदा हमरा जिज्ञासा लागल अछि, की कल्पना केने छलौं आ की यथार्थ मे देख रहल छी!... ओ तँ कहने छला जे सबतरि कोठे-कोठामय क' देने छियै। एखन तक तँ ललन धैर्य धेने छला, मुदा आब तामस जेना एड़ी सँ टिकासन तक लहरि गेलनि! आ ओ बजला—सुथनी कोठा, ओ की बजता यौ, सब टा कँ सुड्डाह क' राखि देलखिन। कोठा-सोफा तँ दूरक गप्प छै, जन्मदाता माय-बाबूजी कँ ढंग सँ इलाज करिबतथिन तकर पाइ हुनका ल'ग नइँ छलनि। दवाइ बेतरे मरबाक नौबत छलनि दुनूक! तखन जतबा सकलौं ततबा हम दुनू बेकती केलियनि आ तकर निसाफ सेहो ई जे हमरा दुनू बेकती कँ बताह साबित क' सब टा जमीन-जथा अपन नामे करबा लेलखिन।

डाक्टर साहेब कँ जेना लगलनि जे सोझे कियो हुनका उपर सँ धरती पर बजारि देने होनि। ओ बजला—मुदा हुनका तँ हम माय-बाबूजीक इलाज सँ ल'क' घर बनेबाक पाइ तक पठौने छलौं। आर तँ आर घरक चारूकात छहरदेबाली देबाक लेल सेहो पाइ मँगने छला, सेहो देलयनि। ललन बजला—अरे जाबत माय-बाबूजी कँ समांग छलनि ताधरि तँ किछु-किछु पाइ ओ कखनो काल क' द' दैत छलथिन हुनका सभक हाथ मे। ओ तँ अहाँ कहलौं तखन बुझलौं जे ओ सब टा पाइ अहाँक छल आ श्रवणकुमार बनल रहला ओ। कखनो क' माय लेल साड़ी तँ कखनो क' बाबूजी लेल धोती। सब टा पोलहबैक हथियारक उपयोग ओ केला आ तेना पोलहा क' माय-बाबूजी कँ अपना तरफ केने छलथि जे हुनका सभक आँखि पर पट्टी बनहा गेल छलनि। जहिया सँ हुनकर सभक समाँग घटलनि तहिया सँ सब निपत्ता। मुदा ताधरि तँ पोलहा क' सब टा जमीन-जथाक अधिकार अपना हाथ मे आबिए गेल छलनि! मुदा मरौसी संपत्ति सँ हमरा कोना बेदखल करितथि तँ हमरा दुनू देकती कँ बताह साबित करबा देलनि। जहिया बाबूजी कँ लकबा मारने छलनि तहिया तँ ठीकेदारी एत्तै करैत छला ने! मधुबनिए मे तँ डेरा छलनि मुदा ल' नइँ गेलखिन एत' सँ। कनी नइँ भेलनि जे कोनो नीक डाक्टर सँ देखा दित'थिन। आर तँ छोड़ू, माय कँ मोतियाबिन्दक ऑपरेशन लेल जँ ल' गेलखिन से ओकरा खेबा लेल सेहो आफद छलै। एक टा सोहारी तक लेल भौजी की-की नइँ कहिनी कहलखिन। बेचारी चारिए दिनक बाद घूरि आयल हमरा संग।

डाक्टर साहेब भावावेश मे बाजि उठला—कहू हम भरि दुनिया के इलाज करैत रहलौं आ एत' हमर माय-बाप दवाइ बेतरे मइला। हमरा सँ ओ सब अपन संबंध तोड़ि लेने छला मुदा सुधीर, ओ ई की केला। एकर बाद हुनकर कंठ अवरुद्ध भ' गेलनि, गरा-बकोर लागि गेलनि आ दहोबहो नोर बह' लगलनि! मुदा तुरंते ओ सम्हरला आ आब भावनाक स्थान क्रोध ल' लेने छलै। ओ बजला—ओ तँ हमरा एत्तौ एबा सँ रोकैत छला। आब बुझलौं जे ओ तँ हमरा मात्र सोनाक अंडा देब'वला मुर्गी बुझने छला! एत' अयलाक बाद सब टा भेद खुजि जेतनि तकर ड'र तँ छलनिए ने। ओ एखन तक हमर स्नेह देखलनि तामस नइँ। ओ बिसरि गेल छथि जे हम वैह विभूतिनाथ छी जे हुनका चोराक' दारू पीबैत पकड़ने छलयनि तँ देह पर घोड़नक छत्ता झाड़ि क' पानि ढारि देने छलयनि। ई कहिते ओ अपन मोबाइल उठा सुधीर कँ फोन लगौलनि मुदा बेर-बेर ओ ओम्हर सँ फोन काटि दैत छलखिन। तामसे ओ मोबाइल पटकैत बजला—फोन नइँ उठबैत अछि ई चोट्टा। ललन हुनका शांत करैत बजला—अहाँ एतेक जुनि तामस करू! ओ तँ आब अहाँ कहलौं तखन बुझलियै जे ओ सब टा फुटानी अहींक पाइ पर छलै आ एहनो गप्प नइँ छलै जे माय-बाबूजीक तामस अहाँ पर रहिए गेलनि। बाद मे किछु बरखक बाद हुनकर सभक मोन कनी डोलबो करनि तँ छोटका भैया फेर सँ भड़का देथिन, किछु ने किछु कहिक'। ओ तँ हरदम आमिले पीने रहैत छला आ एहि गप्पक तँ ककरो कनियो मिसियो भरि हवो नइँ लगलै जे अहाँ सँ हुनका फोनफोनी होइत रहनि। ओ तँ उल्टे माय-बाबूजी कँ कहल करथिन जे—देखै नइँ छियै जे अहाँ सब सँ प्रिय हुनका ओ विदेशी मेमे छनि! जँ कनियो आँखि मे पानि रहितनि तँ एक्को बेर खोज-खबरि लितथि ने। डाक्टर साहेबक तामस आर बढ़ले जा रहल छलनि। हुनका उच्च रक्तचापक समस्या सेहो छलनि आ आब हुनका बुझना गेलनि जे मोन हुनकर आब धीरे-धीरे खराब भेल जा रहल छलनि तँ ओ ललन कँ रोकैत बजला—छोड़ू ई सब गप्प कँ आर सब खबरि कहू। अपन जीविका कोना चलैत अछि आ धीयापुता सभक पढ़ाइ-लिखाइक की व्यवस्था केने छियै?

ललन एक टा दीर्घ साँस छोड़ैत बजला—व्यवस्था की करबै? अपने पढ़लौं नइँ तँ इच्छा छल जे दुनू धीया-पुता ढंग सँ पढ़ि जाइतए तँ जतबे विभव अछि ओतबे मे जेना-तेना चलै छै। बाबूजी जाधरि जीबैत रहला तखने बहुत नेहोरा क' छोटका भैया सँ किछु पाइ दिया देला तही मे एक टा छोटछिन पानक दोकान खोललौं। बाबूजीक इच्छा नइँ छलनि जे पानक दोकान खोली मुदा आन व्यवसाय करितौं तकरा लेल ओतेक पूँजी नइँ छल। एक तँ बाबूजीक विरोध उपर सँ उधारी सेहो जान मारलक। हारिक' दोकान बंद क' देलियै। आब छोटके भैया कँ कहिक' सब टा जमीनक बटेदारी ल' लेने छी। कहलयनि जे अनका देबै से हमरे द' दिय'! जखन कपार फूटल अछि तखन अपने जमीनक बटेदारी करब। ओही खेती सँ जँ रौदी-दाही नइँ होइ तँ अन्नक दिक्कदारी नइँ रहैत अछि मुदा आनो खर्च तँ छै! तखन अहाँक भाबहु आँगनबाड़ी मे नोकरी ध' लेली! तही सँ कहुना चलि जाइत छै। एतबा मे आँगन सँ चाह आबि गेलै आ डाक्टर साहेब चाहक कप उठबैत पुछलखिन—बाबूजीक इच्छा नइँ रहबाक की कारण? ललन उतारा देलखिन—नइँ बुझलियै, आखिर मुखियाजी छलथिन ने आ मुखियाजीक बेटा कोना पानक दोकान करत, रस्सी जड़ि जाइत छै मुदा ओकर ऐंठन नइँ जाइत छै।

जमीन जथा तँ छोटका भैया सब टा अपन जिम्मा ल' लेलखिन तखन हुनके कहलियनि बटेदारी लेल। बरख भरि मे ओ एक बेर अबैत छथि फगुआ मे आ सब टा अन्न-पानिक हिसाब-किताब क' चलि जाइत छथि।

सुधीरक चर्चा होइत फेर डाक्टर साहेबक पित्त चढ़ि गेलनि आ ओ फेर सँ मोबाइल उठा सुधीरक नम्बर मिलौलनि मुदा आब ओ स्वीच्ड ऑफ बतौलकनि। ओ मोबाइल वापस रखैत पुछलखिन—यौ मुदा एतेक जे पाइ हमरा सँ लेलक तकर सुधीर केलकै की? ललन—करता की, मधुबनी-दरभंगा सँ ल'क' दिल्ली धरि कतेको जमीन-जथा किनलनि, कतेको ठाम मकान छनि हुनकर आ दिल्ली मे अपन प्रोपर्टी डीलरी वला धंधा से जमौलनि! आर तँ आर, एत्तौ कतेको लगानी लगौलनि। लोको कँ लगैत छलै जे हिनका लग एतेक पाइ कत' सँ झहड़ै छै। ओ तँ आब भेद खुजलै जखन अहाँ कहलौं। डाक्टर साहेब कँ बुझना गेलनि जे आब माथ फाटि जेतनि तँ ओ ललन कँ रोकैत बजला—अनठाउ एहि सब गप्प कँ! हम आब आबि गेल छी आ आब घुरबा लेल नइँ, रहबा लेल आयल छी। तँ अहाँ सब कँ कोनो दिकदारी नइँ होयत। ललन पुछलखिन—तँ अहाँ ओतुक्का नोकरी सँ रिटायर भ' गेलियै। डाक्टर साहेब कँ हँसी लागि गेलनि। ओ बजला—नइँ ओत' लोक कँ जाधरि सामर्थ्य रहै छै ताधरि काज करै छै। चलू ओ सब योजना पर काल्हि गप्प करब, मुदा एखन आब स्नान क' भोजन करब आ सोझे सूतब।

अगिला दिन भिनसरे सँ लोकक धरोहि लागि गेलै हिनका सँ भेंट करबा लेल। तही मे सँ हिनकर लंगोटिया यार संतोष बाबू सेहो पहुँचला। दुनू गोटे साते भवतु आ कबिरकाने क' काइनचुन का सँ ल'क' इंटरक पढ़ाइ संगे कयलाह। देखिते देरी दुनू एक-दोसरा कँ कसिक' पजियौलनि। एम्हर-ओम्हरक सब टा गप्पक बाद जखन डाक्टर साहेब अपन योजना सुनौलखिन तँ संतोष बाबू प्रतिक्रियास्वरूप बजला—सोचलें तँ ठीके, गाम मे ओनाहितो कोनो थितगर डाक्टरक अभावे छै। गामक स्वास्थ्य केन्द्र मे जे एक टा डाक्टर छलै ओ कहिया अबै आ कहिया नइँ तकर कोनो ठेकाने नइँ आ बाद मे ओ ट्रान्सफर करा एत' सँ चलि गेल। तकर बाद सँ तँ कोनो डाक्टर नइँ छै। कहिया सँ ओ पोस्ट खालिए छै, कतेको बेर सिविल सर्जनक आवेदन देल गेलै मुदा सब टा ठस्स। मासे दिन तँ भेलैए, तोरो फोचाइ काका मोने हेथुन, हुनकर पुतहु कँ साँप काटि लेलकनि! जाधरि मधुबनी पहुँचल हुनका ल'क' ताधरि ओ नइँ रहली। आन तँ आन हमर बाबूए कँ हार्ट अटैक भेल रहनि, जाधरि टेम्पू सँ मंगरौनी हार्ट हॉस्पीटल ल'क' पहुँचलौं ताधरि रस्ते मे चलि गेला बेचारे। तँ हम तँ कहबौ जे अपन जे क्लिनिक-कुलनिक खोलबे ताहि सँ तँ बढ़िया जे तू सिविल सर्जन सँ अपने गप्प कर! जँ अहीठाम अस्पताल मे तोरा भ' जाइत छौ किंवा कम सँ कम बैसबाक अनुमति भेटि जाइत छौ, तँ आर बढ़िया। एत' आर सब किछु छै मुदा डाक्टरे नइँ, कान तँ सोन नइँ आ सोन तँ कान नइँ। ओना ओकरा कोन आपैत हेतै, ओकरा तँ एहि देहात मे अयबा लेल कोनो डाक्टर नइँ भेटैत छै आ तहू पर तू बिना एक छिद्दी पाइ नेने काज करबा पर तैयार छें। जँ ओकरा सँ गप्प नइँ छै तँ सीधे स्वास्थमंत्री सँ गप्प कर, संजोगे जे स्वास्थ्य मंत्री अपने क्षेत्रक विधायक छथुन आ तोहर अनुज सुधीरक परम मित्र सेहो छथिन। सुधीरक नाम सुनि फेर डाक्टर साहेबक मोन कनी तीत भेलनि मुदा प्रकट केने बिना बजला—सिविल सर्जन सँ तँ हमरा एत' बैसलै-बैसल गप्प भ' जायत, दिल्ली मे हमर एक टा मित्र सँ हमरा हुनकर मोबाइल नंबर सेहो भेट जायत आ ईहो भाँज लागि जायत जे काज भ' पायत किंवा नइँ। तँ समय व्यर्थ केने बिना हम कनी भजिया लैत छी ताधरि अहाँ सब गप्प करू। ई कहिते डाक्टर साहेब कनी सहटिक' मोबाइल पर गप्प करबा मे व्यस्त भ' गेला आ एम्हर दलान पर बैसल सब गोटे के टकध्यान ओम्हरे लागल छलै। कनी कान ठाढ़ क' सुनबाक प्रयास मे सब लागल छल जे गप्पक किछुओ सूत्र हाथ लगै मुदा डाक्टर साहेबक वार्तालाप बड्ड धीरे-धीरे भ' रहल छलै तँ गप्पक किछुए अंश सुनबा जोग नइँ भ' रहल छलै आ तहू पर गप्प अंग्रेजी आ हिन्दीक मिझ्झर छलै। ओ जखन गप्प समाप्त क' फेर सँ आबिक' बैसला तँ सभक ध्यान हुनके दिस छलै आ ओ बैसलाक बाद एक टा नमहर साँस लैत बजला—सिविल सर्जन सँ गप्प भेल, ओ तँ कहलक जे—आपका कदम स्वागत-योग्य है लेकिन इसके लिए उपर से बात करनी होगी। तँ हमरा स्वास्थ्य मंत्री सँ भेट क' हुनका एक टा एहि संदर्भ मे आवेदन देब' पड़त। हम सोचैत छी जे आइए पटना जा गप्प क' ली। संतोष बाबू हुनकर गप्प कटैत बजला—नइँ से तँ ठीक सोचलें, शुभस्य शीघ्रम। एखन जँ विदा भेलें तँ साँझ तक पटना पहुँच जेबें आ काल्हिए गप्प क' घूरि अबिहें। मुदा एक टा गप्प, आ जँ किनसिआइत गप्प नइँ बनलौ तँ। हुनकर गप्प कटैत बगले मे बैसल भोला बजला—एह अहूँ की गप करै छी, शुभ काज मे कहीं कियो एहेन अनसोहांत गप्प करैत अछि। अरे मंत्री हेता तँ अपन घर मे हेता, डाक्टर साहब कोनो कम भरिगर लोक छथि। डाक्टर साहेब बजला—नइँ अहाँ सब आश्वस्त रहू! काज हेबे करतै आ जँ नइँ भेलै तँ दोसरो उपाय हमरा सोचल अछि, बस अहाँ सभक मदत आ शुभकामना चाही। सब एक्के स्वर मे बाजल—एह से तँ अछिए ने।

अगिला दिन ठीक चौबीस घंटाक बाद ओ विधायक महोदयक सोझा बैसल छला आ हुनका सँ सब टा गप्प बुझलाक बाद विधायक महोदय बजला—आपके आने का हिंट मुझे कल ही सिविल सर्जन साहब दे दिये थे लेकिन ये तो संभव नहीं है। कारण कि हम एक सरकारी अस्पताल को निजी प्रैक्टिस के लिए नहीं दे सकते। डाक्टर साहेब हुनकर गप्प बीच मे कटैत बजला—मुदा हम तँ नि:शुल्क सेवा देब' चाहै छियै तँ ई निजी प्रैक्टिस कोना भेलै। विधायक महोदय जवाब देलखिन—देखिए डाक्टर साहेब, माना हम उतना पढ़े-लिखे नहीं हैं लेकिन ओंठो छाप तँ नइँ हैं। आापको इहाँ कोई जानता-ऊनता तो हैए नहीं, तब कुछ दिन हुआँ बैठेंगे और फिर अपना प्रैक्टिस चालू। अरे समाजसेवा ही करना है तो आप तो एन.आर.आई. हैं कुछ इनभेस्ट-उनभेस्ट करिये। सारे एन.आर.आई. तो इहे करते हैं। हुआँ तिजोरी भरते हैं और हीयाँ आकर समाजसेवा का ढोंग करते हैं। सारा बिलैक मनी को व्हाइट मनी बनाने का धंधा है। डाक्टर साहेब अपन तामस कँ दबबैत बजला—कृपया हमर उद्देश्य कँ अन्यथा नइँ लेल जाय विधायक महोदय। आइ मात्र बिहार मे हर साल सर्पदंश आ हार्टअटैक सँ मरबाक आँकड़ा कम नइँ छै। जाहि मे बेसी के मृत्यु अस्पतालक सुविधाविहीन किंवा दूर भेला कारणे होइत छै आ रहल सवाल इन्वेस्टमेंट करबाक तँ जँ हम पूँजी इनवेस्ट करैत छियै तँ ओ सब टा विभाग मे बँटैत अंत मे पचासो प्रतिशत जनता ल'ग पहुँचतै किंवा नइँ तकर कोनो ठेकान नइँ! आ हम कोनो ब्लैक मनी सेहो नइँ बनेने छी। ओकरा लेल अहाँ सब छियै विधायक महोदय, जमा तँ अहाँ सब बाहरे करै छियै। कम सँ कम एन.आर.आई.

सब एत' आबि खर्च तँ करै छै। तैँ हम सीधे-सीधे जनता कैँ देब' चाहैत छियै।

विधायक महोदय गर्म भेला आ बजला—देखिए डाक्टर साहेब, पचास प्रतिशत पहुँच जाता है ना। समझिए बहुत हुआ। आखिर लोकतंत्र है, हमलोग भी तो मनुक्खे हैं ना। अरे सत्ता स्वत्ता होता है डाक्टर साहेब, अगर उपरे मे अल्हुआ फड़ता तँ बाते क्या था। सारा लेन-देन का खेला है। आप हमें फायदा दीजिए और हम आपको देंगे लेकिन ई अंग्रेजी मेरे पास मत छाँटिए। माना ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं लेकिन इलेक्शन कमीशन से बचने के लिए सर्टिफिकेट का जोगाड़ तँ किये ही हैं, तँ सर्टिफिकेट से पढ़े-लिखे हैयै हैं।

डाक्टर साहेब उतारा देलखिन—हम अहाँ कैँ अंग्रेजी की पढ़ायब विधायक महोदय, जकरा मैथिली तँ छोड़ू हिन्दीयो ढंग सँ बजैक लूरि नइँ छै, तकरा पर तँ दये टा कयल जा सकैत छै। अहाँ साइत बिसरि गेल छियै जे जाहि क्षेत्र सँ एत' बैस क' प्रतिनिधित्व करै छियै ओ एक टा मैथिलीभाषी क्षेत्र छै आ अहूँ एक टा मैथिले छी। हम करीब पचीस बरख सँ विदेश मे रहलौं मुदा तखन सँ हम अहाँ सँ मैथिली मे बाजि रहल छी आ अहाँ टंगटुटा हिन्दी हमरा झाड़ने छी। विदेशो मे रहिक' अहाँ सँ बेसी भारतीय तँ हमहीं छी जे देश सँ अनभिज्ञ तँ कम सँ कम नइँ छी।

विधायक महोदय गर्माइत बजला—अरे छोड़िए-छोड़िए आजकल मैथिली कौन बोलता है! जाइए तो मिथिला के किसी चौक-चौराहा पर या किसी शहर मे, कौन सी भाषा बोल रहे हैं लोग हुआँ।

डाक्टर साहेब नहला पर दहला मारैत बजला—हँ से तँ ठीके! कनी दिनका बाद अही क्षेत्र मे कोनो मल्टीनेशनल कंपनी अपन मैथिलीक कोचिंग खोलत। आ ओकर मंजूरी सेहो सब सँ पहिने अहीं सब देबै।

विधायक महोदय कैँ लगलनि जे सोझे कियो घा पर भरि बाकुट ललका मिरचाइ ध' देने होइ आ ओ सीधे टेबुल पर हाथ मारैत बजला—आपको हम अस्पताल मे न बैठने की अनुमति दे सकते, न ही उस अस्पताल के रिक्त पद पर आपको रखा जा सकता। ऊ तो हम आपको एन.आर.आई. समझकर एप्वाइंटमेंट दे दिए, नहीं तो आप जैसे कतना लोग आते हैं और अपना चप्पल घिसबाकर चले जाते हैं और आप जइसन लोगों को तो और ठोक्का नमस्कार।

डाक्टर साहेब—हम अहाँ सँ पूछि सकै छी जे की हम ओहि पदक योग्य नइँ छी। आइ ओ पद कैँ तँ छोड़ि दियौ, कोनो पैघ सँ पैघ अस्पताल मे हमर नियुक्ति कैँ कियो नकारि नइँ सकैत अछि आ जहाँ तक एप्वाइंटमेंटक गप्प छै तँ जँ अहाँ ल'ग अपन संसदीय क्षेत्रक समस्या लेल समय नइँ अछि, ओत' क लोकक लेल समय नइँ अछि तँ लोकक ल'ग सेहो अहाँ लेल समय नइँ छै। अमेरिका मे हमर एप्वाइंटमेंटक लेल ओतुक्का मंत्री सब कैँ लाइन लाग' पड़ैत छनि। कहबाक हमर ई अर्थ नइँ जे हम बड्ड पैघ लोक छी! हमर आशय ई जे एकर नाम छियै अनुशासन आ तही लेल ओ विकसित राष्ट्र कहबैत अछि आ हम सब कतेको दशक सँ विकासशीले छी आ नइँ जानि आर कहिया धरि विकासशीले रहब।

विधायक महोदय कत' चुप्प रह'वला लोक! ओ फेर अपन मुक्का टेबुल पर बजारैत बजला—हुआँ चाहे आप कितने भी बड़े आदमी हैं हीयाँ हम आपकी नियुक्ति उस पद पर नहीं कर सकते क्योंकि वो पद कोटे के लिए रिजर्व है और आप जेनरल कोटे से हैं, समझे। अब आप जा सकते हैं, मेरे पास इस सब बकचो... के लिए समय नहीं है।

डाक्टर साहेब—लेकिन लोकक स्वास्थ्य कैँ कोटा सँ की संबंध?

विधायक महोदय—ऊ हम नहीं जानते हैं। हमें भी संविधान और कानून के हिसाबे से काम करना पड़ता है और सामाजिक संतुलन का नियम भी इहे कहता है।

डाक्टर साहेब—हम आरक्षण विरोधी नइँ छी विधायक महोदय, मुदा हमरा लगैत अछि जे अहाँ तकर मनमानी उपयोग करै छी।

विधायक महोदय अपन स्वर मे कनी नरमी अनबाक असफल प्रयास करैत बजला—मुझे आपसे बहसबाजी का कोई मूड नहीं है आप जा सकते हैं।

डाक्टर साहेब कुर्सी पर सँ उठैत बजला—ठीक छै विधायक महोदय तखन हम अपन अलगे व्यवस्था सोचब, चलैत छी नमस्कार। ई कहैत ओ विधायकक चैम्बर सँ निकलि गेला। हिनका निकललाक बाद विधायक महोदय अपन पीए सँ बजला—साला आजकल जिसे देखो माथा पर मूतने को तैयार रहता है, बस थोड़ा माथ पर चढ़ने भर दो। साला एगो वोट का दे दिया एहसाने जताने सब चला आता है। जैसे लगता है किसी के जिरात मे बसे हों। ऊ तो सुधीरबा का एन.आर.आई. भाई है इसलिए एप्वाइंटमेंट दे दिये थे! अभी इसका सारा फड़फैसी निकालते हैं। कुच्छो करेगा तो बिना स्वास्थ्य मंत्रालय की अनुमति के कर नहीं सकता, अब देखते हैं साले को। साला कोई हमारे गाँ... में ऊँगली करेगा तो हम हियाँ क्या हिजड़ा है। एक तो एन.आर.आई. उपर से साला इतना रोब। एन.आर.आई. नहीं होता तो उठबा लेते साले को। अच्छा तिवारी, एन.आर.आई. से याद आया, पता करो तो साले का वीसा अवधि कितने दिन का है!... वही नहीं आगे बढ़ने देंगे और सुधीरबा को भी फोनिया देते हैं कि साला तुम्हारा भाई हियाँ कितना आग मूतकर गया है।

एम्हर साँझ मे जखन डाक्टर साहेब गाम घुरल तँ चौके पर संतोष बाबू भेट गेलखिन। सब टा गप्प बुझलाक बाद ओ पुछलखिन—तखन आब की? डाक्टर साहब कहलखिन—आब दोसर योजना पर काज करैक छै। दोसर योजना ई अछि जे कत्तौ नीक जगह पर जमीन ताकि ओत' सब टा सुविधायुक्त अपन अस्पताल बनायब जत' मुफ्त सेवा हेतै आ आब तँ हमरा होइत अछि, जे होइत छै से नीके लेल। एहि अस्पताल मे हम दरिभंगा सँ ल'क' दिल्ली आ अमेरिका धरिक विशेषज्ञ सब कैँ बजेबै। खाली एक टा नीक जगह पर जमीनक जोगाड़ भ' जाय। संतोष बाबू प्रसन्न होइत बजला—एहि मे की छै, आखिर हम कथी लेल छी। गाम मे घुसिते देरी रोडे कात मे कंटीर काकाक जमीन छनि आ ओ बहुत दिन सँ बेचबाक फेर मे छथि! मुदा दाम ओहेन नइँ भेटै छनि आखिर रोड कातक जमीन छै। डाक्टर साहेब आश्वस्त होइत बजला—नइँ पाइ जतेक ओ चाहैत छथि आ जे उचित छै से हुनका भेटतनि। संतोष बाबू बजला—चल ने हम तँ छीहे ने दाम-दीगर क' सब टा ठोकि बजाक' आइए फाइनल क' देबौ। चल तखन, अही गप्प पर एखने एकरा आर सँ पार मामिला क' दी। बस फेर की छलै! कनिए कालक बाद दुनू गोटे कंटीर बाबूक दलान पर छला। संतोष बाबू डाक्टर साहेबक मादे कंटीर बाबू सँ कहलखिन—हिनका चिन्हलियनि काका, ई छथि विभूति, गद्दू काका के जेठ बालक। कंटीर बाबू बजला—ओ यैह अमेरिका मे डाक्टर छथि, चिन्हलियनि आब? बड्ड दिन पहिने देखने छलियनि आ आब कनी सूझबो कम करैत अछि। मुदा आब की कर' अयलौंए बाउ! गद्दू भाइ दुनू प्राणी तँ आब गेला आ सुनबा मे तँ ई आयल छल जे अहाँ कैँ तँ गद्दू भाइ जमीन-जथा सँ बेदखल सेहो क' देने

छथि! कारण जे कहाँदन अहाँ कोनो मेम सँ विवाह क' क्रिस्तानी भ' गेल छी। डाक्टर साहेब उतारा देलखिन—सब टा गप्प अहाँ केँ ठीके बूझल अछि! खाली ई धर्म परिवर्तन फूसिए कियो कहलक अहाँ सब केँ। ओनाहितो काका धर्म सँ की होइत छै, धर्म तँ मात्र जीबाक तरीका छै। हम अहाँ हिन्दू भ' जन्म लेलौं तेँ हिन्दू छी आ जँ मुसलमान परिवार मे जन्म लेने रहितौं तँ मुसलमान रहितौं। संतोष बाबू माथा ठोकला, एक तँ कंटीर बाबू अपने गप्पीक नाना! कियो गप्प केनिहार नइँ फँसैत रहैत छनि तँ नव-नव मुल्ला फँसबैत रहैत छथि। जँ उद्देश्य नइँ रहितय, तँ नानी नइँ मारिहौं जे हिनका लग अबितौं। आब जखन मुल्ला फँसले छनि तँ कंटीर बाबू से ताव मे आबि गेल छला आ डाक्टर साहब केँ पुछलखिन—तँ हमरा एक टा गप्प बुझायल जाय अपने डाक्टर साहेब जे अहाँ भेलौं हिन्दू आ अहाँक आँगनवाली भेली क्रिस्तानी तँ अहाँक बाल-बच्चा तँ वर्णसंकरे भेल ने यौ! ओकर की धर्म भेलै? डाक्टर साहेब—ओकर जे मोन से ओकर धर्म। संतोष बाबू बीच मे टोकैत बजला—काका छोड़ू ने ई गप्प केँ हिनका कोनो धीयापुता नइँ छनि तेँ ओ झंझटे खत्म। आब जड़ि गप्प ई छै जे ई अमेरिका मे एतेक दिन डाक्टरी केला, ओत'क नामी हृदयरोग विशेषज्ञ छथि आ आब एत' डाक्टरी कर' चाहै छथि। आगू किछु संतोष बाबू बजता तकरा सँ पहिनहि कंटीर बाबू बजला—एह ई तँ बड़का हर्षक विषय छी मुदा बौआ अहाँ अयलौं एत' तँ कनी हमरो किछु उपचार करू! हमरा कब्जियत बड्ड रहैत अछि आ गैसो पेट मे हुड़हुड़ करैत रहैत अछि। तँ कोनो गोटी-तोटी दिय'। डाक्टर साहेब—काका कब्ज तँ रूटीन आ खानपान सँ उपजल समस्या छै। एकरा मे तेल-मशाला सँ परहेज करी, समय पर भोजन करी। एकरा लेल दवाइ लेनाइ कोनो आवश्यक नइँ। जतेक निमहि सकए दवाइ सँ परहेजे करी। कंटीर बाबू—यौ डाक्टर साहेब, हम सब तँ गोटिए सँ बुझै छियै जे इलाज भेल! खैर कनी अहाँ केँ पितिआइन केँ बातरसक समस्या छनि आ हमर जेठ बालकक कटीरबा केँ ओकासी बड्ड होइत छै से अहाँ देख लियौ। संतोष बाबू अपन माथ ठोकलनि आ मोने मोन सोचला—ई बहिं कटीरबे भरि खानदानक ईलाज एखने करबा लय! आब फेर तँ मँगनी के डाक्टर भेटत' नइँ। हुनका बीच मे हस्तक्षेप केनाइ आवश्यक बुझना गेलनि तँ ओ बजला—कका ई हृदयरोगक विशेषज्ञ छथि ने हिनका सँ की आन समस्या देखेबनि। एहि बेर कंटीर बाबू खौंझाक' बजला—अलबत्ता डिग्गा छ' हौ तों! अरे तों इतिहास सँ एम.ए. केल' तँ की कहबक जे हमरा पचमा किलासक हिसाब नइँ बनत। संतोष बाबू डाक्टर साहेब दिस आँखि दबैत बजला—नइँ काका सैह तँ कहैत छी! आब तँ ई छथिए ने, तकरे संदर्भ मे तँ गप्प कर' अयलौं। अहाँ केँ जे रोड कातक जमीन अछि से हिनके द' दियौन! अपने लोक छथि आ जे उचित दाम हेतै से ई देबे करता। आब कंटीर बाबू लाइन पर अयला आ बजला—देखू ककरो जे देबै से हिनके देबनि, आखिर ई तँ अपने लोक छथि। गद्दू भाइ सँ हमरा समाजिके संबंध टा नइँ छल ओ हमर मसियौतक बेमात्रे भाइक साक्षात बहिनौ छला तेँ अनका जे देबै से हिनके किऐ नइँ मुदा एखन तक हमरा उचित दाम नइँ भेट रहल छल तेँ रुकल छलौं। संतोष बाबू कंटीर बाबू दिस आँखि दबैत कहलखिन—बुझू तखन जे हिनके लेल अहाँ रुकल छलौं। अहाँ एखन तक साइठ हजारक कट्ठा माँगि रहल छियै। ई अहाँ केँ पैंसठ देता। फेर ओ डाक्टर साहेब दिस आँखि दबैत बजला—की रौ कोनो दिकदारी नइँ ने। डाक्टर साहेब मूड़ी हिला देलखिन। गप्प केँ विस्तार दैत फेर संतोष बाबू बजला—तखन तँ ठीके छै, हिनका सँ पाइ ल' हिनका रजिस्ट्री क' दियौन! ई सर्वसुविधा संपन्न अस्पताल ओत' खोलता। कंटीर बाबू सेहो मूड़ी हिला देलखिन। संतोष बाबू फेर डाक्टर साहब सँ कहलखिन—विभूति तों एखन गाम पर जो, राति कम नइँ भेलै। हमहू कनी काल कंटीर कका सँ किछु आर गप्प क' गामे पर जायब। तों आब आश्वस्त रह, कंटीर काका कहि देलखुन तँ भ' गेलौ। डाक्टर साहेब ओत' सँ चलि देला आ हुनका चलि गेलाक बाद कंटीर बाबू बजला—की चुटपुटिया डाक्टर छै हौ। एकरा बुते एक टा कब्जियत केँ इलाज नइँ कयल होइत छै। गद्दू भाइ रहथि धरि एकबोलिया हिनका नइँ के नहिए टप' देलखिन गाम। जमीन सँ बेदखल तँ कए देने छथिन तखन जखन आब ओ नइँ छथि तखन नुड़सुड़ायल अयलाह।

संतोष बाबू कंटीर बाबूक प्रवाह केँ तोड़ैत बजला—ओ सब छोड़ू काका, एखन असली गप्प सुनू। देखू एकरा किछु बूझल-तूझल छै नइँ एत' क कानून कैदा। अहूँ केँ ओ भट्ठा वाला जमीन अछि, कोनो काजक छल नइँ! अहाँ ओकरा पचास हजार मे बेच' चाहै छलौं आ हम अहाँ केँ पैंसठ दिया देलौं। बस खाली अहाँ आगूक कारोबार मे जल्दी करब। ईहो हदियायले अछि अहाँ रजिस्ट्री जल्दी क' दियौ। खाली कनी हमरो दिस ध्यान देबै, किछु हमरो बीच मे खर्चा-पानी निकलि जाय। कंटीर बाबू बजला—एह अबस्से किने, पंद्रह तों फाजिल दिएल' तँ तकरा मे सँ दस तोहर, मुदा जँ एकरा बाद मे भाँज लागि गेलै तखन। संतोष बाबू—अरे ओ अहाँ हमरा पर छोड़ि दिय', एखन एकरा भाँज नइँ चलतै आ जाबत चलतै ताबत ई एत' रहबे नइँ करत। अरे अस्पताल बनै किंवा नइँ ताहि सँ हमरा अहाँ केँ की? आइ तक कोनो दवाइ आ डाक्टर बिना मरलौं तँ नइँ। कोनो मधुबनी-दरिभंगा मे डाक्टरक कमी छै आ भरि दुनिया केँ देखब ताहि सँ की की होयत। ई एत' टिक'वला नइँ अछि! आइए ई मंत्री जी सँ झगड़ा क' आयल अछि! सुधीरबा पहिनहि सँ एकरा उपटाब' मे लागल छै तँ एकरा सँ हमरा सब केँ की फेदा? हम सब तँ एत्तै छी। दोसर गप्प जे हमरा सभक दुनू हाथ मे लड्डू अछि! कारण जे एकरा तँ अस्पताले बनेबाक छै तँ ओकरा लेल जेबाक रस्ता सेहो चाही ने। रोडक ठीक दक्षिण पहिने तँ रघुनियाँ के जमीन छै तकर बादे ने अहाँ केँ। एकर मतलब ई भेलै जे अहाँक जमीन पर जँ ई अस्पताल बनाइए लैत अछि तँ ओत' जेबा लेल एकरा रघुनियाँ सँ सेहो जमीन कीन' पड़तै। कह' के अर्थ हमर ई हवा मे उड़िक' तँ कियो सीधे अस्पताल नइँ ने जेतै। एकरा हम रजिस्ट्री सँ पहिने साइट पर जाए नइँ देबै आ अही बीच मे रघुनिया केँ टाइट क' देबै। नतीजा ई हेतै जे हिनका पड़ेबा के बाट नइँ सूझत यार केँ आ फेर वैह जमीन हिनके सँ अधिया दाम पर खरीद ककरो अनका अनका हाथे बेच देबै। माने एम्हर रघुनिया सत्तर-अस्सी लेल मोंछ पर ताव दैत रहै बाद मे ई डाक्टरवा सँ अधियो दाम द' जँ अहाँ चालीसो मे बेचलौं तँ अहाँ केँ तँ लाभे आ रघुनियाँ केँ जमीनक दामो खसि पड़तै। ओ अल्हुआ तौलैत रहौ। कंटीर बाबू प्रसन्न होइत बजला—सोचैत तँ छ' तहूँ बड़का दूरक मुदा अधिया दाम पर ई बेचत' आ रघुनियाँ लोभे पलटी नइँ मारत' तकरा पर हमरा संदेह।

संतोष बाबू—गर्वे फूलैत बजला—कक्का अहाँ चिंता नइँ करू। सब टा मामला हम टंच क' देबै।

जमीनक रजिस्ट्री तँ भ' गेल आ नतीजा सेहो वैह भेल जे संतोष बाबू सोचने छला।

रघुनिया सीधे नठि गेल जमीन देबा सँ। डाक्टर साहेब किछु चिंतित मुद्रा मे दलान पर बैसल छला। हुनका चिंतित देखि ललन पुछलखिन—की भेल, कथी लेल चिंतित छी। डाक्टर साहेब दीर्घ साँस छोड़ैत बजला—की करू अपने गाम आ अपने देसकोस अनभुआर बुझना जाइत अछि। अस्पताल खोलब से रघुनियाँ मानि नइँ रहल अछि। एम्हर दरिभंगा सँ दिल्ली धरिक डाक्टर कें कहलियै जे कनी टाइम देब' पड़त तँ तकरा लेल ककरो ल'ग अपन क्लिनिक छोड़ि टाइम नइँ छै जे एहि देहात मे आबि एक्को घंटा समय देत। उल्टे हमरे कहैत अछि जे एत्तै चलि आऊ, हमरे नर्सिंग होम मे बैसू। अऊ बाबू जँ पाइए कमेबाक रहितय तँ अमेरिके मे रहितौं। ओत' जखन ई डाक्टर सब कोनो कन्फ्रेंस सब मे भेटैत छल तँ बड़का-बड़का गप्प करैत छल जे लौट आइए हम सब हैं आ एत' एलौं तँ लुलुआ देलक। सब खाली पाइ कमेबा लेल बेहाल अछि चाहे जायज तरीका होइ किंवा नाजायज। ई सब डाक्टरी नइँ वेश्यावृत्ति करैत अछि। परंतु हम तँ कहब जे ई सब तँ एहू सँ खसल अछि। एहेन बात नइँ जे अपवाद नइँ अछि मुदा ओ अपवादे अछि।

एतबे मे डाकपिन एक टा रजिस्ट्री नेने हाजिर भेला। रजिस्ट्री डाक्टर साहेबक नामे छलनि ओ पढ़ला आ तकरा बाद हुनकर चेहरा आर तनावग्रस्त भ' गेलनि। ललन पुछलखिन—की भेल? डाक्टर साहेब—कलक्टरक ऑफिस सँ चिट्ठी अछि। हमर वीसाक अवधि नइँ बढ़ाओल जायत आ चूँकि चिट्ठी जारी हेबाक तारीख मे हमर निर्धारित अवधि बीत चुकल अछि तेँ हम आब इल्लीगल माइग्रेंट बूझल जायब तेँ दू दिनक भीतर देश खाली कर' पड़त। दुखक गप्प जे आब हम अपने देश मे परदेशी कहबैत छी आ विदेश मे दोयम दर्जाक नागरिक। ललन तमसाइत बजला—सब टा छोटका भैया के केलहा छनि, अहाँ सनक सुधंग लोकक गुजर नइँ छै आबक दुनिया मे। डाक्टर साहेब हुनका शांत करैत बजला—मानलौं जे सुधीर जे केलनि से नीक नइँ कहल जेतै, मुदा तकर मतलब ई नइँ जे अहाँ हुनका लेल आमिले पीने रहब।

ललनक आक्रोश मे कोनो अंतर नइँ अयलनि आ ओ बजला—अहाँ कें नइँ बूझल अछि भैया, ओ विधायक हुनके संग छनि। दुनू गोटे संगे पहिने ठीकेदारीक धंधा मे छला। अहाँ ककरा सुधंग बुझै छियै? जत' चालीस हजारक कट्ठा कियो कंटीर काका कें देबा लेल तैयार नइँ छलनि से अहाँ सँ पैंसठ दिया देलखिन। बीच मे संतोष भाइ अपन कमीशन मारला। अहाँ हुनका संगी बुझै छियनि मुदा आब ओ बच्चा वाला संगी-साथी संबंध नइँ छै आ ने आब अपन गाम वैह गाम रहल अछि। सब अपन-अपन सुतारय मे लागल अछि। रघुनिया कें हम पुछलियै तँ ओ सब टा खेरहा कहलक! ओ तँ जमीन देबा लेल तैयारे छल, संतोषे भाइ ओकरा भड़का देलखिन। जाहि सँ अहाँ कें कम्मे दाम पर ओ जमीन बेच' पड़य। रघुनियाँ तँ एखनो देब' लेल तैयार अछि, अहाँ जगह पर हम रहितौं तँ हिनका सब कें बापक बियाह पितियाक सगाइ करा देबनि। डाक्टर साहेब बजला—की सुधीर आ की संतोष सब एक्के रंगक अछि! एक टा भाइ भ' धोखा देलक आ एक टा मित्रताक नाम पर। हमरा तँ आब अमेरिका लौट जेबाक अलावा कोनो विकल्प नइँ अछि मुदा अहाँ चिंता नइँ करब। हम भने एलौं! खाली पाइए गेलै ने! ओ कत्तौ टिकलै अछि ककरो लग, मुदा लोक कें चिन्हबाक अवसर तँ भेटल। अहाँ जे व्यवसाय अपना लेल कर' चाहै छी से करू आ धीया-पुताक पढ़ाइ के नीक व्यवस्था सेहो करू! खाली पाइक चिंता नइँ करब। सब टा तमाशा देखलौं। मोनो टूटल मुदा एक टा जिज्ञासा लगले अछि जे सुधीर आखिर एतेक पैघ धोखा देलक कथी लेल। एतबे मे हुनकर मोबाइल पर बारबाराक फोन आयल। बड्ड हर्षित भ' ओ कहलखिन—आइ हैव लर्न्ट हाउ टू वीयर ए साड़ी एण्ड आइ हैव ऑलसो स्टार्टेड माइ हिन्दी क्लासेस। डाक्टर साहेब एम्हर सँ उतारा देलखिन—देट्स गुड बट आइ एम कमिंग बैक डीयर। बारबारा—व्हाट हैपेन्ड? डाक्टर साहेब—नथिंग बट दिस इज नॉट माइ इंडिया, दिस इज नॉट दैट इंडिया एबाउट ह्वीच यू नो रादर दिस इज ए डिफरेंट इंडिया ह्वेयर आइ हैव नो प्लेस। आइ एम एन एन.आर.आई. हेयर। सो आइ एम कमिंग बैक डे आफ्टर टूमॉरो।

डाक्टर साहेब सीधे विदा भेला आ पटना सँ दिल्ली लेल फ्लाइट ल' दिल्ली पहुँचला। हुनकर न्यूयार्क लेल कनेक्टिंग फ्लाइट चारि घंटा बाद छलनि। ओ एयरपोर्ट सँ टेलीफोन बूथ सँ सुधीर कें फोन लगौलनि। दिल्लीए के नम्बर देखि सुधीर एहि बेर रिसीव कयलनि। डाक्टर साहेब एम्हर सँ बजला—सुधीर हम विभूति, फोन काटब नइँ! धन्यवाद देबाक छल जीवन मे एक टा अनुभव देबाक लेल मुदा एक टा प्रश्न ईहो छल जे किऐ केलौं एना अहाँ। उम्मीद अछि जे कम सँ कम ई प्रश्नक जवाब अहाँ ईमानदारी सँ देब। सुधीर लेल आब बचबाक कोनो रास्ता नइँ छलनि ओ बजला—तँ की करितौं? बाबूजी अपन सब टा संपत्ति अहाँ लेल लुटा देला, हम की हुनकर बेटा नइँ छलयनि। डाक्टर साहेब—हँ छलियनि आ ललन। अहाँ तँ ओकरो अधिकार छीन लेलियै। अहाँक बच्चा सब दिल्लीक महँग सँ महँग स्कूल मे पढ़ैत अछि, अहाँक संपूर्ण घर एसी अछि आ ओकरा लग ढंग सँ रहबाक लेल घरो नइँ, ई कोन न्याय। अहाँ कें जँ बाबूजीक ई गप्प पसीन नइँ छल जे ओ अपन तीन बेटा मे सँ एकमात्र बेटा पर अपन संपूर्ण संपत्ति आ स्नेह लुटा देलनि तँ हुनका सब कें अंतिम समय मे एतेक कष्ट द' अहाँ कोन नीक काज केलौं। अहाँ कें जँ ओ अपना प्रति कयल पैघ अन्याय बुझायल तँ अहाँ माय-बाबूजी आ ललनक प्रति जे केलौं से कोन न्याय भेलै? खैर एतबे बुझबाक आ कहबाक छल। ई कहैत ओ फोन राखि देलखिन।

एकर बाद ओ बगले मे एक टा मैगजिन स्टॉल पर गेला आ समय काटक लेल एक टा पत्रिका कीनला, मुदा पढ़' मे मोन नइँ लगलनि।

प्रतीक्षाक अवधि सेहो खतम भेलनि ओ विमान मे अपन सीट पर बैसला आ बारबारा कें फोन क' मोबाइल स्वीच ऑफ क' देलखिन। एयरपोर्ट पर कीनल ओहि पत्रिका कें फेर सँ उनटाब' लगला। हिनकर सीटक बगल मे एक टा विदेशी बैसल छल, ओ हिनका पत्रिकाक पाछू दिस इशारा करैत पुछलकनि—ह्वाट इज रीटेन बीनीथ द इंडियन फ्लैग। ओ पछुलका कवर दिस नजरि देलनि, ओत' तिरंगाक फोटो छलै आ संगहि लिखल छलै 'मेरा भारत महान'। ओ ओकरा ट्रांसलेट करैत उतारा देलखिन—'माइ इंडिया इज ग्रेट।' ओ विदेशी हिनका फेर प्रश्न केलकनि—आर यू एन इंडियन। डाक्टर साहेब जवाब देलखिन—नो एन.आर.आई. नॉन रेसीडेंटल इंडियन। एतबा कहि ओ खिड़कीक बाहर देख' लगला। आब विमान रनवे पर अपन गति पकड़ि लेने छलै आ कनेके काल मे जमीन छोड़ि देलकै आ धीरे-धीरे डाक्टर साहेबक नजरि सँ सब टा चीज छोट होइत गेलनि।



संपर्क : **लैब नं. 104, एन.आई.पी.जी.आर. जे.एन.यू. कैम्पस, अरुणा आसफ अली मार्ग नई दिल्ली-110067**
मो. : **9968446606**

वैदिकी हिंसा

तारानंद वियोगी

राति मे सब क्यो विचार क'क' सूतल छल जे भिनसरबे उठनाइ छै, झटपट तैयार हेबै आ भगवती स्थान हाजिर। पहिल जे परीक्षा हेतै, से अपने छागरक। साँझे खन पंडा सँ गप-सप सेहो भइए गेल रहै। मुदा, सब सँ पहिने निन्न टुटलनि बुल्लू राजा के। ओ दुनू हाथ सँ आँखि मिड़लनि आ माँ केँ उठब' लगला, 'मम्मी गे, उथ। बकली भेमियाइ छौ।'



बकरी, माने कि छागर! भेमियायल नइँ छलै। मुदा बुल्लू राजा केँ तीन मासक हिस्सक छलनि। जहिया सँ घर मे छागर आयल छलै, सब सँ पहिने बुल्लुए राजा उठै छलाह। शुरुआती किछु दिन धरि छागरो मरदे भेमियायल छलै ठीके। बुल्लू उठथि आ माँ केँ उठाबथि 'मम्मी गे उथ। बकली भेमियाइ छौ।' बड़ लोक हुनका बुझावनि जे रौ बौआ, ई बकरी नइँ छियै, छागर छियै —छा... ग... र। एकरा 'छागर' कहबाक चाही। बुल्लू तेजगर लोक छला। ओ मानियो गेल छला जे ई छागर छियै। अहाँ जँ कहितियै 'छागर', तँ ओ बुझि जैतथि जे अहाँ हुनका 'बकली' दिय' कहि रहल छियै। मुदा, ओहि छागर संग हुनका बहुत दोस्ती रहनि। अहाँक देल नाम ओ कोना कबूल करितथि? तीने सालक छला, ताहि सँ की?

शुरुआती दिन मे छागर थोड़े दिन भेमियायल छलै ठीके। मुदा, जल्दिए रिता गेल। परिवारक एक सदस्य बनि गेल ओ। ताहू मे एहन सदस्य, जकर चिंता सब केँ रहै छलै। पहिल दिन जहिया बुल्लू ओकरा संग दोस्ती कर' गेल छला, ओ हुनका उठा क' पटकि देने छलनि। बुल्लू केँ बड़ जोर तामस उठल छलनि। बुल्लूक पापा सेहो तमसा गेल छला। छागर केँ मार' दौगल छलखिन। मुदा दादी हुनका रोकि देने रहनि, 'नइँ मारियै बौआ। भगवतीक निहुँछल छियनि।' दादीक बात के मर्म केँ बुल्लू कतवा-की बूझि सकल हेता, से सब क्यो बूझि सकै छियै। मुदा, हुनका ई जरूर लागल छलनि जे ई जे क्यो बंधु थिक, किछु स्पेशल जरूर थिक। अपन तामस केँ ओ जल्दिए बिसरि गेल छला आ दोस्तीक हाथ फेर बढ़ौने रहथि। एहि बेर छागर सेहो मानि गेल छलै। आ तकर बाद तँ एहि तीन मासक अंतराल मे एहि दुनूक दोस्ती तेहन परवान चढ़ल जे तकर जँ खिस्सा कह' लागी तँ हमर ई खिस्सा फीका पड़ि जायत। जखन देखू तखन बुल्लू अपन बकली संग। पापाक एक टा दोस बुल्लू सँ चौल करथिन—

—एँ रौ बुल्लू, मासु खाइ ले ककरा ककरा बजेबही

—छब केँ बदेबै।

—मौसी केँ बजेबही की?

—हँऽऽ... मौछियो केँ बदेबै।

—रे, तँ कनी पहिनहि बजा ने ले। एहन कड़गर छागर आ से एसकरे रहै छौ।

मौसी केँ बजा ले आ बियाह करा दही।

आब बुल्लू केँ की पता जे जकर मासु खायल जाय तकरा संग मौसीक बियाह नइँ भ' सकै छै। मुदा ओ 'नइँ।'

—किए रौ?

—एँह, मौछी हमला बकली केँ मालतै। आ, ओ भरि पाँज क' पकड़ि क' छागरक गरदनि मे लटकि जाथि। से, एहन-एहन तँ बात छलै। घर मे अक्सरहाँ चर्चा होइ जे छागर कटतै तँ मासु खेबै। बुल्लू सेहो बाजल करथि —माछु खेबै, माछु खेबै। मुदा, ओ अलग बात छल। ओ बात एहि दोस्ती केँ कोनो तरहें प्रभावित नइँ क' सकैत छल।

बकली, माने कि छागर, भेमियायल छलै नहि। असल मे बुल्लूक निन्न दोसर ओजह सँ टूटल छलनि। बाहर सड़क पर बड़ जोर हल्ला भेल रहै। अष्टमीक राति रहै कि ने! बुल्लूक घर भगवती स्थानक बाट पर सड़कक कात मे रहनि। राति मे भगवती स्थान मे निशा-पूजा भेल रहै। लोक एकरा निशाँ-पूजा कहै। ई भगवती महामाया अग-जग मे नामी। निशापूजा मे तांत्रिक अनुष्ठान राति भरि चलै। ताहि मे जानि नइँ कत'-कत' सँ पियाक सब, गजेड़ी -नशेरी आ बॉस-बादशाह सब उनटि क' आबय। तीन बजे राति धरि तँ पूजे चलल हैत। भिनसरबा मे ई पियाँक लोकनि मारि हो-हल्ला नइँ करै जेताह तँ आर की करता? आ ताहि सँ निन्न टूटल छलनि बुल्लू राजाक।

माँओ तुरंते उठि गेल छली। ओ पापा केँ उठब' लागल छली—'उठबै नइँ? उठबै नइँ?' 'उँ... उँ...' करैत पप्पोक निन्न टूटल रहनि आ बाजल रहथि, 'उँह, चाय बनाउ पहिने।' मुदा बुल्लू राजा केँ बकली देखबाक रहनि। माँ केँ ल'क' ओ आँगन मे आबि गेला। बकली-घर मे बकली ओंघाइत रहै। जहिना कि बुल्लू पहुँचला, दुनूक गराजोरी शुरू भ' गेल छल। दुनू-तीनू घर मे आ दरबज्जा पर पाहुन सब सुतल छलाह। अन्हार एखन रहबे करै। बुल्लू केँ छागर-संग रमल देखि क' माँ फूल तोड़' चलि गेली। आब कने काल मे बाबा उठता, दादी उठती, सब क्यो उठत। तखन, सब क्यो पूजा कर' जायत। आइ बकली कटतै। बुल्लू माछु खेता! सब क्यो माछु खायत। आइ बुल्लू नबका धोती बला 'कुलता' पहिरता। हुनका पापा कीनि देने छनि। ओह, किऐ ने सब जल्दी-जल्दी 'उत्थै' छै!

बुल्लूक पापा आठ बजे उठ'बला पार्टी रहथिन। आठ बजे सूति क' उठता, नव बजे धरि चाह पीता, दस बजे धरि जलखै करता, तकरा बाद कोनो चौक पर जाक' ताश खेलेताह। दुपहर मे खा-पी क' फेर वैह। साँझ मे फेर वैह। मुदा, बुल्लू आ हुनकर बकली मिलि क' तीन मास मे हुनको सुधारि देने रहनि। भोरे-अन्हारे बुल्लू तंग करब शुरू करनि, 'पापा, बकली भेमियाइ छह, गुल्लल-पात लाब' —मने गुल्लरि के पात आनि दियौ। ...अंदी-पात लाब' दिलेबी-पात लाब'...

असल मे, अपनो जे स'ख चढ़ल रहनि तकरो दवाब हुनका पर छलनि। पिताजी जहिया सँ नाजिर बनल रहथिन, घरक आमदनी बढ़ि गेल रहनि। बुल्लूक मोन खराब भेल रहै तँ तही मे माताराम छागर कबुल केने रहथिन। तय केने रहथि जे दशमी मे छागर देताह मुदा दशमीक समय मे, एहि परोपट्टा मे छागर भेटबैया कत'? डेढ़ हजार-दू हजार छागर एक्के दिन एक्के भगवती लग बलि पड़ैए। पोसै तँ अछि नइँ सब क्यो। तखन तँ कीनि क' आनू। समान उपलब्ध रहत, तखने ने टको आगू मे भेटत। हुनकर यार-दोस्त सब विचार क'क' तीन मास पहिने कोसिकन्हा दिस ढूकल रहथि। बड़ी दूर मे जाक' ई छागर भेटल रहनि। जुलुम के कड़गर। दाम छब हजार। दोस लोकनि तेख चढ़ा देने रहनि — नाजिर के बेटा छहक बाबू। सौंसे गाम मे तोहर छागर जँ 'फस्ट' नइँ केलक' तँ की केलहक? साढ़े पाँच हजार मे छागर ओ कीनि अनने रहथि। आ से छागर सौंसे गाम मे ठीके फस्ट केने रहए। यों मोट के ओकर गरदनि, दोस सब कहनि पाड़ा छियै, पाड़ा। यों सोंटल देह, चलय तँ धरती दलमल-दलमल करै। ककरा नइँ मोन मे सेहंता जागल हेतै जे दू बुट्टी मासु एकर जँ भेटितय! बघुआ क' ताकय तँ केहनो जाबिर जनाना एक बेर सहमि जाथि। ताहि छागर के मालिक रहथि बुल्लूक पापा। सीना तानि क' चलथि। वर्णन क'क' सुनाबथि जे ई छागर कोन धरानियें हम कीनि क' अनलहुँ, आ कोना एकरा दाना खुआबै छियै आ गुल्लरि के पात कत'-कत' सँ आनै छी। से, दवाब हुनका अपनो रहनि आ बुल्लू सेहो एम्हर कड़गर महाजन बनल रहथि। जें कि पापा कने अलसाथि, बुल्लूक तान शुरू भ' जाइन—हौ पापा, बकली भेमियाइ छह...

चाह पीबिक' बुल्लूक पापा उठला आ बहरिया टोल दिस विदा भ' गेला। हुनका बजनियाँ सब केँ बजा क' अनबाक रहनि। दशमीक समय मे ओहुनो बजनियाँ के बड़ फेदरति। गाम मे बहुतो लोक धनीक भ' गेलाहें, सब केँ बजनियाँ चाहिऐक। एम्हर कुल मिला क' दुइए टा बजनियाँ पार्टी। कतबो अहाँ मजदूरी आ बकसिस देबै तँ तैयो ओहि सँ बेसी दस घर मंगल बजा क' ओ सब कमा लेत। तें बजनियाँ केँ टाँट। तखन तँ, गाम मे अहाँ प्रभुत्वशाली छी, तकर एक टा ईहो पहचान भेल जे दशमी मे अहाँक छागरक संग बाजा बाजल। बुल्लूक पापा सब टा जस आ सब टा प्रतिष्ठा एक्के टा छागर मे कमा लेब' चाहै छलाह। कत'-कत' सँ ओ अपन कुटुम सब केँ मासु खाइ लेल बजौने रहथिन। गाम मे फस्ट छागर के मालिक छला, प्रतिष्ठाक प्रश्न रहै।

एम्हर बुल्लू के माँ हबड़-हबड़ चाह बना क' पाहुन सब केँ देलखिन आ नहाइ लेल चलि गेली। दादी पूजाक सरंजाम कर' लगली। जौ-अच्छत तँ घर मे रहै, मुदा कुश निपत्ता। कुश रहतै कोना घर मे? कहियो कुशोत्पाटिनी दिन बाबू साहेब जाथि कुश उखाड़य तखन ने? पड़ोसिन सँ माँगिक' अनने छली पछिला बेर। ताहि मे सँ टू टा बीट जुगुता क' रखने रहथि कोनो कोन मे। एखन से भेटिये नइँ रहल छलनि!

ओम्हर दरबज्जा पर पाहुन लोकनिक बीच किसिम-किसिम के गप्प-सरक्का चलि रहल छलै। चर्चाक विषय की तँ बलिप्रथा। एक टा क्यो पाहुन बलिप्रथाक विरोध मे बाजल रहथि, तिनका सब क्यो धेने रहनि।

—अहाँ सब जे कहू, मुदा हम बलिप्रथा के विरोधी छी

—अहाँ मासु खाइ छी कि नहि?

—हँ। मासु तँ खाइ छी। मुदा तकर ई मतलब नइँ जे...

—मतलब के बात छोड़ू। अपने जखन मासु खाइ छी तँ अहाँ बलि के विरोध कोना क' सकै छी। पहिने अपने सुधरू। हम सुधरेंगे युग सुधरेगा।

—तँ एकर ई मतलब नइँ भेलै जे जगत जननी जिनका मानै छियनि, तिनका सामने मे आनि क' छागर के गरदनि काटि दियौ।

—यौ सरकार, अहाँ विज्ञानी आदमी बुझा पड़ै छी

—हँ! विज्ञान-बुद्धि राखब कोनो बेजाय बात तँ नइँ भेल।

—नै! बेजाय कोना हैत। लेकिन, एक

टा बात कहू।

—की?

—विज्ञान-बुद्धि दस-बीस बरख पहिने बेसी रहै गाम-घर मे, आ कि आइ-काल्हि बेसी अछि?

—आइ-काल्हि बेसी अछि।

—एक टा बात आरो कहब?

—पूछू।

—भगवती-स्थान मे छागर आ पाड़ा के बलि दस-बीस बरस पहिने बेसी पड़ै छलै कि आइ-काल्हि बेसी पड़ैए?

एहि प्रश्नक उत्तर बेर मे सब क्यो झौहरि कर'लगला—आइ-काल्हि बेसी पड़ैए, आइ-काल्हि बेसी पड़ैए...

सात बजैत-बजैत सब क्यो नहा-सोनाक' तैयार भ' गेला। बुल्लू अपन धोती-कुरता-सेट बला नबका कपड़ा पहीरलक। दादीक एक अध्याय दुर्गापाठ समेत भ' गेलनि तँ बहरेली आ बुल्लू केँ तिलक-ठोप लगा देलखिन। बुल्लू मस्त भ' गेलाह। दौगल-दौगल गेला आ अपन तिलक-ठोप केँ छागरक मूड़ी मे रगड़ि ओकरो तिलका देलखिन। तखन ओ हल्ला कर' लगला—तलै-तल, तलै-तल। आब बकली कततै। आब माछु खेब्बै...। तलै-तल, तलै-तल...

मुदा, पापा केँ घुरैत-घुरैत आठ बाजि गेलै। ओहो बूझि गेला जे बजनियाँ केँ बजाब' मे तेरह आफत कोना होइ छै। ओ लोकनि पहिने गमैया छागरक बेर मे बाजा बजबितथि, तखनहि कोनो दोसरक तलता देखि सकैत छला। गमैया माने डीही लोकनिक दिस सँ। बहुत सरंजाम होइ छै तकर। एक जोड़ छागर, एक जोड़ भेड़ा आ तै पर सँ एक टा पाड़ा। बजनियाँ लोकनि कहनि जे जाउ ने, अहाँ सब क्यो केँ लेने अबियनु। एहि ठमा तँ हम सब छीहे, बाजा बजा देबै। मुदा, ई गप कोनहुना मान'बला नइँ छलनि। भाइ, अपन घर-आँगन मे बाजा बाजल नहि, अड़ोसिया-पड़ोसिया पाहुन-परक देखलनि-सुनलनि नइँ तँ एहन बाजाक बजनहि की फैदा?

बजनियाँ लोकनि आबि गेला। गोसाउनि घरक मोखा पर धूप-दीप जराओल गेल। ओसार लागि क' ओ लोकनि मंगलध्वनि बजाब'लगला, 'जय जय भैरवि असुर भयावनि पशुपति-भामिनि माया...' आ, शोभायात्रा बहरेबाक तैयारी हुअ' लागल। स्वीटी दीदी छागर केँ पहिरेबाक लेल माला गथने छली। से माला पहिराओल जाय लागल तँ पता लगलै जे ओ छोट भ' गेलै। माताराम स्वीटी दीदी केँ बोकनि, तोरा कनिञो टा अँटकर नइँ भेलौ गै! कहू त'। ओतेक अगरमस्त छागर लेल एतनी टा माला।' माँ थोस-थाम्ह केलखिन, 'छै ने। एक टा माला आरो छै। बौआ ले' बनेने रहियै। वैह पहिरा देथुन।'

—कहू तँ भला। बौआक माला, आ से छागर केँ पहिरा दिऐक?

—तँ की हेतै। ओहो तँ भगवतिएक निहुँछल छियनि!

आ कि, बुल्लू शुरू केलनि हल्ला, 'हँ दै। पैला दही। हँ दै। पैला दही।'

शोभा-यात्रा निकलि चलल। आँगन धरि सीमित 'जय जय भैरवि' आब अड़ोस-पड़ोस केँ गनगनाब' लागल। यात्रा मे बीस गोटे सँ कम की रहल हेता। बीच-बीच मे सब नारा लगबथि —बोलो बोलो, मैया जगदम्बा की ज...य! बजनियाँक ढोल जेना साफ-साफ जैकारा दै—काली तारा, काली तारा... पिपहीवादक आब नबका धुन पकड़ि लेने छल, 'बाबा बैदनाथ हम आयल छी भिखरिया, अहीं के दुअरिया ना...'। बुल्लू राजा उछलि-उछलि क' चलि रहल छला। उछलै छलै सब के हृदय, पप्पो के, माँओ के, दादियो के, मुदा तकर प्रत्यक्ष आनंद बुल्लुए उठा रहल छला।

भगवती स्थानक प्रांगण बड़की टाक। ओहि ठाम पाँच सय लोक अटान ल' लियए, ततबा तँ जरूरे। आ से प्रांगण लोक सँ भरल छल। गौआँक लेल तँ ई बेरे छलै, सब घर सँ छागर कटेबाक संकल्प छलै, आ तकर ई शुभ मुहूर्त्त बीति रहल छल। अनगौंओ सब मुदा मेला देखबाक संग-संग बलियो देखबाक कुतूहल मे ढेरीक संख्या मे जुटि गेल छल। प्रांगण मे लोकक मिस पड़ै छलै। ताहि पर सँ एक टा ढोलबज्जा अपन मोन, प्राण आ आत्माक पूरा शक्ति लगा क' ढोल केँ पीटि रहल छल आ धुन निकलि रहल छल —काली तारा... काली तारा...। धिया-पुता आ किछु आनंद-मूर्त्ति लोक सेहो ओकरा घेरने रहै आ ओकरा संग नाचि रहल छल। ओ घामे-पसेने चूर छल। मुदा, ओकर कला बहुतो केँ आकृष्ट करै छलै। लोक ओकरा ढोल पर दसटकही चढ़ाबै आ दारूक पाउच दैक। पाउच केँ ओ कुरताक जेबी मे राखय जे कि पहिनहि सँ बेस फूलल छलै। जें कि ओ कने थाकनि अनुभव करय, ढोल राखि एकात मे जाय आ पाउच केँ, दाँत सँ चीड़ि मुँह मे उझीलि दै। अइ बेर मे क्यो-ने-क्यो पंडा-पुत्र सेहो ओकर संग ध' लै। भोर सँ ई लोकनि कत्ते पीबि गेल छला, तकर हिसाब अर्जुन झा छोड़ि क' ककरो लग नइँ छलै। अर्जुन झा बतहबा। गाम मे हरेक साल दू-चारि लोक बताह होइ छल। ओहि मे सँ गोटे-आधे आनंदमूर्त्ति बहराबए। एखन ई स्थान अर्जुन झा लेने रहथि। आब जाधरि जीता अर्जुन, ईश्वरीय संदेश केँ आम जनता धरि वैह पहुँचाबैत रहता।

अर्जुन झा ललका सालुक पहिरने छला आ ललके सालुक ओढ़ने छला। पाँच हाथक काया आ ताहू सँ पैघ एक लकलक पातर छड़ी हाथ मे। ताहि छड़ी मे मारिते रास ललका कप्पा ठामठीम बान्हल। बड़का-बड़का केश, ताहि मे जट्टा पड़ल, पैघ-पैघ दाढ़ी-मोंछ, से जँहपटार चतरल-छितरल। जाहि दिस ओ हुलथि, जोर सँ होहकारी देथि, 'होऽऽ ह... आ गिया जमराज। बोलो बोलो चंडी-कतैनी की...।' हुनकर आवाज मे ततबा जोश रहनि जे जहो-ने-सेहो हुनकर नारा मे संग पूरि दैनि, 'जय'। बच्चा सब थपड़ी बजाक' हो-हो करय। तकर पूरा आनंद अर्जुन झा लेथि। प्रांगण के जाहि कोन मे ओ चलि जाथि, दस-बीस लोक हुनकर संग धेने रहनि। से, एक टा ओ ढोलबज्जा आ दोसर ई अर्जुन झा —दुनू मिलि क' मिस पड़ैत एहि भीड़ मे हलचल मचा रहल छला।

भव्य आ शुभ्र-शाभ्र ई प्राचीन भगवती मंदिर जतबा छल, ताहू सँ बेसी सोहाओन लागि रहल छल। मंदिर केँ खूब क' सजाओल गेल छलै, बात ततबे नइँ छल। भक्त लोकनिक मुँहेंठ सँ बहरा-बहरा क' उल्लास आ उमंग मंदिर पर जा खसैत छल। एक-एक चुहचुही मिलि क' मंदिर केँ हजार चुहचुही सँ भरि द' रहल छल। मंदिरक मुख्य द्वार पश्चिम दिस खुलैत रहै। ताहि ठाम दुनू दिस टू टा पताका फहराइत। तकरा आगू मे छोटका महिखा गाड़ल रहै। जेना एक टा विकराल राक्षस कंठ धरि माटि मे गड़ल हो आ अपन दुनू हाथ ऊपर उठौने हो। एही दुनू हाथक बीच मे छागरक गरदनि फँसाओल जाइत छल। गरदनि फँसेलाक बाद ऊपर से किल्ली ठोकि देल जाइक। एक पंडा छागरक टाँग सब केँ आपस मे फँसा क' पाछू दिस जोर लगा क' घीचै। दोसर पंडाक हाथ मे तरुआरि। तरुआरि उठैबा सँ पहिने

पंडा जजिमान दिस याचनाक हाथ बढ़ाबथि। दसटकही सँ नमरी धरि। क्यो-क्यो दारूक पाउच सेहो। क्यो छागर एक बेर तँ क्यो दू-तीन बेर पुकार लगबै, 'में...' कि ताबत तरुआरि ओकरा घररि दै।

छोटका महिखाक एक लग्गा आगू बड़का महिखा गाड़ल छलै। तकरा लागल भरि छातीक तरहरा खूनल। महिखा ततबा मजगूत छल जे अरना पाड़ा केँ जँ तरहरा मे खसाक' ओकर सींग महिखा मे बान्हि देल जाय तँ की मजाल जे एक्को बेर ओ 'बोऽऽ' के टाहि मारि सकत। पाड़ा केँ घररि क' नइँ काटल जाइत छल। ओकरा पर मारल जाय छह। कै छह मे कोन पंडा कै मन के पाड़ा केँ काटलनि, ताहि सँ पंडाक अकबाल नापल जाइत छलनि। एक्के छह मे पाड़ा काटि देनिहार पंडा जीक चरण ततेक लोक छूबनि आ ततेक दक्षिणा भेटनि जे हुनका अकच्छ हेबाक भाव प्रकट कर' पड़नि। मुदा, मानुषी शक्ति सँ ई अकबाल संभव नइँ भ' पबैत छल। एहि असंभव केँ संभव बनबैत छल दारूक पाउच। आ, ढोल बज्जाक नगाड़ा। आ, अर्जुन झाक नारा, 'आ गिया जमराज।' जहिना कि एक टा पाड़ा कटि जाय, अर्जुन झा बड़े चुमकीक संग चिकरथि, 'एक विकेट डाउन...' ओ चुमकी पंडा केँ उमंग सँ भरि दै छलनि।

बुल्लूक शोभायात्रा अबैत-अबैत भगवती स्थान लग आबि गेल रहय। बुल्लू राजा बहुत प्रसन्न रहथि। दोस कका हुनका उठा क' कन्हा पर बैसा लेने रहनि। घोड़ाक सवारी के मजा ल' रहल छला, बुझू। ताहि पर सँ ढोल-पिपही बजैत रहै। हँसी-ठहक्का चलैत रहै। दोस कका पुछथिन, 'की बुल्लू, मस्ती छै ने?' बुल्लू गरदनि केँ टेढ़ करैत, मुँह केँ कलाकारी मे बिचकबैत अनधुन हँसीक संग उतारा दैनि, 'हँऽऽ' आ दुनू हाथ हवा मे लहरबैत नारा लगबथि, 'दुलगा माय की जाय।'

प्रसन्न हुनकर पापा सेहो बहुत छला। बाट मे बहुतो बलिदानी-पार्टी सब भेटनि। ओ सब छागर कटा क' घुरि रहल रहय—काटल छागर केँ लादने। सब क्यो एक भरपूर नजरि हिनका छागर पर दैनि। पापाक नजरि ओहि आदमीक आँखि पर रहैत छलनि। आदमीक आँखि मे एक अजीब तरहक भाव पलछिन मे देखा जाइक। एहि मस्ताना छागरक लेल ओहि आँखि मे प्रशंसा रहै। ताहि संगे, एक सूक्ष्म व्यथा सेहो रहै जे हमरा छागर सँ हिनकर छागर कड़गर छनि। ताहि संगे, एक उद्दीप्त लालसा सेहो देखाब दै जे वाह, एहि कड़ाचूर छागर के मासु जँ दुइयो बुट्टी भेटि जाय तँ की कहना छै! बुल्लूक पापा एही अठखेली सँ आनंदित भ' रहल छला। चिन्हार लोक सब कहनि, 'भाइ, अहाँ तँ डिग्गा बजा देलिऐक।' ओ 'हें हें' हँसी हँसथि। हुनकर तपस्या पूर्ण भ' गेल छलनि।

मंदिर-प्रांगण के सिंहद्वार लग मे चारि टा कल गाड़ल रहै। मंदिर गेनिहार लोकनि ओहि ठाम पयर-हाथ धोथि। ओही कल पर छागर केँ नहाओल जाइत छल। कले के बगल मे प्राचीन कूप छलै। ओहि सँ अछिंजल भरल जाइक। बुल्लूक पापा, सब गोटे मिलि क' छागर केँ नहाब' लगला। छागर केँ, एहि तरहें पकड़ि-धकड़ि क' नहायल जायब पसिन्न नइँ पड़ि रहल छलै। ओ कुनमुना रहल छल, उछलकूद मचा रहल छल। बुल्लू केँ मुदा ई दृश्य बड़ नीक लागि रहल छलै—इह, तूं बल चलाक... पूजा मे सब क्यो नहायल आ तू नइँ नहेबऽऽ। बुल्लू सेहो आगू गेल आ चुरूक मे पानि ल' क' छागरक माथ पर छिटका मारलकै। छागर केँ ई आरो बेजाय लगलै। ओ ढाही लेबा लेल बढ़ल आ बुल्लू केँ ठेलि देलकै। ई साइत उलहन छलै, 'अरे बुल्लू, तू हूँ... जेना सब क्यो करैए तहिना तहूं करबह! मुदा, बुल्लू केँ की पता?'

छागर केँ नहा-धुआ क' मंदिर आनल गेल। मंदिर मे भारी भीड़ छलै। छागर सभक नंबर लागल रहै। एक दर्जन के करीब पंडा छला, जे बलि-पूजा करा रहल रहथि। पहिल पूजा होइन भगवती के। तखन तरुआरि के पूजा कयल जाय। तखन, फूल आ अक्षत मंत्रा केँ छागरक माथ पर चढ़ाओल जाय। कने काल छागर अप्रतिभ रहय। तखन ओ गरदनि केँ झटका दियय आ फूल-अक्षत केँ निच्चाँ खसा दै। पंडा कहथिन-भए गेल परीक्षा। आब दक्षिणा दियौ।'दक्षिणा द' क' जजिमान अपन छागर केँ लेने महिखा लग हाजिर होथि।

महिखाक चारू कात खून के धार जमल छल। खूने पर सँ खून आ ताहि पर सँ फेर खून। छागरक संख्या ततेक बेसी रहै जे बलि केँ रोकि केँ एखन सफा नइँ कराओल जा सकैत छल। पंडा कोशिश करथि जे काटल छागर धड़ केँ अनामति जगह दिस फेकल जाय। मुदा से जगह बहुत तेजी सँ निघटि गेल छल। वातावरण मे एक भारी-भारी सन गंध व्याप्त रहै। एकरा ने दुर्गंध कहल जा सकतै रहै ने सुगंध! बस भारी-भारी सन गंध छल, फेफड़ा केँ असहज लागि रहल छल। ई टटका खूनक गंध रहय। एहि गंधक निस्तार के एक्के टा उपाय छल जे वातावरण मे खूब हो-हल्ला व्याप्त रहय। से व्याप्त छल। ई काज क' रहल छला —बजनियाँ, ढोलबज्जा, अर्जुन झा आ मारिते रास उत्साही आनंनमूर्ति लोक सब।

पापा छागर ल' क' मंदिर सँ बहरेला आ महिखा लग अयलाह। सब क्यो हुनका संग छलनि। बल्लू सेहो। बुल्लू जहिना कि महिखा लग आयल, एक टा दोसर लोकक छागर काटल जा रहल छलै। छागरक अगिला दुनू टाँग केँ ऊपर मोचाड़ि क' आ पछिला दुनू टाँग केँ दोसर हाथ सँ पकड़िक' पंडा छागरक मूड़ी महिखा मे देलखिन, आ ओम्हर सँ तीर' लगला। छागर बाजल, 'मेंऽऽ' बुल्लूक ध्यान एही काल मे छागर दिस गेलै। दोसर पंडा तरुआरि उठौलनि आ छागर केँ धररि देलखिन। ताही काल मे कोम्हरो सँ अर्जुन झा जुमि गेला आ चिकरलाह—'एक विकेट डाउन।' बुल्लू केँ बहुत खराब लगलनि। ओ अपन दुनू आँखि मूनि लेलनि। हुनकर छाती जोर-जोर सँ धड़कि रहल छलनि। कंठ सूख' लगलनि। माथ मे लगलनि जे गरम-गरम गोला कोनो नाचि रहल हो। ओ दोबारा आँखि खोललनि तँ खूनक जमल धार पर छागरक धड़ ओंघरा रहल छल। ओ भरि पाँज केँ दोस कका केँ पकड़ि लेलनि।

पापा केँ बुल्लू दिस तकबाक फुरसत एखन नइँ छलनि। ओ कोसिस मे रहथि जे जल्दी से छागर कटि जाय आ जल्दी ओ निचैन होथि। पंडा हुनका दिस अपन याचनाक हाथ बढ़ौलनि। पापा एक टा नमरी हाथ मे ध' देलखिन। पंड़े लोकनि तय क' लेने रहथि जे ई कड़गर छागर अछि तँ एकरा काटै लेल दुनू पंडा अगरमस्त होना चाही। सैह कयल गेल छलै। बूढ़ा पंडा केँ भय रहनि जे एहन कड़गर छागर के मूड़ी महिखा मे अंटबो करतै की नहि! ओ अगरमस्त केँ कहबो केलखिन जे रे, कनी अँटकर कए लही। मुदा क्यो हुनकर कहब पर कान-बात नइँ देलक।

आखिर मे समस्या अयलै वैह। छागरक अगिला दुनू टाँग केँ मोचाड़ि आ उनटा क' आ पछिला दुनू टाँग केँ तौलैत जखन अगरमस्त ओकरा उठेलक आ मूड़ी केँ महिखा मे देलकै, ओ नइँ अँटलै। महिखाक फाँक छोट छलै,

छागरक गरदनि बेस मोटगर छल। छागर आसमर्द क' रहल छल—में... में...

आब? आब की उपाय हैत? एक टा नवजुआन पंडा बजलाह, 'छागरक सींग कैँ पाड़ा जकाँ महिखा मे बान्हि दै छियै आ एकरा घररि दहक।' घररबाक रहनि जिनका, से हाथ मे तरुआरि लेने ठाढ़ छला। हुनका नवजुआनक ई बात बहुत नापसिन्न भेलनि। ओ तमसा क' बजला, 'हौ सार, तू बड़ काबिल। पाड़ा बला विध हेतै छागर मे ?...आ अपन तामस कैँ बहार करबाक लेल नवजुआन दिस पयर उसाहलनि।

नवजुआन पाछू दिस पड़ायल। पाछू खूनक जमल धार छल। धार तर मे सिमटी। से मारिते पिछड़ाह। नवजुआन के संतुलन बिगड़ि गेलनि। ओ धड़ाम सँ खूने पर खसि पड़लाह। कोलाहल मचि गेल। नवजुआनक सौंसे देह, सब टा वस्त्र खून सँ लथपथ भ' गेल। मुदा झट द' ओ उठि क' ठाढ़ो भ' गेला। अर्जुन झा एम्हरे टुघरल अबैत छला। ई दृश्य देखलनि आ हल्ला केलनि —आ गिया जमराज...

नवजुआनक बाप ओही ठाम विद्यमान छला। हुनका ई सब टा दृश्य बहुत अपमानजनक लगलनि। बेटा पर हुनका बहुत क्रोध भेलनि —बुझू त'। सम्हरि क' चलियो-बूलि नइँ सकैए, ई सब दुनिया मे की क' सकत। अर्जुन झाक नारा सुनिक' तँ हुनका आगि लेसि देलकनि। ओ आगू बढ़ला आ नवजुआन कैँ एक आर जोरदार धक्का लगौलनि। ओ खून के धार सँ निकलल अबैत छल, फेर ओही मे ओंघरा गेल। चारू कातक लोक झौहरि कर' लगलै—मारि देलकै, मारि देलकै...

अगरमस्त पंडा छागर कैँ एखनो धरि अपन दुनू हाथ मे तौलने छल। छागर भयावह स्वर मे मेमिया रहल छल। मुदा ओकरा धरती पर राखल नइँ जा सकैत छलै। से केने अशुभ होइतिऐक।

खूनक धार मे ओंघराएल नवजुआन दोबारा उठि क' ठाढ़ भ' रहल छल। सैकड़ो लोकक भीड़ एहि दृश्य कैँ देखि रहल छल। ओ आब आरो खून मे नहा गेल रहए। ओकर केश, मुँह, कान, मोंछ—सब कथू खून सँ सनमा-बटोरबा भेल रहय। ओ थाहि-थाहि क' सम्हरि-सम्हरि क' खूनक धार सँ बहार निकलि रहल छल।

एम्हर, तरुआरिबला पंडा बजलाह, 'चल, राख गरदनि कैँ महिखा मे।' छागरक गरदनि महिखा मे राखल गेल। मुदा ओ कतहु अँटय! तरुआरिबला पंडा तरुआरि उठौलनि। तरुआरिक छीप सपाट छल। ओहि सँ ओ छागरक गरदनि पर धुरमुस देब' लगलखिन। एक। छागर बाजल —मेंऽऽ...। दू। छागर बाजल, 'मेंऽऽऽ...। तीन। छागर शांत...'

ओम्हर, खून मे नहाएल ओ नवजुआन चलि आबि रहल अछि। आ, एम्हर छागर दोसर बेर बाजैए —में... —एही बीच मे बुल्लू राजा अंतिम बेर आँखि खोलने छला। बहुत जोर सँ ओ चिकरला, 'मम्मी गे...'। आ अचेत भ' गेला।

छागर निष्प्राण भेल तँ भेल मुदा महिखा मे ओकर गरदनि अंटि धरि जरूर गेल तरुआरिबला ओकरा घररि देलखिन। सब क्यो बजलाह—माता जगदंबा की जय...

दोस कका बुल्लू कैँ जल्दी सँ कोरा मे उठौलनि आ कल पर दौगल पहुँचलाह। पापा सेहो पाछुए लागल अयलखिन। बुल्लू कैँ पानिक छिज्जा देल गेलनि। ओ आँखि खोलि देलनि। पापा हुनका दुलार कर' लगलनि। बुल्लू पापाक हाथ कैँ धकेल, देलखिन। बजला, 'पापा, हम माछु नइँ खेबऽऽ...'

अर्जुन झा सेहो पाछुए लागल दौड़ल आयल छला। ओ सब टा दृश्य देखि रहल छला। बुल्लूक बात कैँ सुनि क' ओ बजला, 'एक विकेट डाउन...'

पापा, अर्जुन दिस बघुआक' तकलखिन।



संपर्क : **शांति निकेतन**
सी.पी. ठाकुर पथ, शिवपुरी,
पटना-800023
मोबाइल : **9431413125**

स्वाभिमान

रमण कुमार सिंह



चुन्नू आ मुन्नू केँ जनैत छियै अहाँ सभ!...देखने तँ जरूर होयबे मुदा अँखियास नइँ हुअय...अरे उहे जे दुनू गड़ाजोरी केयने दिन भरि बौआइत रहै छै। कखनो ओकरा दुनू केँ जामुन गाछ पर चढ़ल देखबै, तँ कखनो ओ सभ धार मे झिहिर खेलाइत भेटायत...टहटही दुपहरिया मे जखन भरि गामक लोग छाँह तकने फिरे छै। अहाँ ओइ दुनू केँ खेतक आरि पर टहल मारैत देखि सकै छियै। गामक छौंड़ा सभ पोथी-सिलेट ल'क' स्कूल जाय छै मुदा ओकरा लेल धनि सन...कतबो सरकार सर्व शिक्षा अभियान किऐ न चलाय लिअ, मुदा जहिया ऊ दुनू पढ़ि लेतै, तँ बूझब जे ई योजना सफल भ' गेलै...गाम मे के केना रहे छै...ककरा घर मे आइ भानस बनलै कि नइँ...ककर जमाय मास भरि सँ ओगरने छै...कोन छौंड़ी केँ ककरा संग लाट-घाट छै...सब टा खेरहा ओइ दुनू सँ सुनि लीयअ...हँ, मुदा अइ खातिर अहाँ मे धैर्य होबाक चाही...

खैर हमर खिस्साक मुख्य पात्र ई दुनू छौड़ा नइँ छी...ई दुनू तँ हमर खिस्सा के कथानक के जन्म देब'वाला एगो उत्प्रेरक मात्र छी। खिस्साक मुख्य पात्र तँ छियै बिलट बाबा।

बिलट बाबा, उम्र 65 साल, विधुर... कहियो गाम-जवारक नामी सोनार...कतेको सोहागिन लेल गहना गढ़ने हेताह...पढ़ल-लिखल कोनो खास नइँ...क-ट क' नाम आदि लिखे ले जनै छलाह...मुदा हुनक आखर बड्ड सुंदर। खासक क' जखन ओ कोनो बासन या समान पर अपन टकुआ सँ नाम खोदैत छलाह तँ लगैत छलै जेना कोनो सपना बुनि रहल हो। बहुत कमे उमेर मे माय-बाप सँ वंचित भ' ओ टुग्गर भ' गेल छलाह...एगो पित्ति छलनि, उहे हुनकर पालन-पोषण कयलकनि। मुदा जखन घर मे पितिआइन अयलखिन तँ ओहि घर मे हुनका लेल जीवन दूभर भ' गेलै...खैर, पित्तिक सलाहे सँ ओ अपन काज-रोजगार शुरू कयलनि...बिना पुँजी के कोनो काज-रोजगार संभव होइ छै। एहि समय काज अयलनि हुनकर अपन हुनर...ओ एगो झोरी मे छेनी-हथोड़ी ल' क' गामे-गाम बरतन-बासन पर नाम लिखब शुरू कयलनि...अपन कोनो बेस खर्च छलनि नइँ और कोनो तरहक कुलत्त नइँ छलनि, तेँ ओ दू गो पाइ बचा लैत छलाह। खैर ऊ बहुत सस्ती के जमाना छलै। अपन व्यवहार और साख के कारणें ओ आगाँ बढ़ैत गेला...अउर एगो छोट सन दोकान खोलि क' खानदानी रोजगार सोनरगिरी करय लगलाह...कहल जाइ छै जे सोनार केतबो ईमानदार हुअय तँ ओ किछु ने किछु हाथ मारिये लैत छै...मुदा ओ चौबीस कैरेट सुच्चा सोनार छलाह। एको मिसिया केकरो बेइमानी नइँ करैत छलखिन। नतीजा ई भेलै जे हुनके लग लोक गहना गुड़िया बनावे आब' लागल। ओ बहुराष्ट्रीय ज्वैलरी कंपनी के जमाना नइँ छलै और लोक मे डिजाइनर ज्वैलरी के शौक नइँ छलै। एहि खातिर छोट पूंजी के व्यवसायीक दोकान चलैत छलै...लगन के समय तँ हुनका कहियो काल खाना खाइ लेल सेहो पलखति नइँ भेटैत छलनि।

खैर एवं प्रकारे जखन ओ अपना पैर पर खड़ा भ' गेलखिन तँ घर बसाबे के मोन भेलनि...पित्ति-पितिआइन पहिने सँ जोर दै छलखिन। ओना तँ हुनकर जोड़ी-पारीक लोग के दू-दू, तीन-तीन गो धियो-पुता खेलाइत छलनि, मुदा ओ बियाह नइँ करैत छलाह, तँ धिया-पुता कत' से हेतनि।

खैर बियाहो भेलनि, धियो पुता भेलनि। पहिल संतान बेटा भेलनि तखने ओ सोचि लेलखिन जे आब धिया-पुता नइँ करब। ओना हुनका सौख छलनि से एगो बेटी हेतिये, तँ नीक छल। खैर भगवान, एकरे औंर्दा देथुन।

बेटा ओ पत्नी मे तँ हुनकर जान बसैत छलनि। बेटा के खान-पान, पहिनब-ओढ़ब

लेल ओ कुछो करि सकैत छलाह। अपना नहि पढ़ल-लिखल छलाह, मुदा बेटा केँ खूब पढ़ाबे चाहैत छलाह। बेटा पढ़बो केलकनि आ ओकरा नौकरियो भेट गेले। जे कि पढ़ाइ-लिखाइ आजुक जमाना के मुख्य लक्ष्य बनि गेल छै। मुदा एहि बीचे मे हुनक पत्नी संग छोड़ि गेलनि। पत्नीक कमी हुनका आब बुझाइत छनि।

हुनकर बेटा शहर मे रहय लागल। अपन पत्नी आ बच्चा सब के संगे। हिनको कहलकनि जे, बाबू चलू अहूँ ओतय रहब। एतय असगरे की करब...एतौका संपत्ति के बेचि लैत छी। मुदा ओ साफ मना क' देलखिन।

कहलखिन—हौ बाबू...ई हमर पुरखा के गाम थिक। जिनगी भरि सुख-दुख मे एहि माटि-पानि पर हमर गुजर भेल अछि...आब बुढ़ारी मे हम आन ठाम जाक' की करब। हमरा एतय रहय देह। जहाँ धरि एतौका जमीन आ डीह बेचै के बात छै, तँ साफ कहि दै छिय कि डीह कहियो नइँ बेचिह...भले बड़ जरूरत हेतह आकि जमीन नइँ रखबाक हेतह...तँ एकरा बेचि लीहअ। मुदा पुरखा के निशानी डीह के नइँ बेचिह। खैर बेटा बहुत दबाव देलकनि मुदा ओ टस सँ मस नइँ भेलाह। हुनकर तँ मोन छलनि जे बेटा-पुतौह एत' गामे मे रहय। गाम सँ झंझारपुर कोनो दूर तँ छै नइँ...ओतय तँ तँ लोक पहर रातियो केँ चलय तँ घर पहुँचि जेतै। बेटा भोर मे ऑफिस जाय आ साँझ मे घर घूरि क' चलि आबय। हुनको पोता-पोती संग खेलाइ के सौख पूरा हेतनि...आउरो लोग तँ नौकरी करै छै। ओहो सब गामे सँ रोज जाइ-अबै छै। -मुदा बेटा-पुतौह हुकर बात नइँ मानलकनि।

बेटा झंझारपुर बाजार मे घर बनाक' रहय लागल...गाम मे जखन हुनकर पुरना घरक छप्पर खराब भ' गेलै...तँ ओ बेटा केँ समाद पठेलखिन जे गामक घर केँ दुरुस्त करबा लैह...बेटा गाम अयलनि आ कहलकनि जे ठीक छै। आब पक्का घर दू कोठरी के बना दै छी।

बेटा घर बनबा देलकनि। घरक रंगाइ पोताइ भ' गेलनि। दू दिन बाद घरवासक दिन छलनि। एहि बीच मे ऊ दुनू छौंड़ा एक दिन बिलट बाबा के हाल-खबरि लेबे खातिर पहुँचि गेलनि।

गोर लागै छी बिलट बाबा...

खूब नीके रहू बाबू। कतय घुमै छी?

बाबा हम तँ अहीं लग आयल छी, जे घरवास पर भोज और हेतै की ने। अउर अहाँक तबीयत ठीक अछि की ने, यैह जानय आयल छलहुँ।

देखहक हौ बाबू...भोज करते कि नइँ से तँ हमर अशोकबा कहबे ने केलकह। आबै छै तँ पूछबे...भोज तँ करबाक चाही।

बाब...अहाँ के गर कियै बैठल अछि...तबीयत तँ ठीक अछि।

हौ बाबू, आब तँ बूढ़ भेलहुँ...तबीयत के की पूछै छहक। खोंखी के दबाइ कहने छलियै लाबै ल' अशोकबा के उहो भूलि गेलै...

अरे बाबा, ई अहाँक नवका घर पर नाम केकर लिखल अछि।

केकर हेतै, घर हमर छीयै, तँ हमरे हेतै की गामक लोक के।

नै यौ बाबा। अइ पर तँ अशोक कका के नाम खोदल अछि। अपन नाम तँ लोग तबे लिखाबै छै घर पर जखन बाप जीवैत नइँ रहै छै। मुदा अखनि तँ अहाँ जीविते छी आ अहाँक घर पर। ...माने अहाँक जीविते...

आँय, साँचे रौ। भक्क झूट्ठा, तू सब हमरे सँ चौल करै छें।

चौल नइँ करै छी बाबा, बूझि लिअ जे अहाँक बेटाक नजरि मे अहाँक की भैल्यू अछि। विश्वास नइँ हुअय तँ अपने सँ पढ़ि लीअ। नइँ तँ केकरो दोसरा सँ पढ़बा लिअ।

एतबा कहिक' ऊ दुनो फेर दोसरा दुआरि दिस चलि गेल। गाम भरि मे एकरा दुनूक लोक नारद मुनिक अवतार बुझै छै।

खैर, ऊ दुनू तँ चलि गेलै मुदा बिलट बाबाक कछमछी बढ़ि गेलनि। रामबहादुर केँ बाट पर जाइत देखलखिन तँ शोर पाड़लखिन आ कहलखिन जे कने घर पर खोदल नाम पढ़ि केँ सुनाब...ओ पढ़लक। अशोक स्वर्णकार!

आब हुनक बेचैनी आर बढ़ि गेलनि... हुनकर मोन भेलनि जे माहुर पी ली, एहन अपमान आ सेहो अपन बेटा सँ जेकरा पढ़ाय-लिखाय केँ मनुक्ख बनेलहुँ।

फेर भेलनि जे नइँ...हम किऐ मरब...यैह तँ ऊ चाहैत अछि। हम ओकरा पर पंचैती बैसेबै। गाम-समाज मे एखनो एतबा संवेदना तँ लोक मे छइहे कि एगो बूढ़ बाप के स्वाभिमान पर ठेस नइँ पहुँच' देतै।...

ओ गामक संगी तुरिया सब केँ ई बात कहलखिन...मुदा सब क्यो हिनका पर हँसि देलकनि। हौ जी आब तोरा कोन लेबा-देबाक छह। कते दिन जीबह...खा-पीअह आ भगवानक नाम लैह...

अंत मे ओ हारिक' घर घूरि अयलाह... मुदा हारि नइँ मानलखिन। अपन पुरना झोरा निकालि क' ओहि मे सँ छैनी हथोड़ी निकाललखिन। आ लिखय लगलाह...अपन नाम। घरक हरेक बस्तु पर अपन नाम खोदय लगलाह जेना कोनो सपना बुनि रहल हो। जूता, चप्पल, कुरसी, चौकठि, बरतन-बासन, घर देवाल, सब पर नाम लिख' लगलाह।

भोर मे लोक हुनका हाथ मे छेनी-हथोड़ी लेने मरल पड़ल देखलकनि...



संपर्क : **द्वारा पंकज बिष्ट, 98 कला विहार, मयूर विहार फेज़-1, दिल्ली-91**
मो. : **9711261789**

पुरुखारथ

प्रवीण भारद्वाज

जेना लागल चारू दिशा मे, ने-ने कह'क चाही जे दसो दिशा मे, दिग-दिगंत मे सगरो बिरड़ो उठि गेल हो, महाप्रलय आबि गेल हो, सुनामीक 20-30 फीट ऊँच लहरि उठि गेल हो। लागल जेना एहि सुनामीक लहरि मे रतीस दहा गेलाहें। लागल जेना माँ काली चण्डिका रूप धारण क' नेने होथि आ हुनका चारू दिस नरमुण्डक टाल लागि गेल हो, आ हो अट्टहास पर अट्टहास केने जा रहल होथि आ ओहि अट्टहासक प्रचंड अबाज मे रतीशक करुण क्रंदनक स्वर मिझर भ' क' बिला गेल हो। फेर लागल जेना बिरड़ोक हबा मे ओ नरमुंड सब सुनामीक जल मे तिरोहित भ' भाप बनि हवा मे उड़ि गेल।

—भाइ दारू लेल दू सय टाका दिअ।

—दारू लेल? अच्छा, कतेक?

दू सय टाक!

अच्छा ई लिय।

—भाइ पाइ तँ द' देलहुँ। ई दारू हम कीनियो लेब, मुदा ई दारू हम पीब कत्त'? की हम एतय अहाँ लग, अहाँक सोझाँ मे पीबि सकैत छी?

—अं, हँ, ...हँ, अहाँ एतय पीब'चाहैत छी, तँ पीबि सकैत छी! मुदा हमरा अहाँ डिस्डर्ब नइँ करब।

—हँ भाइ, ठीक, एकदम्मे नइँ डिस्टर्ब करब!

—बाऊ अहाँ एत' अयलहुँ, हमरा सँ भेंट केलहुँ, हमरा नीक लागल। अहाँ पछिला बीस बरख सँ हमरा नीक लगै छी। हमरा इनर्जेटिक लोक नीक लगैत अछि। तेँ अहूँ सीएम कॉलेज सँ नीक लगैत रही।

—अहाँ जेएनयू गेलहुँ, बुझू जे दिल्ली गेलहुँ, राजधानी गेलहुँ, आगाँ बढ़ल हैब, हम एतेक दिन यैह सोचैत रही। अहाँ एक टा ब्राइट स्टूडेंट रही। हमर मानब छल जे अहाँ अप्पन व्यक्तित्व विकास खूब केने होयब। रचिक' अपना आप केँ गढ़ने होयब।

—आइ अहाँ पीबे टा नइँ केलहुँ। बोकरबो केलहुँ, जेकरा हम आ हम्मर घरक लोक साफ केलक। अहाँ केँ ओछाओन पर सुता देलहुँ।

—भोर भेल। भोर उठिक' एक बोल ने, आश्चर्य, घोर आश्चर्य, केहेन चेतनाक स्तर? ने कोनो धन्यवाद, ने किछु। कोनो विचार नइँ।

—कोन दुनिया मे अहाँ जीबै छी, से हमरा छगुंता लागल। काठक बनल लोक जकाँ अहाँ केँ ताहि दिन सँ आइ धरि कोनो ग्लानि वा केलहा पर कोनो टा पछताबा नइँ भेल।

—ई कोना लोक केँ होई छै, यौ, अहाँ तँ एतेक संवेदनशील छलहुँ। जन-आंदोलन क कार्यवाई मे सम्मिलित रही आ सब लेल एक तरहक समाज बनेबाक प्रण लेने रही। ताहि मादें हमरा सूचना दैत रहै छलहुँ।

हम गौरवान्वित होइत रही, मुदा आइ...

—भाइ हम आब 38 बरिसक भेलहुँ। मुदा कोना काज नइँ, ई पढ़ाइ आ एतेक पढ़ि-लिखिक' हमरा की भेटल? देश आ समाज हमरा की देलक?

—आश्चर्य, घोर आश्चर्य, अहाँ की पढ़ैत-पढ़ैत की पढ़' लगलहुँ। अहाँ केँ देश वा समाज की देत यौ! अहाँ पढ़लहुँ-लिखलहुँ तँ अहाँ ने समाज आ देश केँ किछु दितियै। उलटे देश आ समाज सँ माँगि रहल छी? हद्द करै छी

—भाई, हम...

—अहाँ किछु ने बाजू। 38 सालक अवस्था मे कतेको लोक तँ बहुत किछु क' जाइछ!...अपना पुरुषारथक बदौलत एतबा उमिर मे लोक अपन व्यक्तित्व केँ कत' सँ कत' ल' चलि जाइत छथि।

—अहाँ जँ बिजनेस करै जोगरक नइँ रही तँ अपन योग्यता चीन्हि कोनो नौकरी करितहुँ। कोनो नौकरी नइँ क' सकलहुँ तँ समाज-सेवा करितहुँ। समाज सेवा नइँ तँ ट्यूशने क' कम सँ कम अपन गुजारा जोगरक उपाय तँ करितहुँ। प्रतिभा राखिए क' की, जँ ओकर सदुपयोग नइँ क' सकलहुँ।

—38 बरिसक भ' क' अहाँ लग उपलब्धिक नाम पर की अछि? यैह जे कैक साल अहाँ जेएनयू मे पढ़ि चुकल छी आ कोनो जोगरक नइँ छी!...

—दूसय टाका माँगलहुँ, ताहि लेल ने। हम तँ ओ दइए देलहुँ। अहाँ हमरा सँ ईहो नइँ पुछलहुँ जे अहाँ ल'ग आर पाइ अछि की ने। सीधे माँगि देलहुँ। हमरा ल'ग ओइ दिन मात्र अढ़ाइए सय टाका रहय आ ताहि मे सँ दू सय टाका हम दइए देलहुँ। हमर खर्च कोना चलैय', तकर की! तकर चिन्ता अहाँ केँ नइँ भ' सकै अछि!...

—हम कोना डेढ़ टा कमरा मे परिवार सहित बिना कोनो निश्चित आर्थिक आधारक जीवन काटि रहल छी, से सब केँ बूझल छनि। अहूँ केँ अवगत हेबे करत। हमर आयक साधन-स्रोत कतेक कम अछि, ताहि सँ अहाँ नीक जकाँ अवगत छी। तखनो अपना पीबाक दुआरे अहाँ हमरा सँ माँगि लेलहुँ।

—दू सय लइए क' की केलहुँ। हम्मर मेहनतिक कमाइ केँ बोकरे मे खर्च केलहुँ। हमरा तकरो अपार कष्ट भेल। हमर परिवार अहाँक सेवा-भाव केलक, तकर धन्यवादी हेबाक बदला मे हमरे मजाक उड़बै छी।

—हम अपना सँ बीस-की चालीसो साल छोट केँ अपन मित्र मानैत छी आ तकरा निबाहि लैत छी, मुदा अहाँ कहू जे अपन पैघ सँ कोन व्यवहार, कोन तरहक धाख हेबाक चाही? की ई अहाँ केँ सिखायल नइँ गेल अछि? हमर मित्रवत् व्यवहार अहाँ सँ छल आ आगूओ रहत...की तेँ अहाँ अप्पन मर्यादा अप्पन सीमा केँ कहियो नइँ जानि सकलहुँ? लगै अछि साइत तेँ अहाँ अप्पन जीवनो केँ नीक स्वरूप नइँ द' सकलहुँ।

—चलू जे केलहुँ, से केलहुँ, की आगूओ एहिना चलत?

अवाक् ओ नुनू भाइक मुँह दिस तकैत रहि गेल आ प्रश्नक सुनामी मे भँसि गेल।



संपर्क : **8 एसबीआई अपार्टमेंट, सेक्टर 46**
फरीदाबाद-121003
मो. : 9467000609

■ कविता : नारायणजी



डूबि मरबा लेल उताहुल

(नरकक अतल प्रदेशक बासी
स्वर्गक कल्पना करैत अछि।
—फ्रैंज काफ्का)

बताह जे होब' चाहैत अछि
होअय, ऐलि-फैलि सँ गीजय गूँह,
तकर अभाव थोड़ेक अछि?

आ भागि-पड़ाय चाहैत अछि घर सँ?
किऐ अछि बिलमल?

देरी किऐ कयने अछि—
डूबि मरबा लेल उताहुल?
अपने-अपने हाथें
अपना गड़ा मे घैल बान्हि
झट डूबि मरय
पोखरि-इनार मे...
ओहि कविक अंतरक कवि,
जकर कविता
घओना करैत अछि,
रोदना पसारैत अछि
बिलखि-बिलखि
अपना पर उपहास करैत
कविता लिखैत कवि
किऐ अछि जीबैत?

किऐ?

किऐ रहि-रहि
अपन करुण नेत्रें
तकैत अछि दोसराक मुँह?

मर' जे चाहैत अछि
मरय निचेन सँ
खाली करय जग्गह

एहि गुनि-धुनि मे जुनि रहय—
आब के बचाओत दुनिया?

ओहि नौआक पड़ि
मरबाकाल जे बाजल करय—
'आब के नगरी मुड़िहें?'

दुनिया एक सँ एक बचाब'वला अछि
बनाब'वला जनमि रहल अछि
एक सँ एक
अनुखन
नीक सँ नीक

अच्छे, अहीं कहू तँ!
पहिने एहन रहय दुनिया,
आवेश सँ एतेक बाँहि पसारने
आइ अछि जे
अनेक सुख-सुविधा सँ भरल?

अपन स्वादक बीच अछि उपस्थित

अपना सँ थोड़ेक नमहरक जुत्ता मे
पयर पैसा' रहल अछि
टेल्ह एक टा
समय सँ पूर्व युवक होब' चाहैत अछि,
युवक बनि स्वाद' चाहैत अछि
समय केँ

आ बूढ़ ओ
टूटि गेल छै बत्तीसो दाँत,
गोट-गोट केस पाकि
भ' गेल छै स'न सन उज्जर
देखू ने।
कोनो बनौआ दाँत पहीरि
केस रंगि,
अपना मे बीतल,

युवकक स्वाद केँ देखाब' चाहैत अछि,
घाड़ टेढ़ क' तकैत मुलुर-मुलुर?

हुले! हुले!!

कतेक भागवंत अछि आजुक युवक?
अपन स्वादक बीच अछि उपस्थित
रोपबा लेल स्वतंत्र
अपन स्वादक गाछ
केवल अपन स्वादक

गमन के लगन

लहरि उठैत अछि
लहरि पर लहरि
लोकक लहरि
प्लेटफार्म पर

एहि अंचलक
करमान लागल लोक केँ
समा लेत निरीह ठाढ़ ट्रेन

ट्रेन दूर देश जायत
धार जकाँ बहैत

बहैत नइँ अछि मुदा धार
बहैत अछि पानि
दूर देश जाइत अछि
लहरि बनि
उजासक
कखनहुँ धीर-गम्भीर...

अपन उद्‌गम सँ कोनो वितृष्णा?
ऊँहूँ! ऊँहूँ!!

जत' गेल नइँ अछि
अछि नइँ पसरल,
अपन रंगे रंगि नइँ सकल अछि रंगरेज
बनि भरि पोख
ओत' जयबाक
बेर-बेर पहुँचि अच्छौं भरि पयबाक
आकाश भरि उत्कंठा
अद्‌भुत! अद्‌भुत अछि गमन के लगन!!

संपर्क : **घोघरडीहा (दक्षिण),**
मधुबनी-847402 (बिहार)
मोबाइल : **9431836445**

■ कविता : जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

भोज

भोज
आँगन मे भोज
टोल मे भोज
गाम मे भोज
शहर मे भोज

छठिहारक भोज
जन्मदिनक भोज
मूड़नक भोज
उद्योग-मड़बठ्ठी-
कुमरम आ उपनयनक भोज
विवाह-चतुर्थी-मधुश्रावणी-
कोजगरा आ द्विरागमनक भोज
नोकरीक भोज
प्रोमोशनक भोज
रिटायरमेंटक भोज
श्राद्धक भोज
बरखीक भोज

बोफोर्सक भोज
चाराक भोज
कॉमनवेल्थ गेम्सक भोज
टू-जी स्पेक्टमक भोज
चूड़ा-दही-चीनीक भोज
पूड़ी-जिलेबीक भोज
रसगुल्ला-पनितोवाक भोज
भात-दालि-तरकारीक भोज
माछ-मांस-मदिराक भोज

सदाचारक भोज
आचार-विचार-शिष्टाचारक भोज
मौज-मस्तीक भोज
हँसी-खुशीक भोज
परंपराक निर्वाह ले' भोज
अपन-अपन
देवी-देवता केँ खुश करबा ले' भोज
खून-पसेनाक कमाइ पर भोज
घूसखोरी का चोरीक पाइ पर भोज
भोज सँ आदमीक घटि गेल ओज
भोज सँ आदमीक बढ़ि गेल रोग
भोज खा गेल



बच्चाक वर्तमान आ भविष्य
जवानक चिंतन आ विवेक
बूढ़क सपना आ संदेश
भोज जे बनबैत अछि लोक केँ
असहाय
भोज जे बनबैत अछि लोक केँ
बौक, बहीर आ आन्हर
निर्लज्ज,निष्ठुर आ नपुंसक
भोज जे करैत अछि
लोकक शीलहरण आ चीरहरण,

हम घोषणा करैत छी
पाप थिक भोज खाएब
पाप थिक भोज खुआएब
एहि पाप सँ मुक्तिक विचार करक चाही
आ भोज केँ दूरे सँ नमस्कार करक चाही।

संपर्क : **रोड नं. 1-ई, वृन्दावन कॉलोनी**
फुलवारी शरीफ, पटना-801505
मोबाइल : **9570635372**

किऐ अछि कोशी बिहारक अभिशाप ?

नरेन्द्र

बाढ़ि आब राष्ट्रीय पर्व आकि सामाजिक-धार्मिक त्योहार जकाँ अपरिहार्य किंवा औपचारिक भ' गेल अछि। जेना आन पर्वक अयनाइ निश्चित अछि आ मनायल जयनाइ सेहो निश्चित अछि, बाढ़िक अयनाइ आ धूमधाम सँ ओकरा मनायल जयनाइ सेहो एक तरहें निश्चित भ' गेल अछि। बल्कि बाढ़ि सँ आब लोक तेना ने 'एडिक्ट' भ' गेल अछि जे जँ कोनो बर्ख ई नइँ अबैत अछि तँ लोकवेद बेहाल भ' जाइत अछि। बल्कि भयभीत भ' जाइत अछि जे जानि नइँ अइ बर्ख की होब'वला अछि। सब साल अबै छलि, अइ साल जानि ने की छै मोन मे जे मुन्नी मारने अछि! माने बाढ़िक आब लोक बेसब्री सँ प्रतीक्षा करैत अछि। एकरा हमरा लोकनि 'बाढ़ि सिन्ड्रोम' सेहो कहि सकै छी। जेना हमरा लोकनि आन-आन पर्वक प्रतीक्षा करैत छी, तहिना बाढ़ि लेल सेहो 'मैं तो कब से खड़ी इस पार' वला पोज मे प्रतीक्षा करैत रहै छी। आ जेना कि आदति अछि बाढ़ि आबि गेलाक बाद पैघ-पैघ वक्तव्य देल जाइत अछि, घोषणा होइत अछि आ बहस-मुबाहिसा चलाओल जाइत अछि। तकरा बाद साल भरि लेल निश्चिंत। जेना छब्बीस जनवरी आकि पन्द्रह अगस्त कें तिरंगा झंडा फहरयलाक बाद आजादी आ देश आ जनसेवा आ लोकतंत्र आदि विचार कें आगामी वर्ष भरि लेल तहियाक' गदालखाता मे ध' देल जाइत अछि। तकरा बाद सँ बाढ़ो सँ बेसी महत्त्वपूर्ण समस्या सब पर चर्च शुरू भ' जाइत अछि। माने 'और भी गम हैं दुनिया में मुहब्बत के सिवा'!

आजादीक बाद सँ जतेक सरकार सत्ता मे आयल अछि से बाढ़ि कें 'सेलिब्रेट' करैत रहल अछि। बाढ़ि ओकर सब सँ प्रिय विषय आ शगल रहल अछि। बाढ़ि नियंत्रण लेल पैघ-पैघ परियोजना बनायल गेल अछि। आ जें कि परियोजना पैघ अछि तँ स्वाभाविक अछि जे ओकरा अमली जामा पहिराब' मे पैघ समय लगतै—से सब टा नीक जकाँ खटाइ मे गलि रहल अछि।

आजादीक बादे सँ बाढ़ि नियंत्रण कें ल'क' दू तरहक पवित्र धारणा शासक वर्गक उदार हृदय मे बसल अछि। पहिल तँ ई जे बाढ़ि राज्य सरकारक लापरवाहीक नतीज अछि। आ ई प्रकृतिक संग दुर्व्यवहार आ छेड़खानीक परिणाम अछि। माने ई एक टा प्राकृतिक प्रकोप अछि। प्राकृतिक प्रकोप अइ दुआरे जे नदीक आजादी छीनि लेल गेल छै। ओकरा मनमाना ढंग सँ बान्ह मे कैद क' लेल गेल छै। तँ नदी विद्रोह करैत अछि। मानव जातिक किरदानीक बदला चुकबैत अछि। तँ अइ तरहक चिंतक सबक सुझाव अछि जे सब टा तटबंध कें ढाहिक' नदी सब कें प्राकृतिक रूपें स्वच्छंद बह' देल जाय। जेना कि मानव सभ्यताक विकासक पूर्व बहैत छल। ने लोक नदी कें बान्हत, ने ओ तटबंध तोड़त। बस बाढ़िक समस्या स्वत: खत्म भ' जायत।

दोसर कोटिक जे चिंतक छथि, हुनका लोकनिक मान्यता अछि जे जेंकि नदी सब कें जाहि स्तर पर बान्हबाक चाही ताही मे छूट देल गेल अछि तँ ई सब उच्छृंखलता करैत अछि। ओ सब सरकार सँ माँग करैत छथि, प्रत्येक बान्ह आ बराज योजना सब कें तत्काल लागू कयल जाय। आ सब सँ बढ़िक' नेपालक संग समझौत क'क' एहन महा-बान्हक उपाय कयल जाय जाहिसँ कि नेपालक पानि भारत मे दाखिल नइँ भ' सकय। सब टा किरदानी नेपाली पानिक अवैध घुसपैठक अछि। बहसक ल'द' यैह दू टा सिरा अछि। पहिल नदी कें मुक्त भाव सँ बह' देल जाय, दोसर नदी सब कें आर बेसी सिक्कड़ि मे गछाड़ि देल जाय। सब टा बहस अही तू-तू, मैं-मैं पर लसकल अछि। आ बाढ़िक असली कारण कें सायास दबाक', बल्कि कहल जाय जे नुका क' राखल जाइत रहल अछि। जाहि सँ कि बाढ़ि पर चिंता आ चिंतन सेहो चलैत रहय आ बाढ़ि सेहो बदस्तूर अबैत-जाइत रहय। यैह तँ अछि भारतीय लोकतंत्रक विशेषता। सहअस्तित्वक 'सब जन हिताय, सब जन सुखायक' सिद्धांत। माने साँपो मरय आ लाठियो बाँचल रहय। किए तँ ओ बाढ़िये अछि जे जखन अबैत अछि तँ जनताक डाँड़ कें सालभरि लेल तोड़ि जाइत अछि। आ जनता जतेक कमजोर होइत अछि, सत्ता ततबे मजगूत होइत अछि।

ओना तँ सम्पूर्ण भारते नदी प्रधान देश अछि। मुदा, बिहार चारू दिस सँ घेरायल एक टा टापू जकाँ अछि। एत' एहन-एहन नदी अछि जे साल मे कखनो काल दू-दू बेर उफनैत अछि। आ जखन उफनैत अछि तँ अपना संग एक टा सम्पूर्ण सभ्यता-संस्कृति कें लेने चलि जाइत अछि। सम्पूर्ण आबादी नदीक कोख मे समाहित भ' जाइत अछि। जे बचैत अछि, से विस्थापित होइत अछि। भूखे मरैत अछि। बीमारी भोगैत अछि आ फेर सँ हियाव क'क' अगिला साल दहयबा लेल स्वयं कें तैयार करैत अछि। यैह अछि बिहार, खासक' क' मिथिलांचलक नियति। ओकर गति-दुर्गति। यैह आजादीक पूर्व आ ताहू सँ पूर्व सँ चलैत आबि रहल अछि। यैह सनातन सच्चाइ अछि।

बाढ़ि एक तरहें नेता वर्ग लेल आमदक मौसम अछि। जतेक भीषण बाढ़ि, ततेक पोखगर कमाइ। एकक चारि आँकड़ा बनाक' केंद्रीय अनुदान उगाहू आ चारि पुश्त धरि छुहुक्का उड़यबाक गारंटी क' लिय'। राहत कैंप लगाउ। हवाइ सर्वेक्षण करू अथवा करबाउ। बाढ़ि पीड़ित कें खैरातक शर्मनाक स्थिति भुगतबा लेल बाध्य करू। यश लुटू, नाम कमाउ, जनाधार विकसित करू।

कोशीक विगत विभीषिका सब अइ बातक गवाह अछि जे कोना राहतकर्मी सब खास तरहक पुण्यक प्रतिमान स्थापित कयलक। डूबैत-पड़ाइत लोक सबक घर मे हुलिक' लूट-पाट मचायल गेल। जकरा सहजें बचायल

जा सकतै छल तकरा गोंतिक' मारि देबाक गौरव प्राप्त कयल गेल, जाहि सँ कि ओहन लोकक माल-असबाब पर कब्जा कयल जा सकय। पानि मे घेरायल महिला सबक जान बचयबाक लाथें इज्जति लूटल गेल। एहन कृत्य मे बेसीतर पुलिसकर्मी शामिल छल। नाव सँ राहत कैंप धरि पहुँचाब' लेल सरकारी सहायता टीम अंट-संट भाड़ा वसूल कयलक। माने जते लोक बाढ़ि सँ नइँ बर्बाद भेल ताहि सँ बेसी राहत सँ आहत भेल।

एम्हर सत्ताधारी वर्ग अपन पीठ स्वयं ठोक' मे लागल रहल। सरकार राहत शिविर मे तफरीह करैत रहल। भूखल-पियासल लोकक फोटोजेनिक नजारा देखैत रहल आ पुलकित होइत रहल। डपोरशंखी आश्वासन दैत रहल। पॉलिटिकल नेप चुअबैत रहल। कुल मिलाक' ई प्रदर्शित कर' मे लागल रहल जे देखू प्राकृतिक विपदाक घड़ी मे हम सब तरहें अहाँक संग छी। कि हम सब टा संभव उपाय कर' मे लागल छी। जखन कि पछिला सरकार अइ मोर्चा पर एकदम सँ फेल छल।

दोसर दिस विपक्षी सरकारक अइ हमदर्दी केँ नाटक आ ढोंग बतबै अछि। आ लोक केँ बुझबे मे लागि जाइत अछि जे ई सरकार निकम्मा आ बेइमान अछि। ई साल भरि धरि बाढ़िक मामिला मे निश्चिंत रहैत अछि, तकरे परिणाम अछि जे लोक बेरबादी भोगि रहल अछि। लोक अइ सरकारक भुलावा मे ने आबय। धरना दिअय, प्रदर्शन करय, घेराव करय। अइ सरकार केँ जावत उखाड़ल ने जायत, तावत बाढ़िक स्थायी समाधान असंभव अछि।

किछु गैरसरकारी संस्था अछि। पैघ-पैघ मीडिया घराना अछि, पूँजीपति आ उद्योगपति अछि, जे अपना दिस सँ राहत कार्य चलबैत अछि। आ जतेक राहतकार्य चलबैत अछि ताहि सँ बेसी अपन संस्थाक नामक डिगडिगिया पीटैत अछि। खूब चंदा उगाही करैत अछि आ वाणिज्य-व्यापारक अपन रीढ़ मजगूत करैत अछि। देसी-विदेशी फंडक लूटि मचबैत अछि। कारी धन केँ सफेद करैत अछि। आ जनता, जे डूबैत रहैत अछि तकरा लेल कोन फर्क पड़ै छै 'तिनकाक सहारा' कोन दल अथवा दिल द्वारा भेटि रहल छै। डूबैत केँ तँ सहारे टा चाही।

असल मे जनता केँ बाढ़िक समस्याक स्थायी निदान सेहो जनसंघर्षक बदौलति हासिल हेतै। मनुक्खक एखनधरिक इतिहास प्रकृति संग संघर्षक इतिहास रहलैए। यैह विकासक नियम छै। ओ आदिम अवस्था सँ आइ सभ्यताक जाहि ठेकान पर पहुँचलए से अपना संघर्षेक बदौलति। तेँ नदी केँ प्राकृतिक रूप मे निरंकुश छोड़ि देबाक दलील तँ एकदम सँ अवैज्ञानिक आ मानव विरोधी अछि। तहिना नदी केँ आर बेसी बान्हि देबाक सिफारिश सेहो अराजक आ अव्यावहारिक अछि। किऐ तँ बाढ़िक मूल कारण जल निकासीक समस्या नइँ अछि। बल्कि मूल कारण अछि जे ओकर सार्थक उपयोग आ वैज्ञानिक संरक्षणक कोनो ठोस योजना ने अछि। बौखलाहट मे बान्ह ठाढ़ करब अथवा ओकरा ढाहि देब कोनो टा निदान नइँ अछि। निदान ई अछि जे पहिने ई तय करबाक चाही जे आखिर नदी केँ कत' आ कतबा बान्हबाक अछि। वेद मे कहल गेल अछि जे 'नदी मनुक्खक सेवा लेल अछि' तखन तँ ई समझदारी हमरे लोकनि मे होयबाक चाही जे ओकर सेवा कोन तरहें ग्रहण करैत छी। हमरा लोकनि जल संरक्षण केँ राष्ट्रीय एजेंडा बनाक' अधिकाधिक बिजली उत्पादन क' सकैत छी। ओकर सही उपयोगक जरिये उन्नत कृषिक स्थिति बना सकैत छी। मुदा ई तखने संभव हैत जखन जन-जागृति आयत। सरकारी तंत्रक हवाले देशक नसीब छोड़ि देला सँ नदीक वैज्ञानिक समाधान आ समान विकासक अवधारणा केँ अमली जामा नइँ पहिरायल जा सकैत अछि। अइ तरहें हम कोशी पर लगल 'बिहारक शोक' सनक कलंक केँ सेहो मेटा सकैत छी। किऐ तँ हमरा लोकनि सत्त पूछी तँ कोशी केँ मजबूर कयने छी जो ओ हमलावर बनय, विनाशलीला करय आ हमरा लोकनि उनटे ओकरा कलंकित करैत रहियै जे ओ बिहारक शोक अछि!



संपर्क : **पुनर्नवा, दिग्घी पश्चिम, मिश्रटोला, दरभंगा-846004 (बिहार)**
मो. : **9835106782**



कथा

विवाहक तेसर सप्ताह

आदि यायावर



रातित भरि कछ–मछ करैत उर्मिलाक मोन उबिया गेल छलनि। आधा रातिक बादे हुनकर पति बेडरूम मे आयल छलाह। एखन ओ एना फोंफ काटि रहल छलाह जेना बेटीक विवाह एखने खतम भेल होनि। नोकर–चाकर सब सुतल छल। आ बगल वाला फुलवारी मे झिंगूर किलोल करैत छल। चारू दिस आततायी सन्नाटा पसरल छल। हठाते बगल वाला आम गाछी पर टिह–टिहहिया अपन चिर परिचित आवाज देलक। ओहो 'आवाज' कोनो टहँकार सँ कम नहि छल। हुनकर एकाकी पर अपन वर्चस्व देखबैत हुनकर हृदय केँ बेधैत चलि गेलनि। एकर संगे टिह–टिहिया ईहो सूचना देलकनि जे आब तेसरो पहर बीति गेल अछि। एक बेर ओ फेर सँ अपन पतिक मुँह देख' लगलीह। की सुंदर कांतिमान मुखमंडल छल, मानू, जेना कोनो गंधर्व सद्य: पृथ्वी पर उतरल हो आ हुनकर बेडरूम मे अपन कब्जा जमेने हो। एहेन सुंदर छवि जे मात्र साहित्य मे पढबा मे भेटैत छै। दैदिप्यमान मुँहे टा किएक, पछिला तीन सप्ताहक घटना क्रम मे हुनका ज्ञात भेलनि जे जतबा ओ देखबा मे सुंदर छलाह ओतबा हुनकर व्यक्तित्व सेहो नीक छनि। हुनकर पिताक यश पूरे समाज मे पसरल छलनि। विवाह सँ कतेक साल पहिने सँ एहि परिवारक बारे मे ओ सुनि चुकल छलीह। ओ लोकनि जतबे धनीक छलाह ओतबे संस्कारी सेहो। हुनकर पति अपन पुरखाक अर्जित धन संपत्ति मे कोनो रुचि नइँ देखाबैत छलाह। ओ कहैत छलाह जे आदमी केँ अपन दुनिया अपने बसेबाक चाही। विवाहोपरांत ई सब जानि उर्मिला केँ बहुत खुशी भेल छलनि। आजुक समय मे अरेंज्ड मैरेजक बाद सब किछु एतेक बढियाँ भेटब हुनका पूर्व जन्मक कोनो नीक फल बुझना गेलनि। अपना आप केँ ओ भाग्यशाली बुझ' लागल छलीह।

मुदा पहिल सप्ताह के बादे एत्तेक किछु

भ' गेल जकर हुनका कोनो अंदेशा नहि छलनि। आब तीने सप्ताह मे सब किछु एतेक बदलि जेतनि तकरो हुनका कोनो आशा नहि छलनि। विवाहक उपरांत प्रत्येक स्त्रीक लेल सासुर एक रहस्य सँ कम नहि होइत छै। पहिने तँ कोशिश केलथिन अडजस्ट करबाक लेल। अपन मनोरथ केँ कात राखैत परिवारक माहौल मे मिल जेबाक हर संभव प्रयास करय लगलथि। मुदा आब हुनका लाग' लगलनि जे हुनकर कोनो दोष नहि। आब हुनका होइत छलनि जे हुनकर सासुरक लोक बिल्कुल अलग तरहक छथि। विवाहक मात्र तीन सप्ताहक अंतराल मे जत' एतेक नाटक भेल हो, ओहि बात केँ ओ सामान्य कोना मानि सकैत छलीह। जखन हुनकर अपन पतिदेवे उपेक्षा करै छथि तँ दोसराक कोन गप्प। पछिला तीन सप्ताह मे कोनो दिन एहेन नहि बीतल छल जखन हुनकर पति एको घंटाक लेल आबि क' हुनका सँ प्रेम सँ बात केने होथि। हुनकर उम्रक स्त्री लोकनि की-की सपना देखैत छथि। ओ तँ एतेक अनुशासित जीवन जीबाक पक्ष मे छलीह। लेकिन तीन सप्ताह मे आब हुनका विश्वास होमय लागलनि जे हुनकर 'उपेक्षा' भ' रहल छनि। जखन हुनकर पतिए केँ अपन कारोबार आ पारिवारिक समस्या सँ बाहर निकलबाक लेल समय नहि भेटैत छनि तँ दोसरक कोन गप्प। उपेक्षा सँ विद्रोहक भावना उत्पन्न होइत छै, हुनका सेहो भेलनि। मुदा द्विरागमनक समय मे अपन पिताक देल गेल वचन याद आब' लगलनि। एक प्रतिष्ठित परिवार मे जन्म लेलाक बाद आ एक तथाकथित प्रतिष्ठित परिवार मे विवाह भेलाक बाद विद्रोह करब हुनका ओप्शने मे नहि रहनि। ओनाहींए हुनकर सासुक अनसन सँ सब किओ परेशान छल। हिनकर कोनो टा एक गलत स्टेप नैहराक प्रतिष्ठा केँ हानि पहुँचा सकैत छलनि। रहस्यमयी सासुरक वातावरण मे हुनकर कुंठित भावना अवसाद मे बदलल जा रहल छल। एक बेर फेर सँ अपन पतिक दैदीप्यमान मुखमंडल देखबाक कोशिश करय लगलीह। एहि बेर हुनका तामस नहि उठलनि। अपितु हुनका अपन पतिक ऊपर दया आब' लगलनि। आजुक समय मे, के एहेन आदमी होइत छै जे अपन नव विवाहिता पत्नी केँ छोड़ि अपन जेठ भायक कारोबार मे हाथ बँटेबाक लेल शहर सँ दूर चलि जाइत छै! हुनका लग मे तँ ईहो ऑप्शन नहि छलनि जे ओ कहि सकैत छलीह जे हुनकर पति जे करय जा रहल छथि, ओ मात्र बेवकूफीक अलावा आओर किछु नहि थिक। 'स्त्री एक मजबूरीक नाम सेहो थिक', आब ओ अनुभव क' रहल छलीह। कतेक दिन सँ अपन भावना केँ दबाक' रखने छलीह। आब मोन करैत छलनि जे ठोहि पाड़ि क' कानथि। मुदा डर ईहो छलनि जे पतिदेव कहीं उठि नहि जाथि आ हुनकर एखन धरिक त्याग कतओ स्वार्थ रूप मे दुनिया मे नहि पसरि जानि।

ओ उठिक' बैसि गेलीह। सिरहौने मे ठेहुन मोड़िक' अपन नाक आ मुँह केँ दुनू ठेहुन मे नुकौने रहलीह। ओ आँखि मे नोर केँ रोकने रहलीह। अपन इच्छाशक्ति केँ अपने आप प्रदर्शित करैत रहलीह। किछु काल बाद नहुए-नहुए केहुनीक नीचा मे गेडुआ अयलनि आ नहि जानि कखन नीन्न आबि गेलनि। जखन आँखि फुजलनि तँ देखलथि जे पतिदेव एखन धरि सुतल छथि। नित्य क्रिया सँ निपटि क' फुलवारी मे राखल आरामकुर्सी पर ई सोचि बैस रहलीह जे जखन ओ उठताह तँ हुनका तकैत-तकैत एतय जरूर औताह। आब ओ चुप नहि रहतीह। विद्रोह नहि तँ तर्क तँ कइए सकैत छलीह। कम सँ कम पुछबाक तँ चाही जे घर मे जँ एतेक नाटक लेल पहिने सँ तैयारी रहनि तँ एक टा शरीफ लोकनि बेटी सँ विवाहे किएक केलनि। एक हजार प्रश्न फुरैत छलनि। मुदा स्त्रीक मोन मर्यादाक सीमा मे बान्हल छल। तेँ मोने-मोन विचारय लगलीह जे कोन-कोन प्रश्न पुछबाक छनि, जाहि सँ मर्यादाक सीमाक उल्लंघन नहि होमय।

विवाहक पहिल किछु सप्ताह मे नवविवाहिता की करैत छथि! नवकनियाँ केँ हुनकर पति दुनिया मे सब सँ नीक लोक लागए लगैत छनि। नवविवाहिता केँ निगेटिव बात नहि फुरै छनि आ फुरबाको नहि चाही। प्रत्येक सामान्य विवाह मे कनियाँ केँ होइत छनि जे हुनका सपनाक राजकुमार भेटल छनि। उर्मिला अपन सपना केँ एखन धरि जोगि क' राखने छलीह। उर्मिला फुलवारी मे राखल लकड़ीक आराम कुर्सी मे धँसल यैह सोच मे छलीह। अपन काल्पनिक दुनिया मे ओ अपन राजकुमार केँ परीकथा सदृश्य उज्जर-उज्जर घोड़ा पर दूर सँ अबैत देखैत छलीह। मुदा 'यथार्थ' हुनका झमान भ' पटकि दैत छलनि। लोक सपना सँ तखने आनंदित भ' सकैत छै जखन ओहि मे किछु वास्तविकता होमय। अन्यथा एहेन सपना लोक केँ डरा दैत छै। उर्मिला अपन कल्पना सँ नहि डेराइत छलीह, बल्कि हुनका अपन स्थिति पर आब शक होमय लगलनि।

[2]

ओ कोन अनर्गल अपेक्षा करैत छथि। हुनका अपन पतिक सामीप्य चाही, से की गलत? एखन धरि ओ अपन पति सँ सहज नहि भेल छलीह। विवाहक तीने सप्ताह मे कोनो लड़की सहज कोना भ' सकैत छै। किछु समय तँ चाही एक दोसर केँ जनबाक लेल! हृदयक एक कोन मे ईहो आशंका छलनि जे पतिदेवक कोनो मजबूरी छनि जे नहि तँ ओ बुझि सकैत छलीह आ नहिएँ हुनकर पति हुनका बुझब' चाहैत छथि। अपने मोन हुनका भाँति-भाँतिक संभावना सँ अवगत करबैत छलनि। संभावना अपार छल आ ओ प्रत्येक संभावना केँ अपन कल्पना-शक्तिक हिसाब सँ विश्लेषण करैत छलीह। एना करब हुनका नीक लगैत छलनि।

फेर कनखी आँखि सँ पाछु देखलथि। पतिदेव बेडरूमक खिड़की सँ चहलकदमी करैत देखा पड़लनि। जल्दी सँ मोने मोन प्रश्नक लिस्ट फेर सँ बनब' लगलीह। पहिल प्रश्न जे हुनका अपन तथाकथित कारोबारी ट्रिप मे ल' जेबा सँ ओ किएक हिचकिचा रहल छथि। दोसर प्रश्न जे कोन एहेन कारण छै जे ओ हिनका महत्त्व नहि दैत छथि। आ अंतिम प्रश्न जे एना कतेक दिन चलत। प्रत्येक प्रश्न तर्क-संगत छल, उचित छल आ समयानुकूल।

एक बेर बेडरूम केँ फेर सँ देखलथि। आब पतिदेव फुलवारी दिस आबि रहल छलाह। जल्दी सँ अपन ध्यान चिड़ै चुनमुनी दिस द' देलथिन। हृदय मे पसरल अंतर्द्वंद्व केँ अपन भीतरे रोकबाक लेल भरिसक प्रयास करय लगलीह। हुनका आभास भ' गेलनि जे ओ आब बिल्कुल ल'ग आबि गेलाह। आगू मे अनन्त आकाश पसरल छल आ ओहि मे सूर्यक लाल-लाल रोशनी हुनकर अवसादित मोन केँ तत्क्षण उर्जा सँ भरि रहल छल। लाल-लाल आकाशक नीचा मे शरद ऋतुक हरीहरी पसरल छल। आ क्षितिज पर

बहुते ऊँच आकाश मे नम्हर लोल वाला चिड़ैक झुण्ड जीवन-यापन लेल उड़ि क' कतओ जा रहल छल।

जतय एक दिस प्राकृतिक सुंदरताक मनोरम दृश्य छल, ओतहि दोसर दिस असहजता, अकुलाहट, आ व्यथित मोन। ई बुझियो केँ जे हुनकर पति पाछु मे ठाढ़ छथि ओ अनठा देने छलीह। ओ ई साबित कर' चाहैत छलीह जे हुनको उपर मे कोनो विशेष फर्क नहि पड़ैत छनि। दुनिया ककरो बिना नहि रुकलै य'। आ सफल दाम्पत्य जीवन दुनू लोकनिक बिना संभव नहि। पछिला तीन सप्ताह सँ ओ कोओपरेट करैत एलीह, आइ नइँ काल्हि एकर अंत हेबे करतै। मुदा एक कोन मे पतिक प्रेमक लेल मोन तरसैत छलनि। हुनक मोन करैत छलनि जे पति पाछु सँ भरि पाँज मे पकड़ि लनि। ओ माफ क' देतीह। हिनकर छिड़ियैल मोन केँ अपन हृदय मे समेटि क' ओ हिनका तृप्त क' सकैत छलाह। कल्पना आ यथार्थक युद्ध मे यथार्थ फेर सँ हावी छल। ओ फेर सँ डरा गेलीह। पछिला तीन सप्ताह सँ भेल नाटक हिनका फेर याद आब' लगलनि। फेर सँ वैह अंतर्द्वंद्व आ लोहारक धौंकनी सदृश्य गति मे हृदय। पाछू सँ पतिदेवक आवाज सुना' पड़लनि, 'उर्मिला!'

ओ चौंकि जेबाक सफल प्रयास केलथिन आ मुड़ी घुमाक' पाछू देखलथिन। पतिदेव मुस्की मारैत ठाढ़ छलाह। हिनका एना बुझना गेलनि जे एत्ते किछु भ' गेलाक बाद किओ एतेक सहज कोना भ' सकैत छै। दू टा मे एक टा बात जरूर छै, चाहे तँ ओ 'एक नम्बर' के नाटकबाज छथि आ कि दुनियाक सब सँ महान व्यक्ति। एहि दुनू मे 'कोन बात' बेसी सत्य छल से जानबा मे ओ असमर्थ छलीह। उर्मिला ओतबी सहज रूपें उत्तर देलथिन, 'जी कहू!'

'लगैत अछि अहाँ एखन धरि तमसायल छी', पतिदेव अपन बात कहलकनि।

'नहि, अहाँ हमरा अन्यथा ल' रहल छी', पतिक सामाजिक आ व्यावसायिक दायित्वक पूर्ति मे तन आ मन सँ सहयोग देनाइ हमर कर्तव्य थिक। हम सैह निभा रहल छी।' उर्मिलाक शब्द मे रुष्ठता व्याप्त छल।

पतिदेव आराम कुर्सीक पाछुए सँ हिनका भरि पाँजि क' पकड़ि लेलकनि। हिनकर दुनू हाथ हुनकर हाथ मे छल आ बिना शेव कयल दाढ़ी हुनकर कन्हा पर। हुनकर बिना थकरल केश गाल मे गुदगुदी लगबैत छलनि। आ ओहि मे सँ एक टा ल'ट उर्मिलाक आँखि मे जाक' तंग करैत छलनि। ओ अपन हाथ केँ छोड़ेबाक प्रयास कर' लगलीह। मुदा मोने मोन हुनका नीक लगैत छलनि। मोन होइत छलनि जे ओ एहिना पकड़ने रहथि। कखनहुँ-कखनहुँ प्रेम केवल शरीरे टाक भाषा बुझैत छै। आ ओहि मे कोनो गलत बात नहि। हुनकर गर्म श्वाँस हिनकर कान मे घुसि आत्मा केँ तृप्त करैत छलनि। सृष्टि, सृजन आ मानवीय भावना मे एक अजीब खेल भ' रहल छल। उर्मिला केवल एक पात्र छलीह। मानवीय भावना खेल मे आगू निकलि गेल छल ओ अपन हाथ छोड़ेबाक लेल प्रयास केँ बढ़ा देलथिन।

जखन पतिदेव केँ लागलनि जे आब ओ हाथ छोड़ा लेतीह तँ ओ हुनका कान मे कहलथिन, 'उर्मिला! अहाँ बहुत सुंदर छी।'

उर्मिला अपन हाथ छोड़ा नेने छलीह। पतिदेवक अंतिम वाक्य सुनि हुनका फेर सँ कानबाक मोन भेलनि। ओ चुप रहलीह। मुदा एहि बेर आँखि मे नोर चलि अयलनि। दोसरे क्षण पतिक केश केँ अपन आँखि लग सँ हँटा क' एहन प्रदर्शित केलीह जे मानू नोर पतिक बात सँ नहि, मुदा आँखि मे घोसिआयल केश सँ आयल अछि। पतिदेव सेहो सत्यता केँ बुझैत छलाह जे नोर हुनकर केश सँ नहि आयल छल, अपितु हुनकर बात सँ आयल छल। प्रत्येक स्त्रीक मोन होइत छनि जे पति सुंदरताक वर्णन करथि। मुदा विवाहक तीन सप्ताह मे ओ पहिल बेर सुनि रहल छलीह। मात्र एक टा वाक्य! ओना तँ भावना केँ झकझोरि क' राखि देलनि मुदा, ओ केवल गर्म तवा पर किछु बुनि पानि सँ बेसी नहि छल जे तीन सप्ताहक उपेक्षा सँ लोहा सन गर्म हृदय पर छन्न सँ उड़ि गेलनि। गर्म तवा केँ सामान्य करवा लेल पानिक किछु बुन नइँ अपितु लोटाक लोटा पानि ढाड़बाक जरूरत छल। पतिदेव एहि बात केँ बुझि चुकल छलाह, ओ कान मे फेर सँ कहलकनि, 'एतय किओ आबि सकैत अछि। चलू ने अहाँ सँ बहुत बात करबाक अछि। चलू अपन रूम चलल जाए।'

उर्मिला चुप रहलीह। अपन शारीरिक भाषा सँ एखन धरि देखबैत छलीह जे हुनका आब पतिदेवक बात पर कोनो विश्वास नहि छनि। शारीरिक भाषा मे ईहो समाहित छलनि जे ओ केवल अपन पत्नी धर्म निभा रहल छलीह। पतिदेव हाथ खीचि बेडरूम मे ल' जाइत छलनि आ ई चुपचाप चलि जा रहल छलीह। तात्कालिक विरोध मे अपन डेगक गति कम केने छलीह।

[3]

बेडरूम पहुँचि पतिदेव धड़ाक द' केवाड़ बन्न क' देलकनि आ लग मे आबि हिनकर दुनू बाँहि केँ पकड़ि सीधे-सीधे आँखि मे देखैत बजलाह, 'उर्मिला! अहाँ सचमुचे बहुत सुंदर छी। अहाँक ललाट, आँखि आ ठोर भगवान बहुत फुरसत मे बनौने छथि। हम अहाँ केँ अपन जीवन-साथी पाबि धन्य भ' गेलहुँ।'

एतेक बात कहि पतिदेव चुप भ' गेलाह।

प्रेमालाप आ लेक्चर मे अंतर होइत छै। प्रेमालाप ताली जकाँ एक हाथ सँ नहि, दुनू हाथ सँ बजै छै। हुनका प्रतिउत्तर मे किछु सुनबाक छलनि। उर्मिला अपन भावना केँ अपन काबू मे केने रहलीह। अपना दिस सँ प्रेमालापक प्रत्युत्तर द' अपन उपेक्षा केँ महत्त्वहीन नहि बनब' चाहैत छलीह। ओ मूर्तिवत ठाढ़ छलीह। पतिदेव केँ भ' रहल छलनि जे आब गड़बड़ भ' रहल छै। हुनक मजबूरी हुनक प्रयास मे साफ प्रदर्शित भ' रहल छलनि। हुनका मुँह सँ एक्के टा वाक्य निकललनि, 'उर्मिला हम अहाँ सँ बहुत प्रेम करैत छी'।

ईहो कोनो साधारण वाक्य नहि छल। पछिला तीन सप्ताह मे नव सासुर मे भेल अप्रत्याशित नाटकक बाद बहरायल एहन वाक्य छल जकरा सुनबाक लेल मोन तरसि गेल रहनि। आब पतिक प्रेमालाप मे हुनकर मजबूरी सद्यः देखा पड़ि रहल छलनि। ई हुनकर व्याकुलता केँ बढ़ा रहल छलनि। किछु देर दुनू व्यक्ति चुप चाप रहल। पतिदेव फेर सँ कहलकनि, 'उर्मिला हम सचमुचे अहाँ सँ बहुत प्रेम करैत छी, अहाँक चुप्पी हमर हृदय केँ बेधि रहल अछि।'

उर्मिला किछु नहि बजलीह। पतिक मजबूरी केँ यथोचित सत्कार देनाइ अपन पत्नी धर्म बुझलथिन। मुदा ओ एखनहुँ चुप रहलीह। जखन भावनाक ज्वार हृदय सँ निकलि आँखि

मे अयलनि तँ आँखि सँ नोर निर्बाधित रूप सँ बह' लगलनि। पतिदेव हुनकर बामा हाथ सँ बाँहि पकड़ने दाहिना हाथ सँ नोर पोछ' लगलनि। हिनका सँ आब नहि रहल गेलनि। हुनकर छाती मे मुँह नुकाए हिचुकि-हिचुकि केँ कान' लगलीह। हिचुकीक बीचे मे उर्मिलोक मुँह सँ निकल' लगलनि, 'हमहूँ अहाँ सँ बहुत प्रेम करैत छी। ई हमर पूर्व जन्मक कृति अछि जे अहाँ सन पति भेटल अछि।' उर्मिला दिस सँ ई प्रेमालापक उत्तर नहि छल। भावना मात्र सहज रूपेँ अपन लक्ष्य धरि पहुँचल छल।

पति दुनू गाल केँ अपन हाथ मे ल' अपना दिस खीचि लेलकनि, एक बेर नोर सँ भरल लाल-लाल आँखि मे देखि कह' लगलनि, 'अहाँक आज्ञा बिना हम नहि जा सकैत छी। जाबत धरि अहाँ हँसी-खुशी नहि विदा करब हमरा कोनो काज मे मोन नहि लागत। हमर यात्रा सफल नहि होयत'।

'हमर कोन गलती। हम कोनो बहुत पैघ डीमान्ड क' रहल छी, हमरा तँ केवल अहाँक सामीप्य चाही। हम तँ सिर्फ अहाँक संग रहय चाहैत छी', उर्मिला बिना साँस लेने एक्के दम मे सब बात कहि गेलीह।

पतिदेव जवाब देलथिन, 'हम फेर सँ वैह तर्क देब। अहाँ अपन पिताक घर मे सुख समृद्धि मे जीवन बीतेने छी। अहाँक कोमल शरीर आ कोमल हृदय दुनियाक यथार्थ सँ भेट नहि केने अछि। एक पति भेलाक कारणेँ हम कहि रहल छी जे अहाँ जुनि जाऊ। जीवन बहुत पैघ छै आ ई समय बहुत कम। बुझियौ जे हम गेलहुँ आ खट द' आबि गेलहुँ।'

उर्मिलाक उमड़ल भावना फेर सँ निराशा मे बदलि रहल छल। ओहो तर्क सँ अपन बात कहबाक प्रयास कर' लगलनि, 'भ' सकैत अछि जे शरीर सँ हम कोमल छी आ आइ धरि कोनो विशेष टेंशन नहि झेललहुँ। मुदा मानसिक रुपेँ हम ओतबी मजगूत छी।'

पतिदेव कहलकनि, 'उर्मिला! अहाँक भावनाक हम सम्मान करैत छी। मुदा हम अहाँ सँ बेसी दुनिया देखने छी। तेँ कहैत छी, अहाँ रुकि जाउ।'

उर्मिला जवाब देलथिन, 'हम अहाँक बात सँ सहमत भ' जैतहुँ। अहाँक पैघ भाए अहाँ माएक जिद्दक लेल जाइत छथि तँ जाथु। अहाँ छोट भ' क' हुनका मदद लेल जैत छी त जाउ। मुदा जहिना अहाँक भाउजी अहाँक भैया संग लागल जाइत छथि, ओहिना हमरो संग नेने चलु।'

पतिदेव केँ उर्मिलाक एते तर्कक आशा नहि छलनि। ई बात सत्य छल जे हुनकर भाउज हुनका लोकनिक संग जा रहल छलीह। हुनके लोकनिक संग उर्मिला सेहो चलि जेतीह तँ एहि मे कोन हर्ज।

ओ आब दोसर तर्क देब' लगलाह, 'उर्मिला अहाँ एखन हमरा घर मे एक टा नवकनियाँ छी। अहाँ सँ हमरा माए-बाबूजीक बहुत लालसा छनि। हुनकर कुटुम्ब आ समाज हुनका सँ पुछतनि जे पुतोहु विवाहक तीने सप्ताह बाद कतय गेलथिन, तँ हुनका कोनो जवाब नहि भेटतनि। हमर माए-बाबुजी हमरा लेल भगवान सँ कम नहि छथि। हम हुनका लोकनि केँ मजबूर नहि देख' चाहैत छिअनि।'

उर्मिला केँ मोन मे भेलनि जे कहि दथि। हँ! एहने माए जे बेटाक विवाहोपरांत एत्तेक नाटक केने होइनि आ एहेन पिताजी जे हिनकर माताक अनर्गल माँग पर मजबूर भ' चुप्प छथि। मुदा हुनकर अपन शिक्षा आ संस्कार हुनका चुप्प रहबाक एखन धरि लेल प्रेरित करैत रहलनि। ओ चुप्प रहलीह। जखन हिनका मुँह सँ किछु नहि निकललनि तँ पतिदेव फेर सँ कह' लगलनि, 'देखू उर्मिला! अहाँ हमरा सँ प्रेम करैत छी की नहि?'

ओ कहलीह, 'हँ! हम अहाँ सँ बहुत प्रेम करैत छी।'

'प्रेम देबाक नाम थिक। हम अहाँ केँ तर्क सँ नहि बुझा सकलहुँ। तेँ किछु माँगि रहल छी। बाजू अहाँ हमर माँग पूरा करब?' पतिदेव कहलकनि।

ओ फेर सँ चुप्प रहलीह। पतिदेव किछु काल प्रतीक्षाक बाद फेर सँ कह' लगलाह, 'उर्मिला! तँ की अहाँ अपन पति केँ हारैत देखए चाहैत छी। अहाँ केँ ई नीक लागत जे समाज हमरा कायर बुझए?'

पतिदेव संगमरमरक फर्श पर ठेहुन भरे बैसि गेलाह आ हाथ मे मुँह नुकाए नहुएँ-नहुएँ अपने आप सँ कह' लगलाह, 'उर्मिला! हम मजबूर छी। हमर सहायता करू।'

एहि बेर उर्मिला केँ अपन पतिक बात मे सत्यता आ इमानदारी देखा पड़लनि। हुनका उपर मे हिनका दया आब' लगलनि। अपने आप के कहय लगलीह, 'उर्मिला! अपन सासु जेकाँ अपन स्वार्थ केँ जुनि तुलि दिअ!' यदि कोनो भाजेँ ई बात हुनकर नैहरि चलि जानि तँ हुनकर माए-बाबूजीक प्रतिष्ठा केँ ठेस पहुँचतनि। आगू फर्श पर पति बैसल छलनि, निराश आ लाचार।

पतिक बाँहि पकड़ि ओ उठा देलथिन आ कह' लागलीह, 'हे लक्षमण, हम जनक पुत्री उर्मिला अहाँक एक पत्नीक रूप मे अहाँ केँ अनुमति दैत छी जे अहाँ जाउ, आ अपन भैया-भौजी केँ हुनकर धार्मिक कर्तव्यक पालन करबा मे सहयोग करू। हम बारह बरस धरि अहाँक बाट तकैत बैसल रहब! अहाँ जाउ आ अहाँ जग जीत केँ आउ!'

किछु काल धरि पतिदेव अवाक छलाह। उर्मिला सेहो चुप छलीह। जखन पतिदेव प्रशंसा आ धन्यवादक दृष्टि सँ देख' लगलनि तँ हिनका रहल नहि गेलनि। बारह बरस छोट समय नहि होइत छै। से सोचि, एक बेर फेर सँ हुनका आँखि सँ अश्रु धारा बह' लगलनि। पति चुनौती देलकनि, 'अहाँ कहैत छी जे मानसिक रूप सँ बहुत मजगूत छी, आब अहाँ किऐ कानि रहल छी।'

तुरंते नोर पोछि उर्मिला अपना आप केँ सहज कर' लगलीह। पति हिनकर नोर पोछि कहलकनि, 'एना नहि! अहाँ हँसि क' हमरा विदा करू।' उर्मिलाक मुस्की निकलि गेलनि। किछुए देर मे यात्राक तैयारी होमय लागल। मुदा उर्मिला ओहि तैयारी मे व्यस्त नइँ भ' अपन अलग यात्राक तैयारी मे व्यस्त भ' गेलीह!...



संपर्क : **Dr. Kumar Padmanabh**
Flat No-C1; Sai Brindavan Apart.
Near SMART Super Market
Doddathogur, Electronic City
Bangalore-560100
Mobile- 9986079075
Email : mishrapadmanabh@gmail.com

मइटुग्गर

जगदीश प्रसाद मण्डल

जहिना सरयुग नदी मे नहा भक्तगण मंदिर मे प्रवेश क' भगवान रामक दर्शन करैत अछि तहिना तपेसर अंगनाक मेह मे ओंगठि समाज केँ भोज खुअबैक ओरियान देखि रहल छथि। पोखरिक पानि जकाँ शीतल शांत मन अंगनाक सुगंध मे मस्त अछि। तइ बीच बेटी घुरनी चमकैत स्टीलक छिपली मे पनरह-बीस टा सुखल बड़ी, एक टा बड़ आ पानि भरल गिलास आगू मे रखि कहलकनि—कनी चीख क' देखियौ जे नीक भेल आकि नइँ?

मुस्कुराइत बेटी आ छिपली मे सजल बड-बड़ी देखि तपेसर हेरा गेलाह। मन पड़लनि मइटुग्गर। मुदा चुल्हि पर चढ़ल लोहिया छोड़ि अँटकब उचित नइँ बुझि घुरनी चुल्हि लग पहुँचि गेली। कमलक फड़ सन एक टा बड़ी मुँह मे लैते मन पड़लनि परिवार मे अपन कयल काज।

साओन मास। भोरहरबा मे मेघ फाटि बरखा भेल आ अधरतिये सँ जे पूर्वा उठल उठले रहि गेल। कखनो काल झकसियो अबिते रहल। जेना-जेना दिन उठैत गेल तेना-तेना पूरबाक लपेट सेहो बढ़िते गेल। प्रसव-दर्दक आगम सुशीला सासु केँ कहलनि। पुतोहूक बात सुनि सुनयना बेटा तपेसर केँ पलहिन ओत' जाय कहलखिन।

ओसारक ओछाओन पर ओंघरायल सुशीलाक मन मे लड़ाइ पसरि गेलनि। एक दिस प्रसवक पीड़ा अंगक पोर-पोर मे चढ़ाइ करैत तँ दोसर दिस जिनगीक कठिन दुर्ग मे फँसल मन खुशीक लहरि मे झिलहोरि खेलाइत। नारी जिनगीक श्रेष्ठतम काज। जेहने भरिगर काज तेहने मुँहमँगा मातृत्वक उपहार। पूर्वाक लपेट देखि सुनयना केँ ठकमूड़ी लगल रहनि। आइ धरि प्रसव गठुला मे होइत रहल अछि। जाहि घरक टाट हवाक झोंक केँ नइँ रोकैत। आश्रमक घर जकाँ टाट मे लेब नइँ पड़ैत। मुदा बोनक बच्चा केँ कोन घर रक्छा करैत अछि! गठुला छोड़ि मालक घर मे ओछाओन ओछा देलखिन। फेर हियासय लगलीह जे अगियासी भइये गेलै, फाटल-पुरान लइये अनलौं। मालक घर सँ हुलकी मारि पुतोहू दिस देखलनि तँ चैन बुझि पड़लनि। मन थिर भेलनि।

पलहिन ठाम जाइत तपेसरक मन मे अपन काजक भार बुझेलनि। एहेन भारी काज मे पुरुषक काज की अछि—डेग भरि हटल पलहिनक घर अछि।मुस्की दैत पलहिन कहलकनि, 'अहाँ आगू बढ़ू गायक थैर बनौने पीठे पर दौड़ल अबै छी।'

पाँचो मिनट पलहिन केँ पहुँचला नइँ भेल कि बेटाक जन्म भेल। धरती पर बेटाक पदार्पण करिते बिजलौका जकाँ परिवार मे खुशी पसरि गेल। देह पोछैत पलहिनक मन चालीस तम्मो निछौरै तइ पर सँ निपनौनए लाढ़ि-पुरनि कटाइक संग उपहार पसारी तँ मँगबाक अधिकार अछिए। जाइकाल एक टा सजमनियो माँगि लेब। सिदहा तँ देबे करतीह। हिसाब मे मन बौआ गेलनि। समाज मे भगवान ककरो सनतान दै छथि तइ मे सझिया क' दैत छथि ने। तरे-तर मन खुश भ' गेलनि। मुस्की दैत सुनयना केँ टोकलनि, 'काकी, पहिल पोता छियनि! रेशमी पटोर पहीरिबनि?'

धारक बेग मे दहलाइत दादीक मन मूड़ी डोलबैत बजलीह, 'एक टा केँ के कहए सात टा पहिरेबह।'

पलहिन, 'बच्चाक मुँह एन-मेन तपेसरे बौआ जकाँ छै।'

पलहिनक बात सुनि ओछाओन पर पड़ल सुशीलाक दर्द भरल देह-मन मे अपन सतीत्वक आभास भेल। मुदा अवसर केँ हाथ सँ नइँ जाए दिअय चाहि बुदबुदायल, 'केहेन सपरतीभ जकाँ बजैए।', मुदा पलहिन सुनलक नइँ। जहि सँ आगू किछु ने बाजलि।

झीलक पानि जकाँ तपेसरक मन स्थिर। बेटा पर नजरि पहुँचिते हर्षे मन फुला गेलनि। जहिना लगौल गाछ मे पहिल फड़ लगला पर बेर-बेर देखैक इच्छा होइत, तहिना तपेसरक मन मे उठैत। बर्जित जगह बुझि परहेज केने रहथि। मुदा तैयो जहिना डाँट टुटल कमल हवाक संग पोखरि मे दहलाइत तहिना खुशीक हिलकोर मे तपेसरक मन तर-ऊपर करैत। मन मे उठलनि पुरुष-नारी बीचक संबंध मे बच्चो पैघ शर्त छी। परिवार मे; संबंध मे विखंडनक संभावना बनल रहैत अछि। लगले मन अपना सँ आगू उड़ि माए-बाप पर गेलनि। हृदय विहुँसि गेलनि। जहिना मातृत्व प्राप्त केला पर नारीक सौंदर्य बढ़ि जाइत तहिना ने पितृत्व प्राप्त केला पर पुरुषो केँ होइत। लगले सिनेमा रील जकाँ बेटाक जन्म सँ अंतिम समय धरिक जिनगी नाचि उठलनि। किछुए समय बाद सुशीला केँ पुन: दर्द शुरू भेलनि। समयक संग दर्दो बढ़य लगलनि। दुखक संग छटपटायब शुरू भेलनि। सुशीलाक छटपटाहटि देखि सुनयना पलहिन केँ कहलखिन, 'कनियाँ, अहाँ देखिअनु तँ बच्चा सम्हारि दै छी।'

पेट पर हाथ दैते पलहिन बुझि गेली जे दोसरो बच्चा हेतनि। बजलीह, 'काकी, एक टा बच्चा आरो हेतनि?'

पलहिनक बात सुनि जहिना मेघ तड़कैत तहिना सुनयना केँ भेलनि। जोर सँ तपेसर केँ कहलखिन, 'बौआ, बौआ!...'

अकचका क' तपेसर बाजल, 'हँ, माए।'

'हँ, अंगने मे रहह।'

करीब बीस मिनट पछाति बेटीक जन्म भेलनि। अखन धरि जहिना खुशीक सुगंध अंगना मे पसरल छल, एकाएक ठमकि गेल। बच्चाक जन्म होइतहि सुशीलाक देह लर-तांगर भ' गेलनि। पलहिन सुनयना केँ कहलनि, 'काकी, पुरबा लपटै छै। अगियासी नीक नहाँति जगा देथुन। ओना तँ सभ भगवानक हाथ मे छनि, मुदा जहाँ तलिक पार लागत से तँ करबे करबनि। जानिये क' तँ भगवान दुख बढ़ा देलखिनहेँ। ऐ; पहिल, बच्चा पर ई नजरि राखथु ऐ पर हम रखै छी।' कहि बच्चाक

पोछ-पाछ कर' लगली। साँस मंद देख मुँह मे मुँह सटा फूकि साँसक गति ठीक केलनि। बच्चाक लक्षण देख पलहिनक मन बाजि उठल। जरूर दुनू ठहरबे करत। नजरि पिछला काज पर पड़ल। एहेन की पहिल-पहिल बेर भेल। कतेको केँ भेलनि। किछु गोटेक दुनू बँचलनि, किछु गोटेक एक टा बचलनि आ किछु गोटे बच्चाक संग चलि गेलीह। ओना काज तँ अनिश्चित अछि मुदा अपना भरि तँ तिया-पछा करबे करबनि। सुशीला केँ सुनयना पुछलखिन, 'कनियाँ मन केहन लगैए?'

अर्धचेत अवस्थाक मे सुशीला अपन टूटैत जिनगी हाथक इशारा सँ कहलकनि। मुँहक सुरखी कहैत जे नइँ बँचब। सुशीलाक इशारा सँ सुनयना बुझलनि जे तपेसर भारी विपत्ति मे पड़ि गेल। भगवान पर खींझ उठलनि। बेचारा फट्टो-फन मे पड़ि जायत। हम बूढ़े भेलौं, जैह कयल हैत सैह ने सम्हारि देबै। मुदा विपत्ति तँ ततबे टा नइँ ने छै। खेती-पथारी, माल-जाल, कुटुम-परिवार छै। तइ पर सँ दू-दू टा चिल्का भेलै। कोना सम्हारि पाओत। ने स्त्री बँचतै आ ने एक्को टा बच्चा। हमहूँ कते दिन जीब। सभ किछु बेचारा केँ हरा जेतै। हे भगवान, तोरा केहन दुरमतिया चढ़लह जे एहन गनजन बेचारा केँ केलहक।

आंगन मे बैसल तपेसरक मन मे उठैत जे जते टा मोटरी माथ पर उठत ततबे ने उठायब। नमहर मोटरी कते काल क्यो माथ पर सम्हारि क' रखि सकैए। मुदा तँ की, जीत्ता जिनगी हारियो मानि लेब उचित नइँ। लड़ैत-लड़ैत जे हेतै से देखल जेतै।

अपन अंतिम बात सुशीला पलहिनियो, सासुओ आ पतियो केँ कहलक, 'हम नइँ बँचब। दुनियाक सभ सँ पैघ पापी छी जे अपनो रक्छा नइँ क' सकलौं। दुनू बच्चा केँ अहाँ सभ देखबै।' कहिते आँखि बन्न भ' गेलनि। प्राण तँ बँचल रहनि मुदा चेतन-शुन्य भ' गेलीह।

सुशीलाक बात सुनि पलहिन चमकि उठल। बाप रे! सभ सँ बेसी भार अपने ऊपर आबि गेल। जन्मक पालनक भार...। अखन धरि जते ठीन काज केलौं एहेन काज सँ भेट कहाँ भेल! बुझल बात कम आ अनभुआर बेसी बजरत। जते अपना दिस तकैत जाइत तते चिन्ता बढ़ल जाइत। बच्चा केँ दूध पिआयब जरूरी भ' गेल। माइक तँ यैह गति छनि। हे भगवान कोनो उपाय धड़ाबह। मन पड़लै अपन बच्चा। अपनो तँ दूध होइते अछि तखन एते घबड़ेबाक कि जरूरत अछि। मुदा अपन दूध तँ छह मासक बकेन अछि। हे भगवान जानिहह तू। मने मन कहि दुनू बच्चा केँ दुनू छाती लगा दूध पिआबय लगली। बच्चाक चोभ देख पलहिनक मन खुशी सँ नाचि उठलनि। ठानि लेलनि जे बच्चा केँ मर' नइँ देब। आइये बकरी दूधक ओरियान करै ले सेहो कहि दैत छियनि आ टेम-कुटेम अपनो चटा देबै। मुदा अपनो बच्चा तँ चारिये मासक अछि। सात मास सँ पहिने कतौ दालिक पानि चटेबै। फेर मातृत्व जगिते बुदबुदेलीह—ऐ सँ पैघ काज ऐ धरती पर हमरा लेल की अछि, जँ दुनिया देखय...बच्चा आयल हैत तँ जरूर देखत।

पुतोहूक बात सुनि सुनयना चेतनहीन हुअय लगलीह। कासक फूल जकाँ मन उड़ि-उड़ि बौराए लगलनि। बच्चाक मुँह पर नजरि पड़िते उपराग दैत भगवान केँ मने-मन कहलनि, 'कोन जनमक कनारि ऐ बच्चा सँ असुल रहल छह। ऐ निमू-धनक कोन दोख भेलै। जँ तोरा नइँ सोहेलह तँ पेटे मे किअय ने कनारि चुका लेलह। एहन बच्चाक एहन गंजन तोरे बुते हेतह।' चहकैत करेज सँ द्रवित भ' कुहरि उठलीह। एक तँ बेचारीक उपर केहन डाँग पड़ल जे अमूल्य कोखि उसरन भ' गेलै। तइ संग बच्ची लटुआयल अछि। मुदा अपनो वंश तँ उसरने भ' रहल अछि। थाकल-ठहिआयल जकाँ छाती पर पाथर राखि आँखि तकब, मुदा तपेसर तँ से नइँ अछि। जुआन-जहान अछिए, हो न हो कहीं बौरा ने जाए। ककरा के देखत, जहिना धारक बहैत धारा मे माथक मोटरी खुलला सँ मोटरीक वस्तु छिड़िया पानिक संग भास' लगैत—जहि सँ किछु बिछेबो करैत आ किछु भँसियो जाइत...तहिना सुनयनाक विचार किछु उड़िआइत किछु ठमकल छाती दहलाइत।

ओसारक खूँटा लग बैसल तपेसरक मन मानि गेल जे चूक हमरो सँ भेल। आइ धरि जे देखैत एलौं वैह मन मे बैस गेल। की रेडियो-अखबारक समाचार झुठे रहैत अछि जे दू-तीन-चारि धरि बच्चा मनुष्य केँ होइत छै। सोचैक, बुझैक बात छल जे एक बच्चाक लेल कते सेवाक जरूरत होइत, दू बच्चाक लेल कते...। से नइँ बुझि सकलहुँ। आइ जँ बुझल रहैत तँ एहेन दिन देखैक अवसर नइँ भेटैत। परिवार उजड़ि जायत। वंश बिलटि जायत। मुदा जे चुकि गेलहुँ ओकर उपाइये कि, जहिना थाकल अड़िकंचन मे सुन्दर सुकोमल पेंपी निकलैत तहिना तपेसरक मन मे आशाक पेंपी उगल। लहलहाइत परिवार केँ देख तपेसरक हृदय उफनि गेलनि। जहिना धारक बेग मे टपै काल ओरिया क' पयर रखितहुँ थरथरायल पाएर पिछड़ैत रहैत तहिना तपेसरक मन सेहो स्थिर नइँ भ' पिछड़ए लगलनि। मुदा जी-जाँति क' माटि पर पाएर रोपिते मन मे उठलनि माइयो जीविते छथि, अपनो छी तइ पर सँ दूटा दूधमुहाँ बच्चा सेहो अछि। तखन परिवार किअय उपटत? हँ, ई बात जरूर जे पुरुष-नारीक बीच बच्चाक लेल माए भोजनक पहिल बखारी होइ छथि। मुदा युगधर्मो तँ कहैत अछि जे आजुक बच्चाक नसीब सँ माइक दूध कटि रहल अछि। तैयो तँ बच्चा जीबिये जाइत अछि। तखन ई बच्चा किएक ने जीति?

सोगायल तपेसरक मुँह देख माय; सुनयना, बोल-भरोस देबा ल' घर सँ निकलि आबि बजलीह, 'बच्चा, गाड़ीये पहिया जहाँति जीते जिनगी सुख-दुख अबैत रहैए। तइले सोगे केने की हेतह, भगवानक लीले अगम छनि। अखनी हम जीविते छी। हमरा अछैत तोरा कथीक दुख होइ छह।'

सिमसल आँखि उठा तपेसर माएक मुँह पर देलनि। हवा मे थरथराइत दीपक बाती जकाँ सुनयनाक छाती डोलैत। तहीकाल पलहिन मुँह उठा क' बाजलि, 'काकी, एतै आबथु।'

पलहिनक बात सुनि सुनयना तपेसर पर नजरि दौड़ा सोइरि घर दिस बढ़लीह। मन मे एलनि, ओना अन्हार घर साँपे-साँप रहैत मुदा हथोरियो-थाहिक' तँ लोक अन्हारो मे जीविते अछि। सभ मिलि जँ लागि जायब तँ बच्चा जरूर उठिक' ठाढ़ हेबे करत।

तपेसरक मन मे उठल, 'जाधरि साँस ता धरि आस।' अपना सभ बुते काज नइँ सम्हरत। डॉक्टर केँ बजेबनि। मुदा लग मे तँ ओहो नहिये छथि। जँ रोगिये केँ ल' जाए चाहब सेहो भारिये अछि। एक तँ तेहन सवारी सुबिधा नइँ दोसर तीन-तीन गोरे केँ ल' जायब। एक दिस अब-तबक स्थिति दोसर दिस सवारीक ओरियान आ डॉक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत बँचती आकि नइँ। जहिना अमती काँट एक दिस छोड़बैत-छोड़बैत दोसर दिस पकड़ि लैत तहिना तपेसरक मन ओझरा गेल। कोनो सोझ बाट आँखिक सोझा मे पड़बे नइँ करैत। बेकल मने उठिक' सोइरी घर पहुँचि माए केँ कहलक, 'माए...।' माएक

पछाति कोनो शब्द मुँह सँ नइँ निकलल। तपेसरक बेकल मन देख पलहिन बाजलि, 'बौआ, एना मन छोट नइँ करू। जे करतूत अछि सैह ने अपना सभ करब। ककरो जान तँ नइँ ने द' देबै। जखैन सँ दुनू बच्चा कैँ छाती चटौलिऐ तखैन से कल परल अछि। सब सँ पहिने दूधक ओरियान करू। अखन महीसि-गाइक दूध पचबैवला नइँ अछि, कतौ सँ बकरी कीन आनू। ताबे ककरो बकरी दुहि क' ल' आनू। एक तँ बकरियो सब तेहन अछि जे अपनो बच्चा पालैक दूध नइँ होइ छै, मुदा जकरा एक टा बच्चा हेतै ओहन कीन लिअ।'

अशौच दुआरे दुनू जौआँ भाए-बहीनिक, धीरज आ घुरनीक, छठियार नइँ भेल। ने कियो सोइरी सठनिहारि आ ने ककरो मन कखनो थीर होइत जे नीक-अधलाक विचार करैत। ओना तीनूक—पलहिन, सुनयना आ तपसीक—मन सदतिकाल बच्चे पर रहैत छलनि। मुदा कखनो काल नेकरम सँ अकछि मने-मन सोचैत जे दुनू कैँ ऋण असुल' भगवान पठौलनि। जते ओकर ऋण बाकी छै ओते तँ असुले क' जान छोड़त। मुदा लगले मन घुरि जाइत जे विधातो भाग-तकदीर कैँ नइँ बदलि सकैत छथि। जँ दुनू बच्चा एहि धरतीक सुख भोग' आयल हैत तँ नहियो सेवा-बरदासि करबै तैयो पानिक पाथर जकाँ जीवे करत। मुदा बाकी तीनू—पलहिन, सुनयना आ तपसीक—अपन-अपन जिनगी आ दुनिया सेहो छलनि। पलहिनये बेचारी की करितथि! एक तँ दस-दुआरी दोसर अपनो बाल-बच्चेदार परिवार, तइ पर सँ तड़िपीबा घरबला। धन्यवाद बूढ़ी सासु कैँ दिआनि जे सुखायलो-टटायल हड्डी पर ने कखनो हाथ-पाएर कामै होइत आ ने मुँह सापुट लैत। अपन सभ किछु बुझि सासु झिंगुरी—मालिक जकाँ काजक समीक्षा सदतिकाल करैत रहैत जे कोन काज केहन उताहुल अछि। जेहन जे काज उताहुल तइ काज कैँ दोसर काज छोड़ि करए लगैत तैं सुगिया सासुक बातो कथा सुनि चुप्पे रहैत। तँ, कि झिंगुरी सदतिकाल पुतोहू पर गरमाइले रहैत छलीह। जखन सुगिया कोनो अंगनाक पवनौट, कोनो तीमन-तरकारी वा सिदहा आनि आगू मे दथि वा बैसलो मे टाँग पसारि जँत' लगैत तखन वैह सासु ने असिरवाद दै छलखिन जे हमरो औरूदा भगवान तोरे देथुन। यैह ने परिवार छी जे सदतिकाल सुख-दुख, नीक-अधलाह, हँसैत-कनैत मस्ती मे चैन सँ चलैत रहए। झिंगुरियोक जिनगी मे तहिना भेल। एक्के संतानक पछाति विधवा भ' गेलीह। अपना खेत-पथार तँ नइँ मुदा अधा गाम सम्पति छलै। जाहि सँ खाइ-पीबैक कोन बात जे दू पाइ बेटो कैँ खाइ-पीबै ले दैत रहलीह।

दसदुआरी रहने सुगिया कैँ घर सँ बाहर एते काज करए पड़ैत जे दिन-राति परेशान रहैत छलीह। साँझ-भोर, राति-दिन काज। किम्हरो जँते-पीचैक समय तँ किम्हरो बिआउ करैक ताक। धन्यवाद सुगिये कैँ दी जे घिरनी जकाँ सदतिकाल नाचि काज सम्हारैत। तहू मे मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक तँ सहजहि माइये छी। दूध पिऔनाइ सँ ल'क' तेल-कूड़ देह-हाथ सोझ कर' पड़ैत। दसदुआरी रहने दस दिस सेहो आँखि-कान ठाढ़ रखै पड़ैत। सोलहो आना बकरिये दूध पर तँ दूधकट्टू भइये जायत। जे बच्चा दूधकट्टू भ' जायत ओकर छाती कहियो सक्कत हेतै? खेने-बिनु खेने सुगिया भरि दिन जंगली जानवर जकाँ नचैत...

छह मास मे छह दिन कम। बच्चा कैँ तेल-कूड़क समय होइते सुगिया हाँइ-हाँइ गाएक नाइद मे सानी-कुट्टी लगा विदा भेली। डेढ़िया टपिते वामा भाग सँ दहिना भाग बिलाइ कैँ टपैत देखलनि। मन मे सगुन-अपसगुन भेलनि। मन औनाए गेलनि।

तपेसर ऐठाम पहुँचते सुनयना कैँ बच्चा लग बैसल देखलनि। बाटक सभ बात बिसरि मुस्कुराइत बजली, 'काकी, छअ मास पूरै मे छबे दिन कम छनि। आब दुनू दुनिया देखबे करतनि।'

पलहिनक बात सुनि जहिना सुनयना अपन सभ किछु बिसरि बच्चा कैँ ह्रदय मे समा लेलनि तहिना तपेसर रोपल गाछीक फड़ देख विस्मित भ' गेला। मन मे आनन्दक हिलोर उठि गेलनि। दुनूक मन मे सबुरक गाछ जनमि गेलनि।

अखन धरि सुनयना पलहिन पर जते ओंगठल छलीह ओइ मे कमी करैक एहसास भेलनि। छह मसुआ बच्चा भ' गेल। दूधक संग अन्नो चाटत। दालिक झोर बना खुआएब। 'कनियाँ, सभ सँ नीक खेरहिये दालि हैत?'

'हँ। जेना-जेना देह सकताइत जेतै तेना-तेना खोराको बढ़बैत जैत। आब अपनो सँ ओरिया-ओरिया तेल-कूड़ दिहएथिन।'

पलहिनक सभ बात सुनायना सुनबो नइँ केलनि आकि बीचहि मे मन उड़ि क' तपेसरक जिनगी पर चलि गेलनि। बेचारा कैँ दुनियाक कोनो सुख नइँ भेल। पाँचो बर्ख कनियाँ संग नइँ रहल। कोन जनमक पाप बिषेलै से नइँ जानि। फेर मन उनटि अपनो दुनू परानी पर गेलनि। माइयौ-बापक कयल नीक-अधला काजक फल बेटा-बेटी कैँ पड़ैत छै। जेना-जेना विचार उठनि तेना-तेना मुँहक सुर्खी क्षीण, उदास होइत जानि। कहीं हमरे सभक; माए-बापक, कयल पाप तँ नइँ बेचाराक ऊपर डिरिआइ छै। फेर मन आगू बढ़ि समाज दिस बढ़लनि। एहेन बेर-बिपति की तपेसरे पर पड़ल अछि आकि आनो-आन कैँ पड़लै।

भक्क टुटिते सुनयना पलहिन कैँ पुछलनि, 'कनियाँ, की कहलिऐ से नइँ बुझलौं?'

पलहिन, 'यैह कहलियनि जे आब अपनो सभ काज सम्हारि सकै छथि।'

सभ काज सुनि सुनयनाक मन मे परिवार नाचि उठलनि। सोचय लगलीह जे जखन परिवार मे लोकेक बाढ़ि ठमकि गेल तखन धने-सम्पति ल'क' की हैत, पुनः विचार घुरलनि। जँ भगवान दुनूक औरूदा देथिन तँ धन-सम्पति कमा लेत। कमाइक बात मन मे उठिते अपन काज दिस नजरि बढ़लनि। विश्वास जगलनि जे जखन पिलुआ सन दुनू छल तखन तँ पालि लेलौं। आब तँ सहजे छअ मसुआ भ' गेल। अपने पुरना साड़ीक विसटी पोता कैँ बना देब आ पोती कैँ घघरियो सीब देब। उमेर बेसी भ' गेल तैं की। जाबे देह मे हूबा अछि ताबे तँ खटबे करब, जहन हूबा टुटि जायत तहन बुझल जेतै। दुनिया मे कियो ओकर नोर पोछैबला नइँ छै, जँ नइँ छै तँ सुगिये किऐ एते करै छै। ओकरा हमरा परिवार सँ कोन मतलब छै। जकरा मे प्रेम छै ओकरे दुनिया मे सभ छै।

दुनू बच्चा कैँ जाँति पलहिन बाजलि, 'आब जँ बकरीक दूध नहियो हेतनि तँ गाइयोक दूध सँ काज चलि जेतनि। आब ओछाओन पर बच्चा अपनो उनटै-पुनटै ले जोर करतनि। हमहूँ अबिते रहब। भैया कैँ कहि दथुन जे काल्हि पटोर पहीरि अंगना सँ निकलबनि।'

चिन्ता मे डूबल तपेसर अपनो सोचै आ दुनू गोटेक गपो सुनै। ओना किसानी बुद्धि तपेसरक जते मन काज दिस दौड़ैत ओते गप-

सप्प दिस नइँ। दुनू बच्चा केँ जाँति पलहिन हाथ-पएर सोझ क' टाँग पकड़ि उल्टाक' झुला चानि मे काजरक टीक्का लगा मुस्की दैत सुनयना केँ कहलखिन, 'काकी, भैयाक बियाह करा दिअनु?'

बियाहक बात सुनि सुनयना सुख-दुखक सरोवर मे पैसि सोच' लगलीह। हमरे आशा कते दिन हेतै। चौथापन मे पहुँच गेल छी, जते दिन जीबै छी जीबै छी। मुदा ओकर जिनगी तँ से नइँ छै। अखन ओकरा की भेलै। परिवार तँ पुरुष-नारीक संयोग सँ चलैत अछि। जाबे दुनूक संयोग नइँ हैत ताबे दुनिया आगू मुँहे ससरत...बात केँ टारैत सुनयना बजलीह, 'कनियाँ, कहलौं तँ नीके बात मुदा साल भरिक बीच कोना एहेन गप करब।'

सुगियाक बात तपेसरो सुनने। तरे-तर मन बजै ले ओढ़ मारैत' मुदा बुद्धि रोकैत। कतबो बुद्धि रोकलक तैयो बजा गेलै, 'कनियाँ, अहूँ नीके ले कहलौं, कटै नइँ छी मुदा जँ दुनू बच्चा उठि क' ठाढ़ हैत आ दुनिया दिस डेग बढ़ौत तखने, एक तँ ओकरा मइटुग्गर बुझि कियो अपन बेटा-बेटी केँ ऐ घर आबै ने दैत तै पर जँ दोसर वियाह क' लेब तखन तँ आरो कियो अपना बेटा-बेटी केँ सतमाए लग आब' नइँ दिअ' चाहत।'

तपेसरक बात सुनि पलहिन बजलीह, 'भैया, हिनका सन-सन समाज मे कते पुरुष छथि। समाजो तँ एकरा अधला नइँ बुझि उठा लेने अछि। रास्ता बना देने अछि तखन किअ' एना बजै छथि।'

सुगियाक बात सुनि जहिना तपेसरक मुँह बन्न भ' गेलनि तहिना सुनयनाक। मने-मन सुनयना सोचए लगली।...

साल लगि गेल। एहि बेर अदरा पावनि रीब-रीबे मे रहि गेल। माघ मे तेहन मारूख हवा चलल रहै जे एको टा आमक गाछ मोजरबे ने कयल। धिया-पूताक कोन गप जे सियानो सभ आमक मास बुझबे ने केलक। अंतिम जेठ मे मौनसुनी तँ नइँ बिहड़िया बरखा भेल। बरखा भेने धरतीक रंगे बदलि गेल। आन साल जकाँ ने बेसी गरमी पड़ल आ ने बाध-बोनक रूप बिगड़ल। हरियर घास सँ बाध सुग्गा पाँखिक साड़ी पहिरल जकाँ सुन्दर लगैत। अगता हाल भेने पूबरिया घरक पछुआरक दाबापरक गेनहारी सागक गाछ जनमि गेलनि। बीसे दिन मे आंगुर भरि-भरिक भ' गेल। कनौजड़ि छोड़ै जोग भ' गेल।

जहिना मुरगी चूजाक संग खोप सँ निकलि ओछाओन, बाड़ी-झाड़ी मे चराओर करैत बोलियो सीखैत आ दुनियो देखैत जाइत तहिना दुनू बच्चाक संग सुनयना लोटा मे पानि नेने पछुआर दिस विदा भेली। दावा लग पहुँच ठाढ़ भ' गेनहारीक बीरार देखिते मन पड़लनि, भीत मे साटि क' राखल गुरमीक बीआ। आँखि उठा क' देखलनि तँ चक-चक करैत बीआ। बीआ देख मन पड़लनि जे गुरमियो रोपैक समय आबि गेल। गुरमीक कोमलता मन मे अबिते मुँह सँ अनायास निकललनि, 'बौआ, आइ साग रोपि दै छी काल्हि गुरमियो रोपि देब।'

दादीक बात सुनि धीरज बाजल, 'कोन गुलमी?'

भीत मे साटल गुरमीक बीआ आंगुर सँ देखबैत सुनयना बजलीह, 'ओ बीआ गुरमीक छी। जहिना अहाँ दुनू भाए-बहीनि बच्चा छी तहिना ओहो बीआ छी। ओकरा खुरपी सँ माटि केँ खुनि रोपि देबै। पाँच-छह दिन मे गाछ जनमि जायत। जहिना अहाँ दुनू गोरे हमरा एते हैब तहिना ओहो बढ़ि क' फड़ए लगत।'

दादीक बात सुनि घुरनी ठुनकैत बाजलि, 'गुरमी लेब। गुरमी लेब।'

घुरनीक ठुनकब पर धियान नइँ द' सुनयना लोटाक पानि सागक गाछ पर छीटिलनि। पानि छीटैत देख घुरनियो चुप भ' गेल। लोटा रखि गाछ निहारि क' देखलनि तँ बुझि पड़लनि जे एक दिस सँ उखाड़ैबला सभ गाछ नइँ अछि। से नइँ तँ छोटका केँ बराए बड़का उखाड़ब। चारि दिनक बाद छोटको रोपाउ भ' जायत। फेर मन पड़लनि जे एक डेढ़ धुर करीब मे रोपब। चारि-पाँच डेग पूबे-पछि मे आ चारि-पाँच डेग उत्तरे-दछिने। एक-एक बीत पर रोपब। मने-मन हिसाब जोड़ि बीआ पर नजरि दैते बुझि पड़लनि जे चारिओ हिस सँ कम्मे लागत। भगवान सभ चीज एहिना देथुन जे अपनो खाइ आ दोसरो केँ दी।

निहुरिक' सागक गाछ उखाड़य लगली। तइ बीच दुनू भाए-बहिन एक्के गाछ पर हाथ द' उखाड़ए चाहलक। एक-दोसराक हाथ-हटबैक कोशिश दुनू करय चाहलक। हाथ पकड़ि दुनू कटाओज करय लगल। दुनूक कटाओज नइँ छोड़ा सुनयना हाँइ-हाँइ छेँटगरहा गाछ उखाड़ि कहलखिन, 'चलै चलू। भ' गेल।'

आगू-आगू दुनू बच्चा आ पाछू-पाछू सुनयना आंगन अयली। आंगन आबि बाटीक पानि मे गाछक जड़ि धोइ आइ बाटिये मे रखि देलखिन। रोपाउ जगह पर जनमल घास केँ उखारि कात मे फेक ओसारक चार सँ खुरपी उताड़ि बीत-बीत भरि पर छअ मारि-मारि रोप' लगली। गोर दसेक दड़ी बनैबिते दुनू भाए-बहिन हाथ सँ खुरपी छीनए लगलनि। काज केँ बाधिक होइत देख सुनयना दुनू बच्चाक हाथ छोड़ाए बीच आंगन मे खुरपी फेक देलनि। शंका रहनि जे खुरपी ने लागि जाइ। दुनू बच्चा खुरपी आन' दौड़ल तइ बीच ओ बाटी सँ गाछ निकालि हाँइ-हाँइ रोपए लगली। दुनू बच्चा खुरपी पकड़ि फेर छीना-छीनी कर' लगल। हाथ मे खुरपी लगैक डर फेर भेलनि। दसो दड़ी रोपि बाल्टी ल' पानि आन' कल दिस विदा भेली। दुनू बच्चा खुरपी छोड़ि पाछू-पाछू दौड़लनि। पानि आनि लोटा सँ रोपलाहा गाछ मे पानि दिअय लगली। फेर दुनू लोटा छीन' लगलनि। हाँइ-हाँइ पटा लोटा द' देलखनि। फेर दड़ी खुनए लगली। दुनू बच्चा बौआय गेल। खुरपी ल' दड़ी खुनब कि रोपब आकि पटाएब।

अढ़ाइ बर्ख बीत गेल। दुनू भाए-बहिन दादियो आ पितो सँ बाजब सीख लेलक। दुनूक बोलो फरिछा गेल। सुपुट बोल निकल' लगल। पियास लगला पर पानि आ भूख लगला पर भात-रोटी बाज' लगल।...गाम-घर मे जे गति एहन बच्चाक होइत छै से गति मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक परिवार मे नइँ छलै। मुदा जेना विधवा केँ डाइनक संग अशुभो बुझल जाइत तहिना मइटुग्गर सँ सेहो दूरी कयल जाइत अछि। ...आ सैह टा बात छलै जे ओहि नव पौध केँ ठकमुड़िया देने छलै...



संपर्क : **ग्राम पोस्ट-बेरमा,**
वाया-तमुरिया, मधुबनी (बिहार)
मो. : 9931654742

ब्राह्मणवादक सभ्यता समीक्षा

श्रीधरम

ई संभव अछि जे पूर्वकालीन आर्य केँ अपन विशिष्ट रंग-रूपक किछु अहसास रहल हो। हुनक रंग सामान्यत: गोर होइत रहय आ एतुका मूल निवासीक कारी। चमड़ीक रंग भरिसक हुनक खास पहचान रहल हो। एहि सँ वर्ण (रंग) शब्दक प्रयोग केँ एक टा संदर्भ प्राप्त भेल। नस्लवादी मान्यता मे विश्वास कर'बला विद्वान सभ एकरा जरूरति सँ बेसी तूल दैत एकरा वर्ण (जाति) व्यवस्थाक मूल बतेबाक प्रयत्न कयलक अछि। मुदा सामाजिक वर्गक सृष्टिक अधिक महत्त्वपूर्ण कारण दास आ दस्यु गण पर विजय प्राप्ति रहल। हिनका सभ केँ गुलाम आ शूद्रक स्थिति प्रदान कैल गेल। कवाइली सरदार आ पुरोहित सभ केँ लूटिक मालक अधिक पैघ हिस्सा भटैत छलै। जाहि सँ हुनक शक्ति आ प्रतिष्ठा मे वृद्धि भेलनि जखन कि हुनक अन्य बंधु ओ कुटुंब सभक शक्ति ओ प्रतिष्ठा कमजोर होइत चलि गेल। एहि सँ सामाजिक असमानता मे बढ़ोत्तरी भेल। पुरोहित केँ दान मे दास अथवा गुलाम अधिकांशत: देल जाइत रहय, मुदा ओहि मे सँ बेसी दासी रहैत छलीह जकरा सँ खेती-बारीक काज अथवा आन उत्पादक काज नइँ अपितु घर-दूआरिक कार्य मात्र कराओल जाइत होयत। मुदा पुरोहित वर्गक सभ टा सदस्य एतेक भाग्यवान नइँ रहथि जे हुनका भरि पोख दान प्राप्त होइतनि। तेँ ई कोनो आश्चर्यक बात नइँ थिक जे हम ब्राह्मण वामदेव केँ निर्धनताक रोदना पसारैत देखैत छी: 'अत्यंत कठिन परिस्थिति मे फँसिक' हम भोजन लेल कुकुरक अँतड़ी रान्हलहुँ; कोनो देवता सँ हमरा संरक्षण नइँ भेटल; हम अपन पत्नी केँ पतिता अवस्था मे देखलहुँ।' एक टा अन्य छुब्ध ब्राह्मण अग्नि सँ प्रार्थना करैत अछि जे ओ 'हुनक घुन लागल लकड़ीक समिधा स्वीकार करथि किऐक तँ हुनका लग गाय नइँ छनि आ ने कुड़हड़ि।' हम एक टा आरो ब्राह्मण केँ एहि बातक लेल प्रार्थना करैत देखैत छी जे राजा द्वारा अपहृत भेल पत्नी लौटा देल जाय। ...नि:संदेह युद्ध मे लूटल गेल मालक असमान वितरण समाज मे चतुर्वर्गीय विभाजनक आकार लेबाक मुख्य कारण रहय। मुदा ओकर किछु संबंध आर्य समाजक विभिन्न वर्ग द्वारा आदिवासी गैर-आर्य लोकक संग समाहार प्रक्रिया सँ सेहो रहय। (मूल हिंदी : द्विजेंद्रनारायण झा, प्राचीन भारत : सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की पड़ताल, पृ. 50, संस्करण 2000)

प्राचीनकाल सँ मिथिलाक समाज पूर्णत: ब्राह्मणवादी व्यवस्था पर आधारित रहल अछि। चाहे कोनो ब्राह्मण दरिद्र छिम्मड़ि किएक नइँ होथि, श्रेष्ठतावादी फोबिया मे कनको कम नहि। हुनक कुलीनतावादी कट्टरताक आख्यान हमसभ हरिमोहन झा आ यात्री जीक साहित्य मे पढ़ि सकैत छी। नि:संदेह मैथिली साहित्य मे ब्राह्मण जातिक भीतर जमकल कट्टरता, जड़ता आ विद्रूपता केँ देखार करबाक प्रारंभिक काज हरिमोहन झा आ यात्रीक लेखन द्वारा संभव भेल, मुदा हिनको लोकनिक साहित्य मे सामाजक सभ वर्गक प्रतिनिधित्व संभव नइँ भ' सकल। हरिमोहन झा आ यात्री जीक कथा साहित्य मुख्य रूप सँ ब्राह्मण-सुधारक साहित्य थिक, जाहि मे आन जाति अथवा वर्गक उपस्थिति मात्र परिवेशगत अछि। ईहो सत्य, जे जँ ब्राह्मण सुधरि जाथि तँ ओहि सुधारक प्रभाव सामाज पर पड़बे टा करत। मुदा, ई सुधार कते संभव भेल से खोजक विषय थिक। सोलहवीं शताब्दीक बाद वर्णव्यवस्थावादी तुलसी दासक पदक तँ जमिक' प्रचार-प्रसार भेल, मुदा कबीर आ रैदासक वाणी केँ मिथिलाक प्रभु जाति मुख्यधारा मे नइँ आब' देलक। बीसवीं शताब्दीक नवजागरणक दौर मे मिथिला मे कोनो सामाजिक सुधारक नइँ भ' सकल। मिथिलाक बाहर जे समाज सुधार आंदोलन राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फुले, पंडिता रमा बाई अथवा अन्य सुधारक द्वारा चलाओल गेल तकर हबो धरि मिथिलाक सीमा मे नइँ पैसि सकल, आ तकरे परिणाम भेल जे 'बाभनक गाम'क अपन खोल मे बंद पड़ल रहल। ओना वर्तमान मे बाहरी दुनियाक संपर्क मे अयलाक बाद एहि जड़ता मे थोड़ेक फर्क आबि रहल अछि, मुदा 'बाभनक गाम' जड़ता मे एखनो यथेष्ट परिवर्तन अथवा सुधार संभव नइँ भ' सकल। बहुत पहिने जार्ज ग्रियर्सन मैथिल ब्राह्मणक एहि जड़ता पर टिप्पणी करैत लिखने रहिथि जे 'दुनिया बदलि गेल, मुदा मैथिल समाजक धार्मिक ओ सामाजिक कट्टरता आ रूढ़िवादिता मे कोनो अंतर नइँ आयल।' प्रश्न अछि जे एकैसम शताब्दी मे आइ एहि समाजक कट्टरता मे कतेक परिवर्तन संभव भेल अछि? एहि लेखक उद्देश्य तारानंद वियोगीक कविता 'बाभनक गाम', 'बुद्धक दुख' 'समय सभ केँ मिलाओत', आ 'आगू मैथिलीक बाट नहि' कविताक माध्यमे मिथिलाक एहि सामाजिक परिवर्तनक पड़ताल करब थिक।

'बाभनक गाम' कविताक शुरुआत आ अंत निम्न पंक्ति सँ होइत अछि:

पधारि रहल अछि गर्दमगोल मचौने
एकैसम शताब्दी
आ कनैए बाभनक गाम!

उपरोक्त पंक्ति आ ग्रीयर्सनक उक्ति मे लगभग सौ वर्ष सँ अधिक समयक अंतर रहितो कोनो असमानता नइँ अछि। 'बाभनक गाम' कविता एकैसम शताब्दीक मुहान पर (1999 ई.) मे रचल गेल छल। एकैसम शताब्दी दुनिया भरि मे जत' आधुनिकता आ बदलावक प्रतीक बनल, ओतहिए मिथिलाक 'बाभनक गाम' कानि रहलि अछि जे कतहुँ ई बदलावक बसात ओकरा गाम मे ने पैसि जाय। ब्राह्मणवादी व्यवस्था मिथिलाक बहुत जड़ि तक घुसल अछि तेँ ओकरा भीतर कोनो बदलावक गुंजाइश बहुत मुश्किल, ओना नवतुरिया वर्गक छिटपुट हस्तक्षेप अवश्य देखा

पड़ैत अछि, मुदा से हाशिए पर अछि।

'बाभनक गाम' अपन संवेदना मे एक टा महाकाव्यात्मक कविता थिक। तारानंद वियोगी एहि कविताक बहन्ने मैथिल (ब्राह्मण) समाजक सभ्यता समीक्षा प्रस्तुत करैत छथि। असल मे ब्राह्मणवादक पुरोधा सभ अपन बर्बर सत्ता केँ अबाध गतिएँ चलबैत रहबा लेल भगवान आ धर्म-संहिताक जिन्न उत्पन्न केलक। शास्त्र आ संहिताक चिराग सँ ओ हजारो बर्ख धरि समाज केँ माल-जाल जकाँ हँकैत रहल। ओ समयक गति केँ अपन मुट्ठी मे दबौने रहल। आब ओ समय जेना करोट ल' रहल अछि तकरा एतेक आसानी सँ स्वीकारब कठिन अछि। तेँ हाकरोस उचिते थिक।

'बाभनक गाम' कविताक मूल संवेदना धरि पहुँचबाक लेल ब्राह्मणवादक ऐतिहासिक प्रक्रिया पर कने दृष्टिपात करब उचिते!

हमरा बड़ आश्चर्य होइत अछि जे बिहारक भूमि बुद्धक क्रिया-कलाप सँ अँटल अछि। एक तरफ नालंदा दोसर दिस गया फेर मिथिला मे बुद्ध आ बौद्ध धर्मक कोनो अवशेष किएक नइँ अछि? ओहि विद्रूप अतीत मे हुलकी मारबाक हिम्मति नइँ होइत अछि। वियोगीक कविता 'समय सभ केँ मिलाओत'क निम्न पंक्तिक माध्यमें ओहि बर्बर अतीतक कल्पना क' सकैत छी—

चीत्कार सँ भरल अछि
इतिहासक तहखाना
उत्पीड़न आ अत्याचार सँ!
अहाँ कहलहुँ जकरा अपन धर्मग्रंथ
कहबाक चाहै छल तकरा
यातना-शिविरक ऑडिट-रिपोर्ट!

असल मे ब्राह्मणवादी आर्य व्यवस्थाक मुख्य खोज 'वर्णवादी व्यवस्था' थिक, जकरा विकसित ओ स्थापित करबाक कोशिश तमाम धर्मग्रंथ ओ संहिता द्वारा मनुस्मृति सँ ल'क' गीता धरि चलैत रहल। खास क' लोकवादी बौद्ध धर्मक दबाव मे एक टा राजनीतिक प्रक्रियाक भीतर एहि संहिता सभक रचना भेल जकरा आवरण धर्मक देल गेल। जँ अहाँ एहि ब्राह्मणवादी ग्रंथक कथन केँ मानैत छी तँ धर्मी छी अथवा विधर्मी। आ विधर्मीक लेल किसिम-किसिम केर सजा सुनिश्चित कयल गेल। तेँ एहि सभ टा धर्मग्रंथ केँ सामाजिक वर्चस्व प्राप्त करबाक राजनीतिक अस्त्रक रूप मे देखबाक चाही। ऐतिहासिक प्रक्रियाक अध्ययन सँ स्पष्ट अछि जे ई वर्ण व्यवस्था ब्रह्माक मुँह सँ निकलल कोनो अलौकिक व्यवस्था नइँ थिक। असल मे ई लोकवादी बौद्ध धर्म केँ मिटेबा मे हथियारक रूप मे प्रयुक्त भेल। जाहि गीताक भाष्य आ टीका शंकराचार्य सँ ल'क' तिलक, गांधी आ नइँ जानि कोन-कोन महान व्यक्ति ने लिखैत रहलाह, ओहि गीताक पाठ केँ कने बौद्ध धर्मक संदर्भ मे ध्यान सँ पढ़ू तँ 'तालिबानी फरमान' आ 'गीता-ज्ञान' मे कोनो अंतर नहि बुझाओत। गीताक तालिबानी फरमानक किछु उदाहरण देखू—

श्रेयान्स्वधर्मो :
विगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात!
स्वधर्मे निधन श्रेय :
परधर्मो भयावह:।। (3-35)

(अपन धर्म (जाति) चाहे कतबो नीच अथवा अधलाह हो तैयो ओ नीक अछि। अपन धर्मक पालन करैत मरि जायब नीक, किएक तँ दोसराक धर्म खतरा सँ भरल होइत अछि)

सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकम् शरणं ब्रज।
अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच: (18-66)

(आन सभटा धर्म केँ छोड़ि क' हमरा शरण मे आबि जाऊ, तखन हम शरण मे लेब आ अहाँ केँ मोक्ष देब। अर्थात दोसर धर्म केँ माननिहार काफिर भेल। आगाँ कहल गेल अछि जे लोकधर्मक त्याग करू। लोकधर्म अर्थात बौद्ध धर्मक त्याग करू! अध्याय 4/73क अनुसार चारू वर्णक सृष्टि हम (कृष्ण) कयने छी। 'चातुर्वण्यैमया सृष्टं'। एहन छथि हमर ईश्वर।)

गीता वर्णवादी व्यवस्था केँ स्थापित करयबला ब्राह्मणवादी यंत्र थिक। एतय डॉ— अंबेडकरक विचार जनला सँ बहुत किछु स्पष्ट भ' जाइत अछि।

अंबेडकरक कथन छनि जे बाभन अपन सत्ता केँ भगवद्गीताक माध्यम सँ हथियेलक : ''बौद्ध धर्मक सिद्धांत एहन-एहन विचारक निरर्थकता प्रमाणित कयलक। बौद्ध सिद्धांतक कारणे सामरिक आ राजकीय क्रांति क'क' भगवान बुद्ध बामणेतर यानी क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र केँ समाज मे महत्त्वपूर्ण स्थान अर्थात समानता दिऔलनि।... एहि देशक दू हजार वर्षक इतिहासक अध्ययन सँ ई पता चलैत अछि जे ई काल ब्राह्मण-धर्म आ बौद्ध धर्मक पारस्परिक वाद-विवादक काल रहल छल। एहि कालखंड मे जाहि धर्मग्रंथक निर्माण भेल ओ सभ टा राजनीतिक शास्त्र छल। एहि सब मे धर्मक कोनो बात नहि। देशक राजकीय आ धार्मिक सत्ता केँ ब्राह्मणक हाथ मे रखबाक लेल गीताक रचना भेल।'' (24 सितंबर, 1944 केँ मद्रास मे देल गेल भाषण, संदर्भ : 'सम्मान के लिए धर्म परिवर्तन करो' संपादक एस.ए. शास्त्री, प्रकाशक, आर.एन. शास्त्री, 81 नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1969)

डॉ. अंबेडकरक उपरोक्त विचारक आलोक मे तारानंद वियोगीक कविता 'बाभनक गाम' आ 'बुद्धक दुख' केँ एक संग पढ़ैत 'बाभनक गाम'क निर्माणक ऐतिहासिक प्रक्रिया केँ रेखांकित कयल जा सकैत अछि। संगहि सनातन धर्म (वर्ण व्यवस्था) द्वारा लोकधर्म (बौद्ध धर्म)क दमन आ अत्याचारक प्रक्रिया केँ सेहो बूझल जा सकैत अछि। हिंदूक कोनो देवी-देवता बिना तलवार-भाला केँ नइँ भेटत। एहना मे शांति आ अहिंसक पुजारी बौद्ध कतेक काल धरि ठठि सकैत छलाह! अस्तु, उपरोक्त तथ्य केँ ध्यान मे रखैत एहि कविताक मूल संवेदना धरि पहुँचल जा सकैत अछि जकरा मादें पहिने कहल गेल जे ई कविता मूलत: मिथिलाक सभ्यता समीक्षा थिक। ध्यान देबाक बात ई थिक जे मिथिलाक बाभनक गाम मे ने ताहि समय मे बौद्ध धर्म रहि सकल आ ने आधुनिक काल मे नवजाकरणक हबा बहि सकल। तेँ एकैसम शताब्दीक एक दशक बीत गेलाक बादो, मैथिली साहित्य मे दलित-साहित्य ओ जीवन नइँ आबि सकल। जँ केओ एहि पर चर्चा करताह तँ 'रोगग्रस्त कुकुर' सब नोचबाक लेल तैयार रहथिन।

अस्तु, एहि कविता मे प्रयुक्त 'बाभनक गाम' एक टा मेटाफर केर रूप मे प्रयुक्त भेल अछि, जकरा बहन्ने ब्राह्मणवादी व्यवस्थाक पाँच हजार सालक उत्थान, बर्बरता आ पतनोन्मुखताक लेखा-जोखा प्रस्तुत कयल गेल अछि। 'बाभनक गाम' प्रभु जातिक प्रतीक थिक। मुदा की सचमुच बाभनक गाम कानि रहल अछि अथवा ओकर कानब मजबूरी थिक? ई कानब पश्चातापक अभिव्यक्ति थिक अथवा हाक-डाक? एहि नोरायल आँखि मे कतेक मात्रा मे पश्चातापक पानि अछि आ कतेक मात्रा मे बुर्जुआवादी आक्रोशक खून? कने विलमि क' सोचू! असल मे ई कानब, पाँच हजार सालक सत्ताक डोर हाथ सँ ससरि जैबाक अफसोस तँ नइँ

थिक ? ई कानब, उदारवादी मुखौटाक घड़ियाली नेंप चुआयब तँ नइँ थिक ? आखिर एतेक आसानी सँ कोना हारि मानि जायत बाभनक गाम !

बाभनक मोन मे जे बसल छै दुनिया
'आदर्श धर्मराज्य' ओकर संस्कार केँ
ओही आदर्श दुनिया मे जीबैए बाभनक गाम
प्रवेश करैत ओहि दुनिया मे
कँपैत अछि सम-वेदना
लोकतंत्र ओकर आँखि महक
काँची छिऐक
गूह-मूत पोछबाक काज अबैत छैक
ओकरा लेल
संविधानक पन्ना।

बाभनक गाम केँ अपन मनुक संविधानक रक्षाक असमर्थताक अफसोस छै। ओकरा घृणा छै अंबेडकरक सहयोग सँ बनल संविधान सँ जे समतामूलक छै। जाहि मे सभ वर्णक लेल समान अवसरक व्यवस्था छै। जाहि दलित-शूद्र केँ ओ हजारो वर्ष तक गामक सीमान पर धकियेने रहल, आइ ओकरे सशक्तीकरण सँ घेरा गेल अछि बाभनक गाम। असल मे 'बाभनक गाम'क कानब अपन सत्ता आ जथाक लुटि जैबाक हाकरोस थिक। जाहि वर्णवादी व्यवस्था केँ स्थापित करबा मे हजारो वर्ष धरि शास्त्र आ संहिताक जाल ओ बुनैत रहल, ताहि पर लोकतंत्र आ अंबेडकरी-संविधानक पड़ैत चोट सँ हाक्रोश क' रहल अछि बाभनक गाम : *''ओकर आक्रोश सँ फाटि रहलैए/आर्यावर्तक छाती/ बिला गेलनि महाराज मनुक चैन निन्न/ वशिष्ट-बादरायणक नोर झहरैत ताबड़तोड़/ कातिक-अगहन मे उबडुब करैए कोशी-कमला।''*

किछु छद्म उदारवादी पुरंदर आ धुरंधर लोकनि तर्क बँचैत भेटि जैताह जे कहाँ अछि समाज मे आब जाति-पाँति, कहाँ अछि आब छुआ-छूत। मुदा की एखनो समाज मे सभ जातिक बीच आपस मे बेटी-रोटीक संबंध स्थापित भ' गेल अछि ? की अंतर्जातीय प्रेम-संबंध केँ राधा-कृष्णक भक्त लोकनि स्वीकृति द' रहल छथि ? की वैवाहिक विज्ञापन सँ 'स्वजातीय' शब्द हँटि गेल अछि ? ऑनर किलिंगक मामला हरियाणा सँ मिथिला धरि एखनो नइँ पसरल अछि ? एहन बर्बर समाजक लेल कवि एकदम सटीक प्रतीक 'रोगग्रस्त कुकुर' प्रयोग करैत छथि। एक टा एहन प्रभु जाति जे समाज केँ घाव दैत-दैत अपने ओहि घावक शिकार भ' गेल अछि। घबहा कुकुर केकिआइत-केकिआइत कष्ट सँ मरि जाइत अछि। किएक तँ ओकरा अपन घावक कारण नइँ बूझल छै, आ ने ओ बूझ' चाहैत अछि, आ ने दोसरा सँ इलाज करब' चाहैत अछि। ओ अपन जवानीक हिंसाक यूटोपिया सँ बाहर नइँ होम' चाहैत अछि। फेर निदान कोना संभव ? असल मे ई कानब पाँच हजार वर्षक बर्बरताक अवसानक मर्सिया थिक।

कविक चिंता उचिते, जे एकैसम शताब्दीक मुहान पर 'किऐ जिबैए बाभनक गाम'। की एखनो हमरा समाज मे हरेक प्रकारक असमानता, रक्त श्रेष्ठता, जातीय दंभ, लैंगिक श्रेष्ठता नइँ बचल अछि ? हमरा समाज मे जन्म लैते मनुख, बाभन, शूद्र, हिंदू आ म्लेच्छ नइँ बनि जाइत अछि

अपन 'हरिजन गाथा' कविता मे जाहि अवतारी दलित पुत्रक हाथ मे नागार्जुन परिवर्तनक रेखा देखने रहथि, ओ रेखा आब वृत्त बनि क' बाभनक गाम केँ अपन घेरा मे बन्हने जा रहल अछि। दलित-शूद्र-राड़ शब्द मे प्रत्यारोपित ब्राह्मणवादी वीभत्सताक मेघ आब छँटि रहल अछि। ओकरा भीतर सँ नव सौंदर्य उभरि रहल अछि। आदर्श बाभनक गाम प्राचीनता, कट्टरता आ बर्बरताक प्रतीक बनिक' रहि गेल अछि। समय शब्दक अर्थ केँ बदलैत अछि आ संघर्ष ओहि अर्थ मे रंग भरैत अछि :

राड़क गाम चमारक गाम तँ जीबैए से
ओकरा भोगबाक छै थोड़े दिन उछाह
हगबाक मुतबाक छै थोड़े दिन
महाराज मनुक समाधि पर !
अपन धियापुता केँ बीतल जुगक
लोककथा सभ सुनेबाक छै
मना लेबाक छै थोड़े दिन मुक्ति-पर्व

नि:संदेह एहि उछाह केँ जीभरि भोगबाक चाही। मुदा संगहि एक टा डर ईहो जे 'राड़क गाम' कदाचित 'बाभनक गाम' मे ने सिफ्ट भ' जाय। कवि भविष्यक ताहि खतरा दिस सेहो इशारा करैत छथि : *'पूजा तँ करेबे करथिन/ आ से हिनके सभ सँ/ जादव जी पासवान जी*। मुदा भविष्यक खतराक डरें अतीतक लहास केँ नइँ उगहल जा सकैत अछि।

मैथिली मे स्वनामधन्य प्रगतिशील रचनाकार लोकनिक कोनो कमी नहि, मुदा हुनक प्रगतिक गति केँ अक्सरहाँ कुर्ता तर नुकायल जनौ बाधित क' दैत अछि। अपना केँ पुरातनपंथी तँ मनुओ महाराज नइँ कहाब' चाहताह। यात्री जी बहुत पहिने एक टा स्वप्न देखने रहथि, ''पढ़ताह, गुनताह करताह पास, जुगल कामति छीतन खबास। जे काजुल से भरि पेटि खाएत, ककरो ने बड़का धोधि हैत।'' यात्रीक कविताक यथार्थवादी-इतिवृत्तात्मकता मे आकर्षण आ नयापन छल, मुदा वियोगीक कविता मे ओहि चेतनाक विकास सृजनात्मक-आक्रोश मे भेल अछि। एत' यात्रीक कविताक परंपराक विकास देखल जा सकैत अछि। ओना यात्रियो मैथिली मे खबस टोली सँ आगाँ नइँ देखि सकलाह। 'बाभनक गाम' कविता मे सामाजिक केंद्र केँ हिलबाक आ टूटबाक अभिव्यक्ति भेल अछि, मुदा पविर्तनक अनुगूँज परिधि सँ आबि रहल अछि, *''पाँच हजार बरखक सदाबहार रणनीतिक/ यैह फल होइ/ यैह अंत होनि महाराज मनुक''*

तँ की मानि लेल जाय जे मनुवाद साँचे अपन अंतिम साँस ल' रहल अछि ? की सत्ता ओ समाज सँ ब्राह्मण ओ ब्राह्मणवादक वर्चस्व समाप्त भ' गेल ?...एखनो प्राइवेट सँ सरकारी धरि, बहुराष्ट्रीय सँ व्यापारी धरि, पत्रकारिता सँ पुजारी धरि ककर वर्चस्व अछि ? नि:संदेह अंबेडकरी आरक्षण व्यवस्था सँ समाजक पाँच हजार साला मनुवादी आरक्षण व्यवस्था पर फर्क पड़ल अछि। तँ की सामाजिक मानसिकता सेहो बदलि गेल ? गाँव-जैबार, बस-ट्रेन सब ठाम लोक आरक्षण व्यवस्था केँ गरियबैत भेटि जैताह। संगहि आरक्षणक राजनीति पर बैसि मलाइ चटनिहारोक कमी नहि। दुनू स्थिति खतरनाक अछि दबल, कुचल समाजक लेल। मुदा, ताहि सँ बाभनक गाम द्वारा सृजित, गारि आ कहावत सँ 'सोलकन' आ 'राड़' शब्द नइँ हटि गेल अछि। मोन पारू फणीश्वरनाथ 'रेणु'क 'रसप्रिया' कहानीक पचकौरी मृदंगिया केँ। ओ परमानपुर गामक एक टा बाभनक अबोध बच्चा केँ बेटा कहि देबाक गलती केने रहय आ मारि खाइत-खाइत बचल छल। ओहि नांगट बच्चाक 'फूहू' पकड़िक' बाप संबोधन करैत, माफी माँगि बचल रहय पचकौरी। एखनो समाज मे प्रभु जातिक नवका पोआक फुफकार कम नइँ छै—

सुच्चा नग्न ब्राह्मणवादक
आरामदेह वस्त्र मे सुस्ताइत
सहज प्रकृतिस्थ बाभन
के नव पीढ़ी
एही गामक बाट द'क'
एकैसम शताब्दी मे ढुकि रहल अछि।

ई कविता सामाजिक परिवर्तनक दस्तावेजीकरण थिक। ऐहन बात नइँ जे समाज

मे परिवर्तन नइँ आयल अछि, चाहे ओ ब्राह्मणवादक प्रतिक्रियाक रूपें आयल हो। एस.एन.श्रीनिवास अपन किताब 'आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन' मे लिखैत छथि—

''विलियम रो जिक्र कयने छथि जे जखन 1936 मे पूर्वी उत्तर प्रदेश मे सेनापुर गामक नोनिया सब (नून बनाब'वलाक एक टा निम्न जाति जे आब कुआँ-तालाब खोद', सड़क कूट' आ ईंटा आ टाइल बनेबाक काज कर'लागल अछि।) सामूहिक रूप सँ यज्ञोपवीत पहिरलक तँ क्षत्रिय जमींदार सभ ओकर सभक पिटाइ कयलक। यज्ञोपवीत तोड़ि फेक देलक आ जातिक ऊपर सामूहिक जुर्माना लगा देलक। किछु वर्षक बाद नोनिया सब फेर सँ यज्ञोपवीत पहिरब शुरू कयलक, मुदा आब कोनो विरोध नइँ भेल। हुनक पहिल प्रयास मे सीधा-सीधा सार्वजनिक चुनौती छल, लेकिन दोसर बेर नोनिया सब यज्ञोपवित चुपचाप आ वैयक्तिक रूप मे पहिरब शुरू कयलक।'' (राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 1967, आठवीं आवृत्ति : 2005, पृ. 28) स्पष्ट अछि जे प्रभु जातिक हाक्रोश आ आक्रोश मे सामाजिक परिवर्तनक स्वाभाविक गति केँ परिलक्षित कयल जा सकैत अछि। आइ आक्रोशक आगि मे नइँ जानि कतेक लोक-घर जरा देल गेल। तँ की, हिम्मत पस्त नइँ भेल।

'बाभनक गाम'क प्रतिक्रिया उपरोक्त परिवर्तनक प्रक्रिया सँ भिन्न नइँ अछि, मुदा आब ओकर बेबसी नीक जकाँ देखार भ' रहल अछि :

बाभन की एहू सँ गेलाह
जे एहन अनीति देखि क'
बढ़ा ल' सकथि अपन रक्तचाप
हार्ट अटैक केँ बजा आनि सकथि,
गारि-सरापि सकथि
आधुनिकता केँ लोकतंत्र केँ
मुदा बाभन की एहू सँ गेलाह
जे समाजवाद दिस पोन क'क' छोड़थु पाद
ओ विज्ञान केँ, राजनीति केँ
ऋषि-मुनिक झाँटि बताबथु,
बाभन की एहू सँ गेलाह

जेना कि शुरू मे कहल गेल जे ब्राह्मण अपन जाहि सत्ता केँ शस्त्र सँ हारि गेल तकरा ओ स्मृति आ गीताक शास्त्र (जे असल मे शस्त्रक रूप मे प्रयुक्त भेल) सँ पुन: प्राप्त केलक आ एक टा नव अस्त्र 'शाप' अथवा 'श्रापक' आविश्कार केलक। प्रभु वर्गक सामंती घमंड आ गुस्साक अभिव्यक्ति परशुराम सँ ल'क' चाणक्य धरि देखल जा सकैत अछि। तेँ जाधरि ब्राह्मण अपनहि सँ अपन ब्राह्मणवादी खोल उतारि नइँ फेंकि देताह ताधरि समाजक कल्याण संभव नइँ भ' सकैत अछि।

अपन प्रसिद्ध पुस्तक 'शूद्र कौन थे'क भूमिका मे डॉ. अंबेडकर लिखैत छथि :

1. *शूद्र सूर्य प्रजातिक आर्य संप्रदाय मे सँ एक रहथि।*
2. *एक समय छल जखन आर्य समाज तीनहि वर्ण जेना, ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य केँ मान्यता दैत रहय।*
3. *शूद्र अलग सँ कोनो वर्ण नइँ रहय, ओकर स्थान भारतीय आर्य-समाजक क्षत्रिय वर्ण केर अंगक रूप मे छल।*
4. *शूद्र राजा आ ब्राह्मण सभक बीच लगातार संघर्ष होइत रहय, जाहि मे, ब्राह्मणक ऊपर अनेक प्रकारक अत्याचार एवं अनाचार होइत रहय।*
5. *शूद्र सभक अत्याचार एवं शोषण सँ ओकरा प्रति घृणा बढ़ल आ ब्राह्मण सभ शूद्रक उपनयन संस्कार करेनाइ बंद क' देलक।*
6. *उपनयन संस्कार सँ वंचित भ'क' शूद्र जे क्षत्रिय रहय, सामाजिक दृष्टि सँ तिरस्कृत होइत गेल आ वैश्य सँ नीचाक स्थिति मे आबि गेल आ एहि तरहें चतुर्थ वर्णक उत्पत्ति भेल।*

(डॉ. भीमराव अंबेडकर, शूद्र कौन थे, म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादेमी, सं. 2002)

इतिहास अपना केँ दोहराबैत अछि। वर्तमान मे सामाजिक सत्ताक विकेंद्रीकरण करबाक प्रयास जारी अछि। सत्ताक समान अवसरक बदला मे दलित-शूद्रक हाथ मे शिफ्ट भ' रहल अछि। मुदा ई लोकतंत्र थिक ने कि कोनो कबीलाई संघर्ष। जँ ब्राह्मणवाद खतरनाक अछि तँ दृष्टिहीन ओ चेतनाविहीन दलितवादो कम खतरनाक नहि।

अस्तु, 'बाभनक गाम', 'बुद्धक दुख' आ 'आगू मैथिलीक बाट नहि' कविताक केँ एक संग पढ़ैत ई कहि सकैत छी जे मैथिलीक कविता आब एक टा नव बाट खोजि रहल अछि। ओना आगू मैथिलीक बाट नइँ कविता मे मिथिलाक, कंक्रीटबद्ध जड़ता सँ कवि निराश बुझाइ छथि :

'ब' सँ बाभन
'भ' सँ भाषा
'म' सँ मैथिली
तखन बीच मे अहाँ के

मुदा निराशाक बीच सँ आशाक किरण फूटै अछि आ जत' बाट समाप्त भ' जाइत अछि ओतहि सँ नबका बाट तैयार होइत अछि। बुद्धक दुख ई अछि जे या तँ ओ धार मे भसा देल गेलाह या फेर पटना संग्रहालयक कारागार मे बंद क' देल गेलाह। हुनकर सर्वजन हिताय लोकधर्म पर ब्राह्मणवाद अपन गुंबद बना देलक, *मनुआँ-कात मे पहिने बनतनि मंदिर/ जतए बुद्ध काल भैरव वा शीतला माइ/ कहि क' पूजल जैताह।*

नि:संदेह बाभनक गाम केँ बुद्धक गाम मे परिवर्तित हेबाक जरूरति छै। मनुआ धार सँ निकलै बला बुद्धक मूर्ति मिथिलाक सब गामक दलान पर बैसेबाक जरूरति छै। तखने 'मैथिल' शब्दक फलक विस्तारित भ' समग्र मिथिलावासी केँ अपना मे समाहित क' सकत।

'बाभनक गाम' कविताक निम्न प्रतीक थोड़े अखरैत अछि, *''थाहू एहि रोदन केँ कवि/ धुइयाँ सँ करू असीम निष्पत्ति/ ऋषि बनू कवि, ऋषि।''*—फेरो सँ 'ऋषि' बनबाक कोन बेगरता जखन कि पहनहि सँ एतेक ऋषि सामाजिक प्रदूषणक धुआँ छोड़ि चुकल छथि? कार्ल मार्क्स तँ फिरंगी रहथि, मुदा स्वदेशी बुद्ध, चार्वाक, कबीर, रविदास, फुले, पंडिता रमाबाई आ अंबेडकर संगे बाभनक गामक प्रभु वर्ग केहन व्यवहार केलक एकर आत्मालोचन ओकरे करबाक चाही। बुद्ध आ अंबेडकर दर्शन केँ समझि-अपना क' एहि गलती सँ मुक्ति कराओल जा सकैत अछि।

अंत मे एक टा आरो उल्लेखनीय बात ई जे एहि कविताक भाषा आ बुनावट अद्भुत अछि। निम्न पंक्ति मे नागार्जुनक मंत्र कविताक शिल्पक विकास देखल जा सकैत अछि :

उठू-उठू नगरक लोक
उठू गोरथारी मे सूतल देवता लोकनि
ऐंठार पर फेकल ब्रह्म, उठू
शौच-स्थान मे गोड़ल काली, उठू
शिव, बहाराऊ कने भाँगक आँटी सँ
धर्मराज, पसीखानाक माटितर सँ बहराऊ

नि:संदेह अपन संवेदना आ शिल्प मे तारनंद वियोगीक कविता 'बाभनक गाम' अगिला पीढ़ीक लेल काव्य भूमिक पटकथा तैयार करैत अछि।



संपर्क : **द्वारा विजेन्द्र सिंह, बी-127, फर्स्ट फ्लोर, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-16**
मो. : **9868325811**

2012 में जारी अंतिका प्रकाशन की नई पुस्तकें

आलोचना — मूल्य (₹) सजिल्द/पे.बै.

गद्य की पहचान : अरुण प्रकाश 350.00

रचनावली

चन्द्रेश्वर कर्ण रचनावली (पाँच खण्ड) : संपादक : श्रीधरम 4200.00

खण्ड-I : हिन्दी कहानी की भूमिका, आंचलिक हिन्दी कहानी, कथालोचना विषयक असंकलित लेख

खण्ड-II : गोदान : संवेदना और शिल्प, उपन्यासकार अश्क, उपन्यास आलोचना विषयक असंकलित लेख

खण्ड-III : प्रेमचन्द, निराला, रामवृक्ष बेनीपुरी, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल चौधरी पर केन्द्रित आलोचना

खण्ड-IV : सिद्धांत, विचार और विश्लेषण, गद्य विधाएँ, काव्यालोचना, नाट्यालोचना, लोक : जीवन, कला और संस्कृति, साक्षात्कार

खण्ड-V : कहानी, उपन्यास, लोककथा, कविता, रिपोर्ताज, संस्मरण, आत्मकथा, डायरी, पत्र आदि

कला

समकालीन भारतीय चित्रकला : हुसैन के बहाने : अशोक भौमिक 350/ 160

यात्रा-वृत्तांत — मूल्य (₹) सजिल्द/पे.बै.

खरामा-खरामा : पंकज बिष्ट 295.00/150.00

रास्ते की तलाश में : असग़र वजाहत 425.00/225.00

वह भी कोई देस है महराज : अनिल यादव 295.00/150.00

उपन्यास

कामिनी काय कांतारे (खण्ड : 1 एवं 2): महेश कटारे 830.00

जहाँ एक जंगल था : मदन मोहन 495.00

शिप्रा एक नदी का नाम है : अशोक भौमिक 200.00/100.00

भूलन कांदा : संजीव बख्शी 200.00

मोड़ पर (मैथिली) : धूमकेतु अनु. स्वर्णा 450.00/225.00

डॉक्टर ग्लास (स्वीडिश) : ज़लमार सॉडरबैरिए अनु. द्रोणवीर कोहली 240.00/130.00

कविता

कर्मनाशा : सिद्धेश्वर सिंह 225.00

नींद में एक घरेलू स्त्री : रामकुमार आत्रेय 200.00

अंतिका प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण सजिल्द किताबें

पुस्तक का नाम : लेखक — **मूल्य (सजिल्द)**

आलोचना

स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न और नागार्जुन के उपन्यास : श्रीधरम 395.00

इक्कीसवीं सदी : औपनिवेशिक मानसिकता और भाषा : सं. हर्षबाला शर्मा 340.00

बालकृष्ण भट्ट और आधुनिक हिंदी आलोचना का आरंभ : अभिषेक रौशन 390.00

मीडिया, स्त्री-विमर्श, इतिहास और चिंतन

डिज़ास्टर : मीडिया एण्ड पॉलिटिक्स : पुण्य प्रसून वाजपेयी 200.00

राजनीति मेरी जान : पुण्य प्रसून वाजपेयी 300.00

स्त्री : संघर्ष और सृजन : श्रीधरम 200.00

यक्ष प्रश्न बरकरार : मणि कांत वाजपेयी 200.00

इंदिरा गांधी का समाजवाद : हीरानन्द आचार्य 300.00

पालकालीन संस्कृति : मंजु कुमारी 225.00

सपूत मातृभूमि के...(नेपाल): अनिल कुमार झा/कौशलेन्द्र मिश्र 300.00

उपन्यास

दिमाग में घोंसले : विजय शर्मा 200.00

ईश्वर की खोज में त्रिशंकु : पीयूष विनोद 225.00

कहानी-संग्रह

भुतालिया और अन्य कहानियाँ : निसार अहमद 200.00

नीम बाबा : रहबान अली राकेश 200.00

बिन शीशों का चश्मा (लघुकथा-संग्रह) : रामकुमार आत्रेय 200.00

व्यंग्य-संग्रह

चौथा बंदर : अनुराग मुस्कान 290.00

कविता-संग्रह

ग़लत पते पर समय : नईम 225.00

उड़ते हैं अबाबील : सुषमा नैथानी 200.00

भाषा साँस लेती है : कुमार सुरेश 225.00

खिड़कियाँ झाँक रहीं कमरे के पार : प्रमोद उपाध्याय 200.00

बूँदों के बीच प्यास : बहादुर पटेल 200.00

निगहबानी में फूल : वसंत सकरगाए 200.00

पुश्तों का बयान : राजेश सकलानी 200.00

अमलतास : विपिन कुमार शर्मा 200.00

अजनबी शहर : जुबैरुल-हसन 'ग़ाफ़िल' 250.00

पानी का पता पूछ रही थी मछली : कमलेश्वर साहू 200.00

इतिहास बन गया : भोलानाथ कुशवाहा 300.00

जीना चाहता हूँ : भोलानाथ कुशवाहा 300.00

कब लौटेगा नदी के उस पार गया आदमी : भोलानाथ कुशवाहा 225.00

लाल रिब्बन का फुलबा : सुनीता जैन 190.00

लूओं के बेहाल दिनों में : सुनीता जैन 195.00

कुर्आन कविताएँ : मनोज कुमार श्रीवास्तव 150.00

ज़िंदगी ग़ज़ल हो गई : पूजा सक्सेना 200.00

अधखुले दरीचों से : बख्शीश सिंह 200.00

हेरवा : सुनीता जैन 200.00

रसोई की खिड़की में : सुनीता जैन 200.00

मैथिली

संग समय के : महाप्रकाश 100.00

एक टा हेरायल दुनिया : कृष्ण मोहन झा 60.00

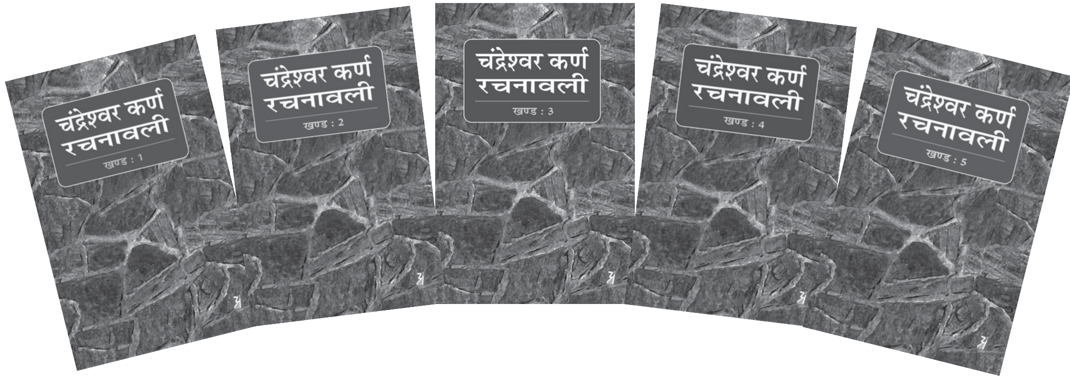
विकास ओ अर्थतंत्र : नरेन्द्र झा 250.00

अनुभूति : पन्ना झा 180.00

भौंथर पेंसिल सँ लिखल : आदि यायावर 180.00

अंतिका से प्रसिद्ध कथा-आलोचक **चंद्रेश्वर कर्ण** की रचनावली पाँच खण्डों में





संपादक : **श्रीधरम**

मूल्य (पाँच खण्डों का संपूर्ण सेट) : 4200.00

- **खंड-एक** में हैं : 1982 में प्रकाशित 'हिंदी कहानी की भूमिका', 1977 में प्रकाशित 'आंचलिक हिंदी कहानी' पुस्तकों के अलावा कहानी-आलोचना से संबंधित अब तक असंकलित रहे करीब दो दर्जन लेख।
- **खंड-दो** उपन्यास-आलोचना पर केंद्रित है। इस खंड में गोदान पर केंद्रित 1997 में प्रकाशित पुस्तक 'गोदान : संवेदना और शिल्प', 1981 में प्रकाशित 'उपन्यासकार अश्क' के अलावा विभिन्न अवसरों पर लिखे उपन्यास आलोचना से संदर्भित करीब दो दर्जन असंकलित लेख हैं।
- **खंड-तीन** में छः शीर्षस्थ रचनाकारों पर केंद्रित आलोचना को शामिल किया गया है। ये रचनाकार हैं : प्रेमचंद, निराला, रामवृक्ष बेनीपुरी, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ 'रेणु' और राजकमल चौधरी। इन रचनाकारों पर यहाँ समग्रता में विचार किया गया है।
- **खंड-चार** में हैं : विचार और विश्लेषण (वैचारिक आलोचना), हिंदी की कथेतर साहित्यिक विधाएँ, कविता आलोचना, नाट्यालोचना, लोक-जीवन : नृत्य-संगीत और कला-संस्कृति और लेखक द्वारा लिए गए कुछ महत्त्वपूर्ण साक्षात्कार।
- **खंड-पाँच** मुख्यतः चंद्रेश्वर कर्ण की मौलिक रचनाओं पर केंद्रित है। इसमें कर्ण जी की उपन्यासिका ('खंडित प्रतीक्षा'), कहानियाँ, लघुकथाएँ, कविताएँ, झारखंड की लोक कथाएँ, महाभारत की कथाएँ, बालकथाएँ, चिंतन, संस्मरण, डायरी और पत्रों को संकलित किया गया है। साथ में 17 महत्त्वपूर्ण चित्र और हस्तलिपि भी हैं।

www.antikaprakashan.com